04 - संबंधों के निर्वाह की प्रतिबद्धताओं का अंत

05 - गोडावण वाले राधेश्याम विश्नोई थे थार में जीवन का प्रहरी

06 - एयरपोर्ट जैसी सुविधायुक्त होगा पवित्र नगरी का रेलवे स्टेशन

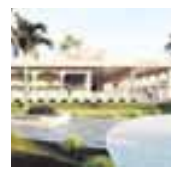

07 - प्रकृति के सुकुमार कवि की जन्मभूमि में यूथ फॉर ट्रुथ के सदस्य

A Daily News Magazine

इंदौर

शुक्रवार, 13 जून, 2025

इंदौर एवं भोपाल से एक साथ प्रकाशित

वर्ष 10 अंक 244, नगर संस्करण, पृष्ठ 8, मूल्य रू. 2

सुबह सवेरे

प्रसंगवश

भारत में 16 साल बाद होने जा रही जनगणना क्यों है खास

प्रियंका

भारत में 16 साल बाद जनगणना होने जा रही है. केंद्रीय गृह मंत्रालय ने बीते बुधवार को बताया था कि एक मार्च, 2027 जनगणना की रेफ़रेंस डेट होगी.

पहली बार देश में डिजिटल जनगणना होने जा रही है और आज़ाद भारत में पहली बार जातियों की गणना भी इसमें शामिल की जाएगी.

केंद्रीय गृह मंत्रालय की ओर से जारी बयान के अनुसार जनगणना दो चरणों में कराई जाएगी.

पहले चरण में केंद्र शासित प्रदेश लद्दाख़ और जम्मू-कश्मीर के साथ ही हिमाचल प्रदेश और उत्तराखंड राज्यों के बर्फ़ीले इलाक़ों में जनगणना की रेफ़रेंस डेट एक अक्तूबर 2026 होगी. दूसरा चरण एक मार्च 2027 से मैदानी इलाक़ों में होगा.

रेफ़रेंस डेट वो समय होता है, जिसके लिए आबादी का डेटा इकट्ठा किया जाता है. हालांकि, सरकार ने अभी तक ये नहीं बताया है कि जनगणना शुरू किस तारीख़ से होगी और ख़त्म किस तारीख़ पर होगी.

देश और यहां रहने वाले लोगों के विकास के लिए, ये जानना ज़रूरी होता है कि देश में रहने वाले लोग कौन हैं. वो किस स्थिति में हैं, कितने पढ़े-लिखे हैं, कौन क्या करता है, कितने लोगों के पास रहने को घर हैं, कितनों के पास नहीं हैं. उनकी सामाजिक स्थिति क्या है. जनगणना इन्हीं सब आंकड़ों को जुटाने की प्रक्रिया है.

किसी देश या क्षेत्र विशेष की आबादी के बारे में जनसांख्यिकीय, आर्थिक और सामाजिक डेटा इकट्ठा करने, उसके संकलन, विश्लेषण और सार्वजनिक करने को ही जनगणना कहा जाता है.

इसके तहत आबादी की आयु, लिंग, भाषा, धर्म, शिक्षा, व्यवसाय और निवास आदि को लेकर विस्तृत जानकारी जुटाई जाती है. इनका इस्तेमाल नीति बनाने और कल्याणकारी योजनाओं आदि के लिए किया जाता है.

भारत में 1872 से जनगणना हो रही है और आज़ाद भारत में अभी तक ये प्रक्रिया जारी रही.

भारत की जनगणना, जनगणना अधिनियम, 1948 के प्रावधानों के तहत की जाती है.

केंद्रीय गृह मंत्रालय के तहत आने वाला ऑफ़िस ऑफ़ रजिस्ट्रार जनरल एंड सेंसस कमिश्नर जनगणना करवाता है. भारत में हर 10 साल के अंतराल पर जनगणना कराई जाती है. पिछली जनगणना 2011 में दो चरणों में की गई थी.

अगली जनगणना 2021 में होनी थी लेकिन कोरोना महामारी की वजह से इसे टाल दिया गया था और अब ये क़रीब छह साल की देरी से कराई जाएगी.

इस साल एक फ़रवरी को पेश किए गए बजट में जनगणना के लिए 574.80 करोड़ रुपये आवंटित किए गए थे. जबकि साल 2021-22 के बजट में इसके लिए 3 हज़ार 768 करोड़ रुपये का आवंटन किया गया था.

केंद्रीय गृह मंत्रालय ने अब बजट में कटौती के बारे में जानकारी दी है. केंद्रीय गृह मंत्रालय के प्रवक्ता ने जानकारी दी है, 'जनगणना का आयोजन 2021 में किया जाना था और जनगणना की सभी तैयारियां पूरी कर ली गई थीं. लेकिन, देशभर में कोविड-19 महामारी के प्रकोप के कारण जनगणना का काम स्थगित करना पड़ा. कोविड-19 का असर काफ़ी समय तक जारी रहा.'

'जिन देशों ने कोविड-19 के तुरंत बाद जनगणना कराई, उन्हें जनगणना के आंकड़ों की गुणवत्ता और कवरेज से संबंधित समस्याओं का सामना करना पड़ा. सरकार ने जनगणना की प्रक्रिया तत्काल शुरू करने का निर्णय लिया है, जो जनगणना की संदर्भ तिथि अर्थात 01 मार्च, 2027 को पूरी होगी.'

एक्स पर दी जानकारी में कहा गया है, 'जनगणना के लिए बजट कभी बाधा नहीं रहा है क्योंकि धनराशि आवंटन हमेशा सरकार द्वारा सुनिश्चित किया जाता रहा है.'

जनगणना की प्रक्रिया को जल्दी और सुचारू रूप से पूरा करने के लिए पहली बार 2027 की जनगणना डिजिटल माध्यम से होगी.

हालांकि, 1931 से लेकर अब तक की जनगणना में पूछे जाने वाले सवाल लगभग एक से होते हैं. लेकिन एक सवाल जो 1951 से नहीं होता था वो था संबंधित व्यक्ति की जाति से जुड़ा हुआ.

हालांकि, इसमें अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति से जुड़ी जानकारी होती थी लेकिन अन्य जातियों के बारे में ये जानकारी नहीं दी जाती थी.

मगर इस बार की जनगणना में हर शख़्स को अपनी जाति बताने का विकल्प दिया जाएगा, जिसे एक बड़े बदलाव के तौर पर देखा जा रहा है.

आज़ादी के बाद या 1931 के बाद ये पहली बार है जब जातिगत जनगणना, जनगणना का हिस्सा होगी.

विपक्षी पार्टियों की ओर से लंबे समय से जातिगत जनगणना कराए जाने की मांग हो रही थी. इसी साल अप्रैल महीने में सरकार ने एलान किया था कि अगली जनगणना में जातिगत जनगणना भी शामिल होगी.

जनगणना का असर लोकसभा और राज्य विधानसभा सीटों के अगले परिसीमन, संसद और विधानसभाओं में महिलाओं के लिए प्रस्तावित 33 फ़ीसदी आरक्षण पर पड़ेगा.

महिला आरक्षण क़ानून के अनुसार, इसके लागू होने के बाद पहली जनगणना के आंकड़ों के आधार पर परिसीमन की प्रक्रिया शुरू होने के बाद लोकसभा और राज्य विधानसभाओं में महिलाओं के लिए एक तिहाई सीटों का आरक्षण लागू होगा.

जनगणना के बाद परिसीमन आयोग का गठन करना होगा और केवल आबादी के आधार पर परिसीमन के ख़िलाफ़ कई दक्षिणी राज्यों के विरोध को देखते हुए गहन विचार-विमर्श की आवश्यकता होगी.

केंद्रीय गृह मंत्रालय के प्रवक्ता की ओर से इस बारे में कहा गया है, 'केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने कई बार स्पष्ट किया है कि परिसीमन प्रक्रिया में दक्षिणी राज्यों की चिंताओं का ध्यान रखा जाएगा और उचित समय पर सभी से चर्चा होगी.'

संविधान के मुताबिक़, हर बार जनगणना के बाद परिसीमन की प्रक्रिया भी होती थी. 1951, 1961 और 1971 की जनगणना के आधार पर ये प्रक्रिया हुई.

इंडियन एक्सप्रेस के वरिष्ठ पत्रकार श्यामलाल यादव कहते हैं कि 1971 की जनगणना के आधार पर जब 1976 में परिसीमन प्रक्रिया हुई तब भी उत्तर भारत और दक्षिण भारत के बीच बड़ा विवाद खड़ा हुआ था.

उन्होंने कहा, 'दक्षिण भारत में आबादी धीमी गति से बढ़ रही थी जबकि उत्तर भारत में ये तेज़ी से बढ़ती दिख रही थी. दक्षिण के राज्यों की ये चिंता थी कि हम लोग जनसंख्या नियंत्रित कर रहे हैं और उसकी वजह से हमें नुक़सान होता है. क्योंकि लोकसभा और विधानसभा सीटों की संख्या तय करने में जनसंख्या एक बड़ा क्राइटेरिया होता है.'

श्यामलाल यादव कहते हैं कि 'इसी विवाद की वजह से 1976 के बाद परिसीमन रोक दिया गया था. इसकी वजह से तय किया गया कि अब परिसीमन 2001 में जो जनगणना होगी, उसके आधार पर किया जाएगा. उन्होंने कहा, 'इस बार जनगणना के आंकड़े बहुत महत्वपूर्ण होने जा रहे हैं. ये ही नए परिसीमन के लिए आधार बनेगा. लेकिन 2027 में तो पहले जनगणना होगी फिर इसके फाइनल आंकड़े आने में समय लगता है. इसलिए 2029 के लोकसभा चुनाव तक इस जनगणना से कुछ बदलता नहीं दिख रहा है. लेकिन उसके बाद के चुनावों में यही जनगणना परिसीमन का आधार बनेगी.'

(बीबीसी हिंदी में प्रकाशित लेख के संपादित अंश)

subahsaverenews@gmail.com

facebook.com/subahsaverenews

www.subahsavere.news

twitter.com/subahsaverenews

सुप्रभात

बड़े-बड़े हुक़्क़ाम बिके हैं
चाहे लगे छदाम, बिके हैं
सत्ता की ख़ातिर देखो तो
कितने नमक हराम बिके हैं
हर युग में होता आया है
कुछ इनाम-इक़राम बिके हैं
रातों-रात व्याकरण बदले
कितने पूर्णविराम बिके हैं
कवियों के तेवर बदले हैं
उनके यहां क़लाम बिके हैं
नाच नचाया जब गोपी ने
बड़े-बड़े घनश्याम बिके हैं
हुस्न इश्क़ की बलिवेदी पर
कितने यहां निज़ाम बिके हैं
शहंशाह की इस नगरी में
गुपचुप बहुत ग़ुलाम बिके हैं
सत्ता ऐसी शय है यारो
सारे दक्षिण - वाम बिके हैं
अक्षर भले अनश्वर हों पर
कितने अक्षर-धाम बिके हैं
निर्बल की तो फिर क्या कहिए
बड़े-बड़े बलराम बिके हैं।

- ओम निश्चल

मौत की 'यात्रा' चंद सेकेंड में सब कुछ खाक

● गुजरात के अहमदाबाद में दर्दनाक विमान हादसा, 241 यात्रियों की मौत, एक बचा ● लंदन जा रहा था एयर इंडिया का विमान

नई दिल्ली (एजेंसी)। अहमदाबाद में एयर इंडिया का बोइंग 787 ड्रीमलाइनर प्लेन क्रैश हुआ है। इसमें सवार 242 लोगों में से 241 की मौत हो गई है वहीं एक यात्री बचा हैं। मीडिया ने गुजरात पुलिस कमिश्नर के हवाले से यह जानकारी दी है। एयर इंडिया की उड़ान संख्या एआई-171 अहमदाबाद से लंदन जा रही थी। इसमें 169 भारतीय, 53 ब्रिटिश, 7 पुर्तगाली और एक कनाडाई नागरिक समेत कुल 230 यात्री सवार थे। बाकी 12 क्रू मेंबर्स थे। हादसे की जगह से मिले ज्यादातर शव इतनी बुरी तरह झुलस चुके हैं कि उनकी पहचान करने में बेहद मुश्किल आ रही है। उनकी पहचान डीएनए टेस्ट के बाद ही संभव होगी। हादसे में गुजरात के पूर्व मुख्यमंत्री विजय रूपाणी का भी निधन हो गया है। भाजपा के राज्यसभा सांसद परिमल नाथवानी ने एक्स पर यह जानकारी दी। हालांकि कुछ देर बाद उन्होंने अपनी पोस्ट डिलीट कर दी। प्लेन जिस बिल्डिंग से टकराया, वहां अहमदाबाद के सिविल हॉस्पिटल के डॉक्टर्स रहते हैं। जानकारी के मुताबिक हादसे के समय इमारत में 50 से 60 डॉक्टर मौजूद थे, इनमें 15 से ज्यादा घायल हो गए हैं। एयर इंडिया की फ्लाइट नंबर एआई-171 ने दोपहर 1.38 बजे उड़ान भरी थी। दोपहर 1.40 बजे यह क्रैश हो गई। जानकारी के मुताबिक विमान एयरपोर्ट की दीवार और एयर कस्टम कार्गो ऑफिस के पास क्रैश हुआ। विमान के गिरते ही पूरे इलाके में धुएं का गुबार दिखाई दिया।

पूर्व मुख्यमंत्री विजय रूपाणी का भी निधन

हादसे में गुजरात के पूर्व मुख्यमंत्री विजय रूपाणी का भी निधन हो गया है। भाजपा के राज्यसभा सांसद परिमल नाथवानी ने एक्स पर यह जानकारी दी। हालांकि कुछ देर बाद उन्होंने अपनी पोस्ट डिलीट कर दी। विजय भाई रमणिकलाल रुपाणी का जन्म 2 अगस्त 1956 को म्यांमार में हुआ था।2016 में जब आनंदीबेन पटेल ने इस्तीफा दिया, तब विजय रुपाणी को गुजरात का मुख्यमंत्री बनाया गया था। अगले साल 2017 में जब भाजपा ने गुजरात में चुनाव जीता तो विजय रूपाणी को फिर से मुख्यमंत्री बनाया गया।

61 विदेशी यात्री भी थे सवार

शब्दों से परे, यह दिल दहला देने वाली घटना

● अहमदाबाद विमान हादसे पर पीएम मोदी ने जताया दुख

गुजरात के अहमदाबाद में हुए विमान हादसे पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने दुख जताया है।उन्होंने इसे शब्दों से परे परे और दिल दहला देने वाला हादसा बताया। साथ ही, बताया कि वह अपने मंत्रियों व अधिकारियों से संपर्क में हैं।अहमदाबाद के मेघाणीनगर में हुए विमान हादसे में लगभग सभी लोगों ने अपनी जान गंवा दी है। हालांकि, अभी तक आधिकारिक आंकड़ा सामने नहीं आया है।यह हादसा गुरुवार दोपहर 1.38 मिनट पर हुआ।

सड़कों पर बिखरी थीं लाशें,पहचानना मुश्किल हो रहा था

धमाका इतना खौफनाक था कि आसपास की सड़कों पर लाशें बिखरी हैं।जले शवों को पहचानना तक मुश्किल हो रहा है।लोग अपनों की सलामती के लिए मंदिर में प्रार्थना कर रहे हैं।इस हादसे को लेकर जानकारी सामने आई है कि प्लेन को टेक ऑफ करने से पहले जांच की गई थी लेकिन कोई कमी नहीं मिली।टेक ऑफ करने के बाद पायलट ने मेडे कॉल दी थी, जिसमें यह संकेत दिया जाता है कि प्लेन खतरनाक स्थिति में है।हालांकि, इस कॉल के बाद प्लेन को बहुत कम वक्त मिला और 242 लोगों को लेकर लंदन जा रहा विमान नीचे आकर एक बिल्डिंग से टकरा गया।इस हादसे के बाद यात्रियों के परिजनों के लिए एक पैसेंजर हेल्पलाइन साझा की है।यात्री के परिजन जानकारी के लिए हॉट लाइन नंबर 1800 5691 444 पर संपर्क कर सकते हैं।इस हादसे में घायलों को अस्पताल पहुंचाया जा रहा है।मामले की गंभीरता को देखते हुए केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह ने गुजरात के मुख्यमंत्री भूपेंद्र पटेल से बात की है।

ऊर्जादाता बनेंगे मध्यप्रदेश के किसान : मुख्यमंत्री डॉ. यादव

सोलर केपिटल बनेगा मध्यप्रदेश : सूर्य मित्र कृषि फीडर योजना से होगा किसानों का आर्थिक सशक्तिकरण

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि मध्यप्रदेश के किसान अब ऊर्जादाता बनेंगे। 'सूर्य मित्र कृषि फीडर योजना' से प्रदेश के किसानों और छोटे निवेशकों को लाभ होगा। योजना का लाभ लेकर किसान बिजली उत्पादक बन सकते हैं। उन्होंने कहा कि नेट जीरो का लक्ष्य पाने में मध्यप्रदेश के किसान बड़ी भूमिका निभाएंगे। ऊर्जा समिट में एक ही मंच पर निवेशक, किसान, विशेषज्ञ और नीति-निर्माताओं ने उपस्थित होकर समृद्धि के नये द्वार पर दस्तक दी है। प्रदेश में अब तक 80 मेगावाट क्षमता की परियोजनाएं स्थापित की जा चुकी हैं, जिससे 16 हजार से अधिक कृषि पम्पों को सौर उर्जा से उर्जीकृत किया जा चुका है।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के मार्गदर्शन में राज्य सरकार कृषकों को आत्मनिर्भर बनाने, उनकी आय में बढ़ोतरी एवं आर्थिक विकास के लिये संकल्पित है। मध्यप्रदेश अब देश की सोलर कैपिटल ऊर्जाधानी बनने के मार्ग पर अग्रसर हैं। प्रदेश के रीवा, नीमच और ओंकारेश्वर सौर ऊर्जा का सशक्त हस्ताक्षर बन रहे हैं। नवीन एवं नवकरणीय ऊर्जा प्रदेश के लिए वरदान है। अब हमारी सरकार छोटे निवेशकों और किसान भाइयों को भी बिजली

उत्पादन का अवसर मुहैया कराने जा रही है। अब हमारे अन्नदाता, ऊर्जादाता बनने के पथ पर अग्रसर होंगे।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने बताया कि सूर्य मित्र कृषि फीडर योजना से छोटे निवेशकों के साथ किसानों को भी लाभ मिलेगा। इस योजना से वोकल फॉर लोकल के अंतर्गत स्थानीय स्तर पर उद्यमियों को निवेश एवं रोजगार के अवसर मिलेंगे। निवेशकों के साथ सरकार 25 साल तक बिजली खरीदने का समझौता करेगी। निवेशकों को नीतिगत प्रोत्साहन के साथ सस्ती ज़मीन और तय बिजली रेट मिलेगा। उन्होंने बताया कि सूर्य मित्र कृषि फीडर योजना से किसानों को भी अत्यधिक फायदा होगा। योजना से किसानों को दिन में भी सस्ती बिजली उपलब्ध कराई जा सकेगी। अन्नदाताओं का आर्थिक सशक्तिकरण होगा। किसानों को रात में बिजली का इंतजार नहीं करना पड़ेगा। दिन में 8 घंटे तक लगातार बिजली मिलेगी। किसान बिना रुकावट सिंचाई कर सकेंगे।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने बताया कि सूर्य मित्र कृषि फीडर योजना, प्रधानमंत्री कुसुम-सी योजना का विस्तार है। इस योजना में हर गाँव के पास जो कृषि फीडर (जहाँ से किसानों को बिजली मिलती है) है, उसको सौर ऊर्जा से चलाने की तैयारी हो रही है।

मध्यप्रदेश मना रहा उद्योग और रोजगार वर्ष

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने बताया कि प्रदेश में फरवरी माह में ग्लोबल इन्वेस्टर्स समिट का सफल आयोजन किया गया। इसमें 30.77 लाख करोड़ के निवेश प्रस्ताव मिले। इससे 21.40 लाख रोजगार के अवसर सृजित होंगे जो प्रदेश के युवाओं के साथ अन्य लोगों को भी आगे बढ़ने के अवसर प्रदान करेंगे। उन्होंने बताया कि मंदसौर और नरसिंहपुर में कृषि उद्योग समागम हुआ, इंदौर में IT कॉन्क्लेव हुआ। उज्जैन में स्पिरिचुअल एंड वेलनेस समिट- 2025 का सफलतापूर्वक आयोजन किया गया, इसमें 1900 करोड़ से अधिक के निवेश प्रस्ताव मिले। प्रदेश के हर वर्ग को रोजगार से जोड़ने के साथ ही निवेशकों को प्रोत्साहित करने के लिये औद्योगिक निवेश प्रोत्साहन के लिए 18 उद्योग फ्रैन्डली नीतियां जारी की गईं।

भोपाल का तापमान

अधिकतम 38 °c

न्यूनतम 30°c

सुबह सवेरे

इंदौर ■ शुक्रवार, 13 जून 2025

जो अग्नि हमें गर्मी देती है , हमें नष्ट भी कर सकती है ; यह अग्नि का दोष नहीं है।

चाणक्य नीति

परिवार के 4 लोगों की मौत, संक्रामक बीमारी का डर

रीवा में अचानक गिरी महिला ने तोड़ा दम, 24 घंटे में 5 की हालत गंभीर

रीवा (नप्र)। रीवा के निराला नगर वार्ड नंबर 9 में उल्टी-दस्त से संबंधित भयंकर बीमारी फैल गई है। 24 घंटे के भीतर ही एक के बाद एक सिलसिले बार तरीके से चार लोगों की एक साथ मौत हो गई है, चारों लोग एक ही परिवार के रहने वाले हैं। जबकि अन्य 5 लोगों को गंभीर हालत में इलाज के लिए रीवा के संजय गांधी अस्पताल में भर्ती करवाया गया है।पूरे घटनाक्रम की सूचना जैसे ही आसपास के लोगों को हुई है, आसपास की इलाके में दहशत फैल गई है। लगभग 1 किलोमीटर के एरिया में लोग अपने घरों में ही कैद हो रहे हैं। मोहल्ले वासी हैरान तो तब रह गए, जब मौके पर सूचना पाकर पहुंची स्वास्थ्य विभाग की टीम के सामने ही फर्श पर बैठी एक महिला ने अचानक जमीन पर गिरते ही कुछ ही मिनटों में दम तोड़ दिया। उधर पूरे मामले में पीड़ित परिवार ने इलाज में अनदेखी के साथ ही अंत्येष्टि के लिए भी कोई सहायता राशि न देने का आरोप लगाया है। पीड़ित परिवार के मुताबिक अब तक कोई भी जन प्रतिनिधि मौके पर नहीं पहुंचा है और न ही किसी तरह की कोई सहायता राशि दी गई है।

महू में तेज आंधी-बारिश, 10 घरों की छत उड़ी

- इंदौर में तेज बारिश, कई जगह पेड़ गिरे
- ग्वालियर, मुरैना में गिरा पानी, भोपाल समेत 20 जिलों में अलर्ट, 15 जून तक मानसून की एंट्री

भोपाल (नप्र)। मध्यप्रदेश में आंधी-बारिश का दौर जारी है। मध्यप्रदेश में आंधी-बारिश का दौर जारी है। गुरुवार को इंदौर में तेज हवाओं के साथ बारिश हुई। कई जगह पेड़ भी गिरे। धार के मनावर, ग्वालियर और मुरैना समेत कुछ जिलों में भी पानी गिरा। महू में आंधी के चलते 10 कच्चे घरों की छत उड़ गई। धार के मनावर में 15 मिनट तक बारिश हुई। मुरैना समेत कुछ जिलों में भी पानी गिरा। मौसम विभाग ने अगले कुछ घंटों

में भोपाल, उज्जैन समेत 20 जिलों में अलर्ट जारी किया है। बुरहानपुर और बैतूल में आकाशीय बिजली चमकने-गिरने के साथ मध्यम गरज के साथ बौछारें पड़ने की संभावना है।

रतलाम, उज्जैन, इंदौर, धार, विदिशा, सागर, रायसेन, हरदा, नर्मदापुरम, शाजापुर, राजगढ़, गुना, ग्वालियर,आगर-मालवा, देवास, सीहोर और खंडवा में भी मौसम बदला रहेगा। मौसम विभाग ने अगले 2 दिन यानी, 12 और 13 जून को ग्वालियर, चंबल, उज्जैन और सागर संभाग के जिलों में लू का अलर्ट जारी किया है। 14 जून से फिर से बारिश का दौर शुरू हो जाएगा। 15 जून को पूरे प्रदेश में बारिश का अलर्ट है। इसी दौरान मानसून की एंट्री भी प्रदेश में हो जाएगी।

24 घंटे के दौरान 21 जिलों में तेज आंधी और बारिश का दौर- पिछले 24 घंटे के दौरान कुल 21 जिलों में तेज आंधी और बारिश का दौर रहा। इनमें पन्ना, निवाड़ी, टीकमगढ़, छतरपुर, शहडोल, उमरिया, अनूपपुर, पांढुर्णा, बैतूल, हरदा, विदिशा, रायसेन, भोपाल, सीहोर, शाजापुर, देवास, इंदौर, खरगोन, खंडवा, बुरहानपुर और धार शामिल हैं। बारिश के साथ सीहोर में 74 किमी, इंदौर-हरदा में 52 किमी, भोपाल-बड़वानी में 39 और बैतूल में 34 किमी प्रतिघंटा की रफ्तार से आंधी चली। भोपाल में रानी कमलापति रेलवे स्टेशन के आसपास के इलाके में आंधी की रफ्तार 50 किमी से अधिक रही।

फायर ब्रिगेड की गाड़ी ने 6 लोगों को कुचला

पिता-पुत्र समेत तीन लोगों की मौत, तीन घायल; आग बुझाने जा रही थी गाड़ी

उज्जैन (नप्र)। उज्जैन के बड़नगर में आग बुझाने जा रही फायर ब्रिगेड की गाड़ी ने 6 लोगों को टक्कर मार दी। इस हादसे में पिता-पुत्र समेत तीन लोगों की मौत हो गई, जबकि 3 लोग घायल हुए हैं। पुलिस ने आरोपी ड्राइवर को हिरासत में ले लिया है। दरअसल, बड़नगर हाईवे पर बरगुंडासेरी रोड पर गुरुवार दोपहर नगर पालिका के फायर स्टेशन को आग लगने की सूचना मिली थी। आग बुझाने जा रही गाड़ी को ड्राइवर तेज गति से चला रहा था। इस दौरान एक शख्स को टक्कर मारी, उसकी मौके पर ही मौत हो गई। टक्कर मारने के बाद गाड़ी पलट गई और घिसटती चली गई, जिसकी चपेट में 5 अन्य लोग आ गए। हादसे में घायल आवेश (2 साल) और उसके पिता जितेंद्र सिंह (50 साल) को गंभीर हालत में उज्जैन के चरक अस्पताल में भर्ती कराया गया, जहां इलाज के दौरान दोनों की मौत हो गई। जबकि संतोष, महिला उजाला सिंह और तनीषा (3 वर्ष) का इलाज बड़नगर के अस्पताल में चल रहा है।

पश्चिम बंगाल में मंदिर में तोड़फोड़ के बाद भारी बवाल

दक्षिण परगना में बिगड़ा माहौल, पुलिस पर भी पथराव

कोलकाता (एजेंसी)। बीते दिनों मुर्शिदाबाद में हुई

हिंसा के बाद पश्चिम बंगाल में एक बार फिर तनाव बढ़ गया है। यहां दक्षिण 24 परगना के महेशतला में दो गुटों के बीच हिंसक झड़प हुई है। कथित तौर पर स्थिति तब बिगड़ गई जब कुछ लोगों ने एक शिव मंदिर में तोड़फोड़ और पत्थरबाजी की। हिंसा के बाद अब इलाके में भारी पुलिस बल की तैनाती की गई है। वहीं कानून व्यवस्था बनाए रखने के लिए भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता की धारा 163 लागू कर दी गई है। पुलिस के मुताबिक अब तक 40 लोगों को गिरफ्तार कर लिया गया है और अन्य लोगों की तलाश जारी है। एक पुलिस अधिकारी ने कहा, छापेमारी की जा रही है और अतिरिक्त पुलिस बल की तैनाती की गई है। प्रत्यक्षदर्शियों बताया कि भीड़ ने कई गाड़ियों को आग के हवाले कर दिया। वहीं लोगों ने पुलिस पर पथराव भी किया। रवींद्रनगर पुलिस स्टेशन के बाहर अधिकारियों के साथ लोगों की झड़प हुई है। पथराव के दौरान एक महिला कांस्टेबल सहित कई पुलिस कर्मियों के घायल होने की खबर भी सामने आई है। एक पुलिस अधिकारी के हवाले से बताया, छतों से ईंटें फेंकी गई है, लोगों ने सड़कों पर टायरों में आग लगा दी और उपद्रवियों ने पुलिस स्टेशन के सामने एक मोटरसाइकिल जला दी।

पाक जासूसी कांड में ज्योति मल्होत्रा को नहीं मिली राहत

- जमानत याचिका हो गई खारिज,जेल में ही रहना होगा

चंडीगढ़ (एजेंसी)। पाकिस्तान के लिए जासूसी करने के आरोप में गिरफ्तार हरियाणा की यूट्यूबर ज्योति मल्होत्रा को अभी कोई राहत नहीं मिली है। हिसार कोर्ट ने ज्योति मल्होत्रा को जमानत देने से इनकार करते हुए जमानत अर्जी खारिज कर दी है। हिसार के न्यायिक दंडाधिकारी सुनील कुमार ने पहले फैसला सुरक्षित रख लिया था लेकिन शाम चार बजे ज्योति की याचिका खारिज कर दी। वह करीब एक माह से जेल में बंद है और अब जमानत याचिका दाखिल की थी।

इसके खारिज होने के कारण अभी ज्योति मल्होत्रा को जेल में ही रहना होगा। हिसार पुलिस ने ज्योति मल्होत्रा को पाकिस्तान के लिए जासूसी करने के आरोप में 16 मई को गिरफ्तार किया था। सुनवाई के दौरान ज्योति के वकील कुमार मुकेश ने कोर्ट के सामने कई दलीलें दी। उन्होंने कहा कि ज्योति पर लगाए गए आरोप तथ्यहीन हैं और उन पर लगे कानूनी प्रावधान इस मामले में लागू नहीं होते। उन्होंने कहा कि कोर्ट फाइल में कोई ठोस सबूत नहीं दिया गया है।

नए परिसीमन से कई राज्यों की बल्ले-बल्ले, कई होंगे मायूस

- अकेले उत्तर प्रदेश में होंगी लोकसभा की 143 सीटें
- 2029 तक महिला आरक्षण लागू करने की भी तैयारी

नई दिल्ली (एजेंसी)। केंद्र सरकार 2029 के आम चुनावों से पहले लोकसभा और राज्य विधानसभाओं में महिलाओं को 33 फीसदी आरक्षण देने की योजना पर काम कर रही है। यह आरक्षण नए परिसीमन के आधार पर लागू किया जाएगा। इस बारे में जानकारी रखने वाले तीन सूत्रों ने बुधवार को बताया कि यह योजना पहले से तय समय-सीमा से कहीं पहले लागू की जा सकती है। सरकार ने हाल ही में घोषणा की थी कि जनगणना 2026 के बाद, दो चरणों में 1 मार्च 2027 से पहले पूरी की जाएगी। यह

जनगणना स्वतंत्रता के बाद पहली बार जातिगत आंकड़ों को भी शामिल करेगी, जो आगे चलकर परिसीमन की आधारशिला बनेगी। अब तक माना जा रहा था कि परिसीमन की प्रक्रिया और महिलाओं के लिए आरक्षण 2034 के आम चुनावों तक ही लागू हो पाएंगे, लेकिन अब 2029 की समय-सीमा को लेकर केंद्र सरकार काफी आक्रामक रूप से योजना बना रही है। यूपी 143 सीटें हो जाएंगी।

दक्षिणी राज्यों की चिंता भी एजेंडे में होगी शामिल

परिसीमन आयोग के लिए सबसे बड़ी चुनौती दक्षिणी राज्यों की उस मांग को संतुलित करना होगा, जिसमें कहा गया है कि केवल जनसंख्या के आधार पर संसदीय सीटों का निर्धारण उन राज्यों के साथ अन्याय होगा, जिन्होंने 1970-80 के दशक में जनसंख्या नियंत्रण को प्राथमिकता दी थी। केंद्र सरकार ने इन राज्यों को आश्वासन दिया है कि उनकी चिंताओं को ध्यान में रखा जाएगा। गृहमंत्री अमित शाह ने फरवरी में कोयंबटूर में कहा था कि परिसीमन के चलते दक्षिण भारत की कोई भी सीट नहीं छीनी जाएगी। सितंबर 2023 में संसद से पारित हुआ नारी शक्ति वंदन अधिनियम, 2023 लोकसभा और विधानसभाओं में महिलाओं के लिए 33 फीसदी सीटों के आरक्षण का प्रावधान करता है। लेकिन यह आरक्षण परिसीमन के बाद ही लागू होगा।

पश्चिम बंगाल में दुकान खोलने को लेकर दो समुदाय टकराए

- 5 घायल, 29 उपद्रवी गिरफ्तार, भाजपा नेता का दावा-मंदिर भी तोड़ा गया

कोलकाता (एजेंसी)। पश्चिम बंगाल के दक्षिण 24 परगना जिले के रवींद्रनगर इलाके में बुधवार को दो समुदायों के बीच दुकान खोलने को लेकर हिंसक झड़प हो गई। उपद्रवियों ने पुलिस थाने के बाहर पथराव किया, टायर जलाए और एक बाइक को आग के हवाले कर दिया। अब तक 29 लोगों को गिरफ्तार किया गया है। घटना में 5 लोग घायल हो गए। वहीं, 1 महिला

पुलिसकर्मी सहित कई पुलिसवाले भी घायल हुए हैं। स्थिति संभालने के लिए कोलकाता पुलिस और रैपिड एक्शन फोर्स तैनात की। पश्चिम बंगाल विधानसभा में विपक्ष के नेता (एलओपी) सुवेंदु अधिकारी और राज्य के अन्य भाजपा नेताओं ने आरोप लगाया कि रवींद्र नगर पुलिस स्टेशन के पास मेटियाबूज विधानसभा क्षेत्र के अंतर्गत महेशतला के वार्ड नंबर 7 में एक शिव मंदिर में तोड़फोड़ की गई। शुभेंदु ने इंस्पेक्टर को निलंबित करने की मांग की विपक्ष के नेता शुभेंदु अधिकारी ने कोलकाता पुलिस मुख्यालय के बाहर धरना दिया और केंद्रीय बलों की तैनाती की मांग की। उन्होंने राज्यपाल डॉ. सीवी आनंद बोस से इंस्पेक्टर मुकुल मिया को निलंबित कर भूमिका की जांच की मांग भी की।

फडणवीस और राज ठाकरे की डेढ़ घंटे हुई मुलाकात

- शिवसेना यूबीटी-मनसे गठबंधन पर लग सकता है ब्रेक
- उद्धव ठाकरे ने कहा था-जनता जो चाहेगी अब वही होगा

मुंबई (एजेंसी)। महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस ने गुरुवार को महाराष्ट्र नवनिर्माण सेना (मनसे) प्रमुख राज ठाकरे से मुलाकात की। ये मीटिंग मुंबई के ताज लैंड्स एंड होटल में करीब डेढ़ घंटे तक चली। यह कार्यक्रम सीएम फडणवीस के शेड्यूल में शामिल नहीं था। अचानक हुई इस मीटिंग के बाद राजनीतिक गलियारे में चर्चा है कि पिछले दिनों शिवसेना और मनसे (यूबीटी) के बीच गठबंधन की जो संभावनाएं थीं, उन पर फिलहाल विराम लग सकता है। हालांकि महाराष्ट्र सरकार में मंत्री और बीजेपी नेता नितेश राणे ने

कहा, ये मुलाकात राजनीतिक नहीं हैं। देवेंद्र जी के हर व्यक्ति के साथ अच्छे संबंध हैं। दरअसल, शिवसेना (यूबीटी) प्रमुख उद्धव ठाकरे ने 6 जून को अपने चचेरे भाई राज ठाकरे के साथ गठबंधन के संकेत दिए थे। उद्धव ने कहा था कि महाराष्ट्र की जनता जो चाहेगी, वही होगा।

अखिलेश की तरकीब से बिहार में तेजस्वी करेंगे बड़ा 'खेला'

- बीजेपी को गच्चा देने का है प्लान,नड्डा एंड ब्रिगेड की भी है पूरी तैयारी

पटना (एजेंसी)। बिहार विधानसभा चुनाव 2025 में जीत दर्ज करने के लिए बीजेपी प्लानिंग में जुट गई है। इस योजना में एंटी-इंकंबेंसी का न होना, जातीय समीकरण, ऑपरेशन सिंदूर का गुणगान, जाति जनगणना कार्ड और नीतिश कुमार के लिए सहानुभूति शामिल है। बीजेपी सूत्रों के अनुसार, पार्टी किसी भी तरह की लापरवाही से बच रही है। जेपी नड्डा एंड ब्रिगेड भली-भांति समझती है कि बिहार चुनाव में जातीय गोलबंदी के मोर्चे पर उनका कड़ा मुकाबला है। एनडीए के पास बिहार में जीतने के लिए बहुत कुछ है। पार्टी को उम्मीद है कि वह नीतिश कुमार के नेतृत्व में बिहार चुनाव हर हाल में जीतेगी।

हालांकि, पार्टी सतर्क है और ओवर कॉन्फिडेंस से बच रही है। उन्हें पता है कि बिहार चुनाव एक 'जातीय गोलबंदी' की लड़ाई है। वहीं आरजेडी का प्रयास है कि वह समाजवादी पार्टी वाली प्लानिंग बिहार में दोहराए। तेजस्वी यादव का प्रयास है कि वह 2025 के बिहार चुनाव में वही करें जो 2024 के लोकसभा चुनाव में अखिलेश यादव ने उत्तर प्रदेश में किया था। आरजेडी यादव-मुस्लिम समुदाय से बाहर के उम्मीदवारों को टिकट दे रही है। इसके अलावा 2024 के लोकसभा चुनाव में कंफ्यूजन क्रिएट कर बीजेपी को झांसे में रखने का काम किया था।

पंजाब में सोशल मीडिया इन्फ्लुएंसर की कार में लाश मिली

युवक पार्किंग में छोड़कर भागा, आतंकी डल्ला ने अश्लील कंटेंट पर धमकी दी थी

लुधियाना/बठिंडा (एजेंसी)। पंजाब की सोशल मीडिया इन्फ्लुएंसर कमल कौर भाभी उर्फ कंचन कुमारी की मौत हो गई। उसकी लाश बठिंडा में एक अस्पताल की पार्किंग में कार से मिली। फिलहाल पुलिस ने शव

कब्जे में लेकर सिविल अस्पताल की मॉर्च्युरी में रखवा दिया है। अभी यह सामने नहीं आया है कि कमल कौर की हत्या किसने की। पुलिस मामले की जांच कर रही है। घटना का एक वीडियो सामने आया है, जिसमें 10 जून को सुबह 5.33 बजे एक कार अस्पताल की पार्किंग में आती हुई दिख रही है। एक सिख युवक कार पार्क करके वहां से चला जाता है। कमल कौर (30) लुधियाना की रहने वाली थीं। वह इंस्टाग्राम पर अक्सर विवादित और अश्लील रील बनाती थी।

गजब की खुदगर्जी पर उतर आया ट्रंप का अमरीका

- आतंकवाद पर अब देगा पाकिस्तान का साथ,मुनीर को भेजा न्योता
- दोगलापर उजागर, नापाक रिश्ते के खुलासे के बाद टेंशन में भारत

नई दिल्ली (एजेंसी)। 26/11 की घटना के बाद दुनिया में यह माहौल बना था कि आतंकवाद के खिलाफ लड़ाई में अमेरिका सबसे आगे रहेगा। लेकिन, पिछले कुछ समय में ऐसी कई चीजें देखने को मिली हैं, जिससे साफ हो चुका है कि दुनिया का सुपरपावर समझने वाला अमेरिका आतंकवाद के मामले में भी निहित स्वार्थ में डूबा हुआ है। उसे सिर्फ उन आतंकियों से दुश्मनी है, जिससे उसके अपने हित प्रभावित हो रहे हैं। बाकी आतंकवाद को राष्ट्रीय नीति के तौर पर चलाने वाला पाकिस्तान जैसा देश ही क्यों न हो, अमेरिका उनके साथ खड़ा रहेगा। ऐसे में पहलगाम हमले के बाद दुनिया भर में आतंकवाद के खिलाफ अभियान चलाने वाले भारत की लड़ाई को नए सिरे से लड़ने की जरूरत आ खड़ी हुई है। आतंकवाद के मसले पर अमेरिका की दोहरी नीति की सबसे बड़ी पोल उसके सेंट्रल कमांड के चीफ जनरल माइकल कुरिला के एक बयान से खुली है। उन्होंने आतंकवाद से लड़ने में पाकिस्तान को एक 'वैल्यूएबल पार्टनर' बताया है। यहां तक कि उन्होंने आतंकी संगठनों से निपटने के लिए पाकिस्तान के साथ सहयोग बढ़ाने की बात

कही है। अमेरिकी सीनेट कमेटी के सामने जनरल कुरिला ने कहा कि आईएसआईएस-के पाकिस्तान-अफगानिस्तान बॉर्डर के आदिवासी इलाकों में एक्टिव है। ऐसे में उसके लिए पाकिस्तान की भूमिका और भी अहम हो जाएगी। उन्हें इस बात की खुशी है कि पाकिस्तान ने मोहम्मद शरीफुल्ला को गिरफ्तार और प्रत्यर्पित किया। शरीफुल्ला आईएसआईएस-के का प्लानर था। उसने 26 अगस्त 2021 को एब्बे गेट पर आत्मघाती हमला किया था, जिसमें 13 अमेरिकी सैनिक और 160 नागरिक मारे गए थे। उन्होंने यह भी बताया कि पाकिस्तानी आर्मी चीफ जनरल असीम मुनीर ने आतंकी की गिरफ्तारी के बाद उन्हें फोन किया था और अमेरिकी डिफेंस सेक्रेटरी और अमेरिकी राष्ट्रपति को जानकारी देने के लिए भी कहा था। वे पिछले कुछ महीनों में जनरल मुनीर से कई बार मिल चुके हैं। अमेरिका के एक बड़े अधिकारी ऐसे समय में पाकिस्तान के साथ आतंकवाद पर अपनी तालमेल का महिमामंडन कर रहे हैं, जब पहलगाम आतंकी हमले में जनरल असीम मुनीर की भूमिका का पर्दाफाश हो चुका है। पाकिस्तानी सेना के इसी चीफ के भड़काऊ बयान के हफ्ते भर बाद ही पहलगाम की बैसरन घाटी को पाकिस्तानी आतंकियों ने 25 भारतीय और एक विदेशी नागरिक का धर्म पूछकर उनके खून से लाल कर दिया। मतलब, माइकल कुरिला ने जो कुछ कहा है और ऑपरेशन सिंदूर के दौरान अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने जो रवैया दिखाया है, वह ठीक नहीं है।

भाजपा के नए अध्यक्ष का चुनाव 21 जुलाई तक संभव

नई दिल्ली (एजेंसी)। भाजपा के नए राष्ट्रीय अध्यक्ष का चुनाव 21 जुलाई को संसद के मानसून सत्र की शुरुआत से पहले हो सकता है। अगले हफ्ते से इस दिशा में कवायद तेज हो जाएगी। लगभग 10 राज्यों में नए प्रदेश अध्यक्ष चुन लिए जाएंगे। इसके तुरंत बाद राष्ट्रीय अध्यक्ष की चुनाव प्रक्रिया शुरू होने की उम्मीद है। भाजपा के वरिष्ठ नेताओं की तरफ से अनौपचारिक बातचीत में इसके साफ संकेत मिले हैं कि नए अध्यक्ष का चुनाव अब टाला नहीं जाएगा।

इंदौर में तीसरी कोरोना पॉजिटिव महिला की मौत

12 नए केस आए सामने, अब तक 81 पॉजिटिव मरीज, 51 एक्टिव

इंदौर (एजेंसी)। इंदौर में 52 वर्षीय कोरोना पॉजिटिव महिला की बुधवार को मौत हो गई। वह रतलाम की रहने वाली थीं। महिला को पहले से टीबी, ब्रोंकाइटिस और हाई ब्लड प्रेशर जैसी गंभीर बीमारियों से पीड़ित थीं। 8 जून को उन्हें सांस लेने में तकलीफ के कारण प्राइवेट अस्पताल में भर्ती किया गया था। 10 जून को रिपोर्ट में कोरोना संक्रमण की पुष्टि हुई, जिसके बाद उन्हें सरकारी अस्पताल एमआरटीबी के आइसोलेशन वार्ड में शिफ्ट किया गया, लेकिन 11 जून को उनकी मौत हो गई। इस साल प्रदेश में कोरोना संक्रमित मरीज की यह तीसरी मौत है। हालांकि महिला की मौत रतलाम जिले के रिकॉर्ड में दर्ज की जाएगी। इससे पहले 6 जून को खरगोन की 44 वर्षीय महिला की एमआरटीबी अस्पताल में मौत हुई थी। वह हाल ही में एमटीएच अस्पताल में बच्चे को जन्म देने के बाद संक्रमित पाई गई थीं। इससे पहले, 27 अप्रैल को इंदौर की 74 वर्षीय किडनी रोगी महिला की अरबिंदो अस्पताल में मौत हो चुकी है।

इंदौर में मिले 12 नए कोरोना पॉजिटिव मरीज- इंदौर में बुधवार को कोरोना के 12 पॉजिटिव मरीज मिले हैं। ये सभी इंदौर के रहने वाले हैं। इनकी ट्रैवल हिस्ट्री पता की जा रही है। इन मरीजों सहित अब तक इंदौर में कुल 81 कोरोना मरीज पाए गए हैं। इनमें से 69 इंदौर के हैं, जबकि 12 मरीज बाहर के हैं। अभी एक्टिव केसों की संख्या 51 है। अधिकांश एक्टिव मरीज होम आइसोलेट हैं और उनकी हालत ठीक है।

मंगलवार को जो 9 कोरोना मरीज मिले थे, उनमें से एक 67 वर्षीय बुजुर्ग को अन्य बीमारियां भी हैं, जिसके चलते उन्हें एक प्राइवेट हॉस्पिटल में भर्ती किया गया है। इसी तरह, एक अन्य 50 वर्षीय व्यक्ति को सांस लेने में परेशानी और अन्य तकलीफों के कारण प्राइवेट हॉस्पिटल में भर्ती किया गया है।

राजा से पहले सोनम के और भी दोस्त थे

इंदौर (एजेंसी)। मेघालय में पति की हत्या करवाने के आरोप में गिरफ्तार सोनम को कोर्ट ने 8 दिन की पुलिस रिमांड पर भेज दिया है। लेकिन इंदौर में सोनम को लेकर हर दिन नए खुलासे हो रहे हैं। 9 जून को जब सोनम पुलिस के हाथ लगी, तब से उसका परिवार किसी से नहीं मिल रहा। पड़ोसी भी चुपचाप बातें कर रहे हैं। एक पड़ोसी ने नाम न बताने की शर्त पर कहा, सोनम का स्वभाव अड़ियल था। उसे लड़कों जैसा रहना पसंद था। राज ही नहीं, और भी कई लड़कों से उसकी दोस्ती थी।

पिता की दुकान पर बैठती थी, अक्सर झगड़े होते थे

सोनम बचपन में अपने पिता की किराने की दुकान पर बैठती थी। इस दौरान वह कई बार ग्राहकों से उलझ जाती थी। कोई अगर घर के बाहर उसकी गाड़ी हटाने को कहता, तो वह झगड़ने पर उतर आती थी। उसके इस व्यवहार को लेकर पिता कई बार उसे समझा चुके थे।

गुना से आया परिवार, इंदौर में बसाया कारोबार

सोनम का परिवार मूल रूप से गुना जिले का रहने वाला है। करीब 45 साल पहले उसके पिता देवीसिंह इंदौर आए। उन्होंने पहले फर्नीचर का काम किया और फिर किराने की दुकान खोली। यहीं उन्होंने चुन्नीबाई से शादी की। बेटा गोविंद और बेटी सोनम बड़े हुए तो दोनों दुकान पर बैठने लगे। सोनम ने कॉलेज की पढ़ाई भी इंदौर में ही की।

ब्याज पर पैसे देता था परिवार

देवीसिंह इलाके में ब्याज पर पैसे भी देता था। सोनम खुद लोगों से पैसे वसूलती थी। 5-6 साल पहले जब भाई गोविंद ने अपना प्लायवुड का बिजनेस शुरू किया और घर की आर्थिक स्थिति सुधरी, तब भी सोनम का स्वभाव ज्यादा नहीं बदला।

लड़कों की तरह रहने का शौक

कुछ पड़ोसियों ने बताया कि सोनम का रहन-सहन लड़कों जैसा था। वह लड़कों जैसे कपड़े

पड़ोसी बोले- अड़ियल स्वभाव की है सोनम, उसे लड़कों की तरह रहना पसंद

पहनती और लड़कों के साथ ही घूमती थी। राज कुशवाह से उसकी दोस्ती काफी बाद में हुई थी, उससे पहले भी उसके कई दोस्त थे। सहेलियों का आना-जाना उसके घर बहुत कम था। पिता देवीसिंह उस पर सख्ती रखते थे, जबकि भाई गोविंद का व्यवहार सामान्य था। लोग गोविंद को पसंद करते थे।

हवाला से पेमेंट, राज के जिम्मे था अकाउंट

इधर, राज कुशवाह के बारे में जानकारी मिली है कि वह गोविंद की कंपनी के एक खाते को संभालता था। इस खाते से कुछ लेन-देन हवाला के जरिए होता था। सोनम ने जिन आरोपियों को 50 हजार रुपए दिलवाए थे, वह रकम भी हवाला के जरिए ही गई थी।

20 मई को एयरपोर्ट के लिए अकेला ही गया राजा

राजा के बड़े भाई सचिन ने बताया, 20 मई को शिलॉन्ग जाने के लिए राजा घर से सुबह अकेला ही एयरपोर्ट के लिए निकल गया था। कोई उसे छोड़ने नहीं गया था। वह घर से रैपिडो से निकल गया था। राजा को सोनम ने सुबह जल्दी बुला लिया था। वह मायके में थी। राजा एयरपोर्ट पर उसका इंतजार करता रहा और वह काफी देर बाद भाई के साथ पहुंची। इसके बाद वे शिलॉन्ग के लिए रवाना हुए। यह बात राजा की मां उमा रघुवंशी भी कह चुकी हैं कि 20 मई को राजा-सोनम की फ्लाइट सुबह 9.30 बजे थी, लेकिन सोनम ने राजा को सुबह 5 बजे ही उठा दिया था। सोनम ने कहा था कि एयरपोर्ट पर सुबह 6.30 बजे ही पहुंच जाए, इसलिए राजा ने रैपिडो बुक की और अकेला ही चला गया।

8 बजे के बाद एयरपोर्ट पहुंची थी सोनम

मां और भाइयों ने बताया कि राजा जब एयरपोर्ट पहुंचा तो सोनम नहीं आई थी। उसने सोनम को कॉल किया पर उसने फोन नहीं उठाया। इसके बाद राजा ने अपनी मां से बात की और पूरा वाकया बताया। मां ने सोनम को फोन लगाया तो उसने जवाब दिया कि राजा सुबह देर से उठते हैं, उन्हें जल्दी उठाने के लिए ऐसा किया। बताया जा रहा है कि सोनम उस दिन मायके से सुबह 8 बजे के बाद एयरपोर्ट पर पहुंची थी, तब तक राजा उसका इंतजार ही करता रहा।

राजा की पंसद का है घर का एलिवेशन

भाई सचिन ने बताया कि घर का एलिवेशन राजा की पसंद का है। काफी एलिवेशन देखे थे, लेकिन राजा को यही पसंद था, इसलिए इसे फाइनल किया था। घर को देखकर बार-बार उसकी याद आ जाती है। घर में स्विमिंग पूल भी उसके लिए ही बनवाया था। राजा जिम जाता था। जिम से आने के बाद कई बार वह स्विमिंग करता था। 18 मई को परिवार के लोगों के साथ उसने पूल में काफी मस्ती की थी। वह काफी खुश नजर आ रहा था।

राजा के बेडरूम की दीवार पर दिल के आकार के गुब्बारे

दूसरी मंजिल पर राजा का बेडरूम है। शादी के बाद इस रूम को सजाया गया था, जिसमें लाल गुब्बारे और रीबन लगी है। ये कमरा आज भी सजा हुआ है। समय के साथ गुब्बारों की हवा कम हो चुकी है। वहीं बेड के ठीक पीछे की दीवार पर दिल के आकार के गुब्बारे लगे हैं। दीवार पर आई लव यू के लेटर भी लगे हैं। भाई सचिन ने बताया, राजा का नाम भी मैंने ही रखा था। रात में हम सब भाई राजा के कमरे में बैठकर बातें करते हैं, ताकि वो जहां भी हो उसे ये देखकर अच्छा लगे।

शादी के एक माह बाद भी सजा राजा का बेडरूम, परिवार बोला- घर का इंटीरियर उसी की पसंद ; आखिरी वीडियो सामने आया

राजा रघुवंशी के शिलॉन्ग जाने के पहले का एक वीडियो सामने आया है। यह वीडियो राजा के घर का ही है, जहां वह स्विमिंग पूल में परिवार के साथ इंजॉय कर रहा है। ये वीडियो राजा के घर का आखिरी वीडियो बताया जा रहा है। वहीं घर की दूसरी मंजिल पर राजा का बेडरूम है, जो शादी के बाद से आज भी सजा हुआ है। दीवारों पर लाल रंग के गुब्बारे और रिबन लगे हैं। बेड के पीछे की दीवार पर आई लव यू लिखा है, आसपास दिल के शेप के गुब्बारे लगे हैं। राजा के भाई सचिन रघुवंशी, भाई (कजन) सुनील रघुवंशी ने मीडिया को बताया कि राजा शिलॉन्ग जाने के दो दिन पहले यानी 18 मई को घर पर ही था। उसने घर में बने स्विमिंग पूल में परिवार के सदस्यों के साथ मस्ती की। काफी खुश था। पूल में परिवार के बच्चे भी थे। सुनील ने बताया, मैं राजा का वीडियो बना रहा था, लेकिन पता नहीं था कि ये उसका इस घर में आखिरी वीडियो होगा। काफी देर तक पूल में मस्ती की थी। इसके अगले दिन 19 मई को राजा और सोनम उज्जैन गए थे। वहां से लौटने के बाद 20 मई की सुबह राजा शिलॉन्ग के लिए निकल गया।

विधायक ने शराब दुकान के बाहर लगाया ताला

रहवासी कर रहे थे विरोध, दुकान के बाहर कुर्सियां लगाकर बैठी महिलाएं

इंदौर (एजेंसी)। स्कीम नंबर 71 में खुली नई शराब दुकान का विरोध रहवासी कर रहे थे। बुधवार रात को विधायक मालिनी गौड़ यहां पहुंची और रहवासियों से चर्चा के बाद दुकान के बाहर ताला लगा दिया। विधायक के ताला लगाने के बाद रहवासियों ने भारत माता की जय, नारी शक्ति जिंदाबाद के नारे भी लगाए। बता दे कि पिछले कई दिनों से स्कीम नंबर 71 में नई शराब दुकान खुली थी। जिसका विरोध क्षेत्रीय रहवासियों द्वारा किया जा रहा था। रहवासी संघ स्कीम नंबर 71 के बैनर तले महिलाएं और पुरुष दोनों ही यहां पर रात दिन विरोध कर रहे थे। महिलाएं शराब दुकान के बाहर कुर्सियां लगाकर बैठती थी। नई शराब दुकान के कारण आने वाले समय में होने वाली समस्याओं को भी रहवासियों ने बताया था।

कलेक्टर को भी दे चुके थे ज्ञापन

उल्लेखनीय है कि इस मामले में पार्षद जितेंद्र राठौर के साथ रहवासी कलेक्टर ऑफिस पहुंचे थे और उन्होंने वहां पर नई शराब दुकान बंद करने के लिए ज्ञापन भी दिया था। इसके बाद से ही रहवासी इस दुकान का विरोध कर रहे थे।

विधायक ने लगाया ताला

इधर, बुधवार रात को विधायक मालिनी गौड़ पहुंची। इस दौरान वहां पार्षद और रहवासी मौजूद थे। बताया जा रहा है कि इस मामले में उन्होंने पहले ही संभागायुक्त से चर्चा की थी। जिसके बाद वह यहां पहुंची और उन्होंने शराब दुकान के बाहर गेट पर ताला लगा दिया। ताला लगाने के बाद वहां मौजूद रहवासियों ने भारत माता की जय और नारी शक्ति जिंदाबाद सहित कई नारे भी लगाए।

9 दिनों में 10 डिग्री बढ़ा तापमान

पारा 41 डिग्री सेल्सियस पर पहुंचा, अगले 2-3 दिन ऐसा ही रहेगा मौसम

इंदौर (एजेंसी)। इंदौर में जून के दूसरे हफ्ते में भी गर्मी का असर बढ़ते जा रहा है। स्थिति यह कि नौ दिनों से दिन के तापमान में रोज औसतन एक डिग्री की बढ़ोतरी हो रही है। 3 जून को दिन का तापमान 31.3 डिग्री सेल्सियस रिकॉर्ड किया गया था जबकि 11 जून को तापमान 41.6 (+4) डिग्री सेल्सियस रिकॉर्ड किया गया। मौसम वैज्ञानिकों ने दो-तीन तेज गर्मी के आसार जताए हैं। इंदौर पिछले 9 दिनों में दिन के तापमान में 10 डिग्री का इजाफा हुआ है। खास बात यह कि इस मई में रिकॉर्ड तोड़ बारिश हुई थी। बारिश से पहले दिन का सबसे ज्यादा तापमान 42 डिग्री सेल्सियस रिकॉर्ड किया गया था जबकि इस बार जून के दूसरे हफ्ते में ही पारा 41 डिग्री पार पहुंच चुका है।

रोचक पहलू यह है कि इस बार मई माह का मिजाज जून जैसा रहा और अब जून का मिजाज मई जैसा बना हुआ है। अब रोज तेज धूप पड़ रही है और लोग पसीने से हलाकान हैं। आज भी सुबह मौसम साफ होने के बाद गर्मी का असर बढ़ता जा रहा है। मौसम विभाग ने अगले 2 दिन यानी, 12 और 13 जून को ग्वालियर, चंबल, उज्जैन और सागर संभाग के जिलों में लू का अलर्ट जारी किया है। इंदौर के तापमान में अभी और इजाफा हो सकता है।

इंदौर में मानसून की एंट्री 15 जून के बाद

पिछले 14 दिन से मानसून महाराष्ट्र-छत्तीसगढ़ में एक ही जगह पर ठहरा है। इस वजह से प्रदेश में इसकी एंट्री लेट हो रही है। हालांकि बुधवार को मानसून की हलचलें तेज हुईं है। इससे मौसम विभाग ने 14-15 जून को मध्य और पूर्वी भारत के हिस्सों में दक्षिण-पश्चिम मानसून के एंटर होने की संभावना जताई है। यानी मध्य प्रदेश में मानसून इन दो दिन के अंदर आमद दे सकता है। मानसून के प्रवेश की सामान्य तारीख 15 जून ही है। पिछले साल यह 21 जून को एंटर हुआ था। इंदौर में 15 जून के बाद ही मानसून की एंट्री का अनुमान है। यदि पिछले 10 साल के आंकड़ों पर नजर डाले तो मानसून के एंटर होने से पहले प्रदेश में तेज गर्मी का असर रहता है। सबसे ज्यादा ग्वालियर-चंबल गर्म रहता है, जबकि भोपाल, इंदौर और उज्जैन संभाग भी जमकर तपते हैं। जून के आखिरी दिनों में ही टेम्प्रेचर से थोड़ी राहत मिलने लगती है।

इंदौर मेट्रो यात्री संख्या में आई गिरावट

पहले रोज 20 हजार से ज्यादा यात्री कर रहे थे सफर, अब 3 हजार से कम

इंदौर (एजेंसी)। इंदौर में 5.9 किमी के प्रायोरिटी कॉरिडोर पर चल रही मेट्रो ट्रेन में अब यात्रियों की संख्या कम होने लगी है। पहले 20 से 25 हजार यात्री रोजाना सफर कर रहे थे। इस सोमवार 4 हजार 022 यात्रियों ने सफर किया। मंगलवार को 3 हजार 350 ने यात्रा की, तो बुधवार को यह संख्या 3 हजार ही रह गई। मेट्रो प्रबंधन सूत्रों की मानें तो यात्रियों की संख्या कम होने पर अब प्रबंधन हर आधे घंटे में ट्रेन चलाने पर विचार कर रहा है। अभी हर 15 मिनट में चलाई जा रही है। इंदौर मेट्रो रेल कार्पोरेशन के अधिकारियों के अनुसार 31 मई को मेट्रो का उद्घाटन हुआ और 8 जून तक यात्रियों को फ्री सफर कराया गया। इस दौरान 1 जून को 26,803 और 8 जून को 18,087 यात्रियों ने ट्रेन का सफर किया। किराए में छूट के साथ 9 जून से किराया और टिकट अनिवार्य हुआ। इस दिन 4022 यात्रियों ने ही सफर किया। 10 जून का यह संख्या 3350 रह गई और बुधवार को लगभग 3 हजार। कार्पोरेशन के अधिकारियों को वीक एंड पर यात्रियों की संख्या बढ़ने की उम्मीद है।

15 जून तक मिलेगी किराए में छूट- इंदौर मेट्रो में दो स्टेशनों के बीच सफर करने पर 5 रुपए और पांच स्टेशनों तक यात्रा करने पर 8 रुपए का टिकट लग रहा है। 8 से 15 जून तक मेट्रो किराए में 75 प्रतिशत की छूट दी जा रही है। देवी अहिल्याबाई होलकर स्टेशन (गांधी नगर) से मेट्रो में चढ़कर पांचवें स्टेशन वीरांगना झलकारी बाई (टीसीएस) स्टेशन पर उतरने पर यात्री को 8 रुपए किराया देना होगा। यदि यात्री वीरांगना झलकारी बाई स्टेशन से वापस देवी अहिल्याबाई होलकर स्टेशन तक यात्रा करता है, तो उसे फिर से 8 रुपए का टिकट लेना होगा।

नगर निगम के वाहन प्रभारी की सड़क हादसे में मौत

खेत से अपने घर की तरफ आ रहे थे, आयशर गाड़ी ने मारी टक्कर

इंदौर (एजेंसी)। इंदौर के हीरानगर इलाके में रहने वाले नगर निगम के वाहन प्रभारी की सड़क हादसे में मौत हो गई। वे बुधवार शाम अपनी बाइक से खेत से घर की तरफ जा रहे थे। इस दौरान उन्हें एक आयशर गाड़ी ने टक्कर मार दी। उन्हें उपचार के लिए एमवाय भेजा गया। यहां उनकी मौत हो गई। परिजनों ने पुलिस को टक्कर मारने वाली गाड़ी की जानकारी दी है। इसके आधार पर पुलिस अब मामले में जांच कर रही है। एमवाय चौकी पुलिस के मुताबिक घटना इंदौर हातोद रोड की है। राहुल (35) पुत्र पर्वत सिंह निवासी भानगढ़ अपने पुश्तैनी गांव फुलकरदिया पहुंचे थे। शाम को वह यहां से बाइक से भानगढ़ जाने के लिए निकले थे। रास्ते में उन्हें एक आयशर वाहन ने टक्कर मार दी। जिसमें उनकी मौत हो गई। राहुल नगर निगम के 8 नंबर जोन विजयनगर में वाहन प्रभारी के पद पर काम करते हैं।

मुकेश बनकर यूसुफ ने की महिला से दोस्ती, किया रेप

धर्म परिवर्तन के लिए धमकाया, हिंदूवादियों ने पकड़कर पुलिस के हवाले किया

इंदौर (एजेंसी)। शहर के कनाड़िया क्षेत्र में एक युवती के साथ नकली पहचान से दोस्ती कर दुष्कर्म और जबरन धर्म परिवर्तन के दबाव का मामला सामने आया है। आरोपी ने खुद को मुकेश बताकर पहले युवती से नजदीकियां बढ़ाईं, फिर शादी का झांसा देकर शारीरिक संबंध बनाए। आरोपी की असली पहचान यूसुफ खान निकली। बुधवार को हिंदूवादी कार्यकर्ताओं ने आरोपी को रंगे हाथों पकड़ा और जमकर पिटाई कर दी। इसके बाद पुलिस के हवाले कर दिया। कनाड़िया थाना पुलिस ने 25 वर्षीय युवती की शिकायत पर मुकेश उर्फ यूसुफ पुत्र अय्यूब खान निवासी खजराना के खिलाफ भारतीय दंड संहिता की धाराओं 376 (दुष्कर्म), 323 (मारपीट), 506 (धमकी) और धार्मिक स्वतंत्रता अधिनियम के तहत मामला दर्ज कर विवेचना शुरू कर दी है।

ऐसे बढ़ीं नजदीकियां- युवती ने पुलिस को बताया कि वह मूलतः उज्जैन की रहने वाली है और वर्तमान में इंदौर की स्कीम नंबर 78 में एक डॉक्टर के यहां काम करती है। डेढ़ साल पहले वह एक सहेली की बर्थडे पार्टी में राउ स्थित एक ढाबे पर गई थी, जहां उसकी मुलाकात यूसुफ से हुई। उसने अपना नाम मुकेश बताया और फोन नंबर देकर किसी भी मदद के लिए संपर्क करने को कहा। धीरे-धीरे दोनों के बीच बातचीत शुरू हुई। आरोपी युवती को अलग-अलग कारों से इंदौर में घुमाने लगा और मिलने उसके फ्लैट आने-जाने लगा। उसने उसे शादी का प्रस्ताव भी दिया और कहा कि वह नौकरी छोड़ दे, उसका सारा खर्च वही उठाएगा। कुछ समय बाद दोनों के बीच शारीरिक संबंध बन गए।

जब सामने आई सच्चाई

कुछ दिन पहले फ्लैट में शराब पार्टी के दौरान युवती को यूसुफ पर तब शक हुआ, जब उसका एक दोस्त उसे साहिल कहकर बुला रहा था। संदेह होने पर युवती ने उसका पर्स चुपके से देखा, जिसमें यूसुफ खान नाम की आईडी मिली। जब युवती ने उससे जवाब मांगा, तो आरोपी ने खुलासा किया कि वह मुस्लिम है और शादी के लिए युवती को धर्म परिवर्तन करना होगा। इंकार करने पर आरोपी ने मारपीट की और उसके फोटो व वीडियो वायरल करने की धमकी दी।

हिंदूवादियों की मदद से आरोपी पकड़ा गया

घबराई युवती ने इस बात की जानकारी हिंदूवादी संगठन के कार्यकर्ता मानसिंह राजावत और अंकित विश्वकर्मा को दी। इसके बाद दोनों ने युवती के साथ मिलकर आरोपी को फ्लैट से पकड़ा और कनाड़िया पुलिस को सौंप दिया।

संपादकीय

अमेरिका के पाक प्रेम के मायने?

अफगानिस्तान में पिछले तालिबानी शासन की समाप्ति के करीब दो दशक बाद अमेरिका का अचानक जागे पाकिस्तान प्रेम को लेकर कई देशों में हैरानी है तो भारत में इसको लेकर गहरी चिंताएं हैं। दरअसल किसी के सगे नहीं होने वाले अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप बार-बार साबित करने में लगे हैं कि अमेरिका के लिए अपने स्वार्थ के अलावा किसी का कोई महत्व नहीं है। अमेरिका का पाक के प्रति यह प्रेम ऑपरेशन सिंदूर के बाद ट्रंप के भारत विरोधी रवैए, भारत के साथ टैरिफ समझौते को लटकाए रखने और अवैध भारतीय प्रवासियों को जबरन अमेरिका से खदेड़ने की कार्रवाई से साफ हो जाता है। सवाल यह है कि जिस पाकिस्तान ने लादेन को शरण दी थी, वह अचानक अमेरिका के लिए क्यों अहम हो गया? इसका जवाब अब मिलने लगा है। दरअसल अमेरिका ने ईरान पर हमले के लिए इजराइल को हरी झंडी दे दी है। क्योंकि ईरान ने अमेरिका के दबाव में अपना परमाणु कार्यक्रम खत्म करने से साफ इंकार कर दिया है। इस लड़ाई में अमेरिका इजराइल का खुलकर साथ देगा। पाकिस्तान की सीमा ईरान से लगती है, जबकि इजराइल से ईरान काफी दूर है। इजराइल और अमेरिका दोनों का इरादा ईरान के परमाणु ठिकानों पर हमले का है। ऐसे में जो युद्ध होगा, वह भयानक होगा। यह खुले तौर पर अमेरिका की ईरान का समर्थन कर रहे रशिया और चीन को भी चेतावनी है। जिस तरह उसने तालिबान को खत्म करने के लिए पूर्व पाक तानाशाह और राष्ट्रपति मुशर्रफ को अपने पाले में ले लिया था, अब उसी तर्ज पर पाकिस्तान के सेनाध्यक्ष फील्ड मार्शल आसिम मुनीर को भी चारा डाला गया है। इसीलिए उन्हें अमेरिका की आर्मी डे परेड में अतिथि के रूप में बुलाया गया है। अमेरिका जानता है कि पाकिस्तान का असली शासक आसिम मुनीर है न कि शहबाज सरकार। ईरान पर हमले के लिए उसे पाक सेना के समर्थन की जरूरत होगी और पाकिस्तान वह हर हाल में देगा। इसके लिए उसे ईरान को धोखा देने में कोई गुरेज नहीं होगा। यूं पाकिस्तान भले ही इस्लामिक एकता की बात करे, लेकिन वह मुस्लिम देशों को धता बताने में भी कसर नहीं छोड़ता। इजराइल हमला कब करेगा, यह कहना अभी कठिन है, लेकिन अमेरिका ने जिस तरह से अमेरिका ने इराक के बगदाद और एरबिल दूतावासों से अपने अधिकारियों और कर्मचारियों को बाहर निकालना शुरू कर दिया है। उसका साफ संकेत है कि कुछ बड़ा होने वाला है। वैसे भी ईरान अपने प्रॉक्सी आतंकी संगठनों हमास, हूती और हिजबुल्ला को लगातार समर्थन दे रहा है। इजराइल तमाम कोशिशों के बाद भी हमास को खत्म नहीं पर पाया है। उसका मानना है कि इन संगठनों की जड़ें ईरान में हैं। इसीलिए उसी पर वार किया जाए। जबकि ईरान ने भी काफी तैयारी कर रखी है। उसके तबाही मचाने वाले ड्रोन्स और उसकी बैलिस्टिक मिसाइलों की रेंज अमेरिका और इजरायल को परेशान कर रही हैं। ईरान के इराक, सीरिया और लेबनान और यमन में मौजूद प्रॉक्सी भी इजरायल और अमेरिका के लिए प्रत्यक्ष रणनीतिक खतरे हैं। ऐसे में पाकिस्तान, ईरान के खिलाफ अमेरिका को बहुत बड़ी मदद दे सकता है। यही वजह है कि यूनाइटेड स्टेट्स सेंट्रल कमांड कमांडर जनरल माइकल कुरिल्ला ने पाकिस्तान को 'आतंकवाद विरोधी कार्रवाई में पाकिस्तान को एक अभूतपूर्व साझेदार' बताया है। उन्होंने आईएसआईएस-खोरासन के खिलाफ ऑपरेशन में इस्लामाबाद की भूमिका की तारीफ की है। अमेरिकी कांग्रेस की गवाही के दौरान की गई उनकी टिप्पणियों से नई दिल्ली में हलचल मची है। लेकिन ईरान पर हमला इस भारत की इस कोशिश को कमजोर करेगा। साथ ही युद्ध की स्थिति में भारत के लिए किसी भी पक्ष का समर्थन या विरोध करना मुश्किल होगा।

संबंधों के निर्वाह की प्रतिबद्धताओं का अंत

नज़रिया

प्रो. कन्हैया त्रिपाठी

लेखक राष्ट्रपति के विशेष कार्य अधिकारी रह चुके हैं और केंद्रीय विश्वविद्यालय पंजाब में चेयर प्रोफ़ेसर हैं।

देश में इन दिनों इंदौर से मेघालय और मेघालय से उत्तर प्रदेश तक की एक जो गाथा सुर्खियों में हैं उसे देखकर कुछ ऐसा ही प्रतीत होता है। हमारे आदिवासी समाज से लेकर इंदौर के स्वघोषित सभ्य समाज की इन दिनों जो कहानी चर्चा में है उससे पूरा देश स्तब्ध है। स्तब्ध ही नहीं बल्कि भय में है। भय इस बात का है कि क्या अब हमारे समाज के आगे कुआं और पीछे खाई है और हम सब उसके शिकार कभी भी हो सकते हैं। इस बात से भयभीत और स्तब्ध है कि क्या रिश्ते अब इतने कमजोर हो गए हैं? क्या रिश्ते इतने क्रूर हो गए हैं? क्या रिश्ते इतने खूनी बनते जा रहे हैं? क्या संवेदनाएं समाप्त होने लगी हैं हमारे समाज की और समाज में रहने वाली हमारी पीढ़ी और नई पीढ़ी की? मनोवैज्ञानिक विश्लेषकों के लिए इस समाज का मनोवैज्ञानिक अध्ययन भी अब कठिन होता जा रहा है।

सामाजिक बदलाव जितनी तेजी से हो रहे हैं, समाज के लिए प्रतिदिन नई चुनौतियाँ भी उतनी ही तेजी से उभरकर अब सामने आने लगी हैं। इन चुनौतियों के लिए अब समाज बिल्कुल तैयार नहीं है क्योंकि वह आगे भी बढ़ने के लिए बेफिक्री से कोशिश में है और यह भी चाहता है कि सब कुछ उसके मुताबिक होता रहे। लेकिन सबकुछ समाज की अपनी मनमानी से भी तो नहीं चल सकता। ऐसे में उसे परिवार, रिश्ते, नाते व अन्य संबंधों के बीच बनती विभिन्न दुश्वारियों से गुजरना ही पड़ेगा और इसे अब उसकी नियति माननी पड़ेगी।

देश में इन दिनों इंदौर से मेघालय और मेघालय से उत्तर प्रदेश तक की एक जो गाथा सुर्खियों में हैं उसे देखकर कुछ ऐसा ही प्रतीत होता है। हमारे आदिवासी समाज से लेकर इंदौर के स्वघोषित सभ्य समाज की इन दिनों जो कहानी चर्चा में है उससे पूरा देश स्तब्ध है। स्तब्ध ही नहीं बल्कि भय में है। भय इस बात का है कि क्या अब हमारे समाज के आगे कुआं और पीछे खाई है और हम सब उसके शिकार कभी भी हो सकते हैं। इस बात से भयभीत और स्तब्ध है कि क्या रिश्ते अब इतने कमजोर हो गए हैं? क्या रिश्ते इतने क्रूर हो गए हैं? क्या रिश्ते इतने खूनी बनते जा रहे हैं? क्या संवेदनाएं समाप्त होने लगी हैं हमारे समाज की और समाज में रहने वाली हमारी पीढ़ी और नई पीढ़ी की? मनोवैज्ञानिक विश्लेषकों के लिए इस समाज का मनोवैज्ञानिक अध्ययन भी अब कठिन होता जा रहा है।

क्रिमिनल माइंडसेट की न्यू जेनरेशन का इस प्रकार से उदय हो रहा है कि ऐसी कई भयावह स्थतियों का सामना अब समाज को करना पड़ेगा, ऐसा लगता है।

यदि हम पिछले 10 वर्ष के ही समय-काल को पढ़ें, समझें और विश्लेषण करें तो ऐसा लगता है कि नज़रिए में आने वाले बदलाव को अब रोका नहीं जा सकेगा क्योंकि अब की पीढ़ी बहुत तेजी से मानसिक रूप से विचित्र फैसले ले रही है और वह बहुत ज़ल्दी में है। वह बहुत ही सामान्य व्यवहार करने की आदी नहीं है अपितु उसे अपने मन का बिल्कुल ख़ास तरह की पसंद का समय, समाज व सुविधाएं चाहिए। यह बदलाव खतरनाक है और इससे अब भारतीय समाज जूझने के लिए तैयार रहे। बेफिक्री का समाज केवल अपने इंडीविजुअल आइडेंटिटी के लिए जीता है और अब की पीढ़ी ने इसे अब जताना शुरू नहीं किया है अपितु सच्चे मायने में एहसास कराना शुरू कर दिया है।

पहले का समाज भले बंद समाज कहा जाए लेकिन वह जिस हिसाब से अपनी सामाजिकी को गढ़ रहा था, उसमें शर्म, लाज, हया और बड़ों के प्रति आदरभाव थे। वह कुछ भी करने से पहले डरता था। परिवार के बुजुर्गों की भी तो बहुत इज्जत थी। परिवार में सभी की फिक्र हुआ करती थी। अब एकल परिवार का जब से ढांचा सामने आया है, बहुत अजीब सा बदलाव हुआ है। जो परिवार संयुक्त हैं, उसमें भी बहुत चालाकियां हैं। परिवार के संयुक्त स्वरूप में इंडिविजुअल सोच व अपना-पराया करने की होड़ मची है जिससे परिवार का स्वरूप ही चेंज हो गया है। जब बड़े लोग और हम उम्र लोग एक दूसरे की क़द्र करने में पचासों बार सोच रहे हैं तो बच्चे अपने बड़े से कैसे डरेंगे, कैसे उनके बारे में शर्म व इज्जत के साथ जीने के आदि बनेंगे।

विवाह भारत की एक व्यवस्थित संस्था है। इस संस्था के अपने मूल्य हैं। विवाह के बाद स्त्री व पुरुष के संबंध बहुत ही पवित्र बंधन में बंध जाते हैं। एक-दूसरे के हित व अहित के बारे में चिंताएं विवाहित लोग करते हैं। अपनी नई संतति की कामना करते हैं और अपने जीवन के उत्सर्ग को समाज के लिए आइना बनाते हैं। आधुनिकता ने इन सबको खंडित कर दिया। आधुनिकता ने संबंधों को बहुत कमजोर कर दिया। विवाहोपरांत संबंध अब इस बात पर निर्भर होने लगे हैं कि विवाह पूर्व के संबंध किस प्रकार के अविवाहितों ने जिया है। अविवाहितों के लिए लीव-इन-रिलेशनशिप एक ऐसा पड़ाव बन गया है जो विवाहोपरांत हमारे समाज में लोग जीते थे। अब शादी से पूर्व यह सब जीती पीढ़ी के लिए फिर विवाह की मर्यादा क्या है, इसका क्या भान होगा। इसीलिए तो हिंसक व क्रूर पीढ़ी बहुत तेजी से अपने वास्तविक चेहरे उजागर करने लगी हैं और परिवार रूपी संस्था को चोटिल करने के लिए कुछ भी सोचती-विचारती नहीं।

हाल ही में मीडिया की सुर्ख़ियों में रही इस प्रकार की ख़बरें अब सामाजिक संबंधों को पुनर्परिभाषित कर रही हैं और कई ऐसे प्रश्न हमारे बीच छोड़ रही हैं, जिसका उत्तर फिलहाल कोई भी देने की स्थिति में नहीं हैं। विवाहोपरांत अपने पति की हत्या का मामला जो प्रकाश में आया है चाहे वह मेरठ का हो या इंदौर का, इसमें कुछ इसी प्रकार के प्रश्न हैं। कुछ ज्यादा संवेदनशील प्रश्न हैं। भारतीय सभ्यता के लिए यह एक कठिन प्रश्न हैं। इनके ऊपर बाबाओं के प्रवचन का न असर है और न ही परिवार के लोकलाज का असर है। ये अपनी धुन के पक्के लोग कुछ अपने तरह का शहर, अपनी तरह की दुनिया और अपने तरह के मिज़ाज के साथ जीकर अपने तरह का समय अंकित करने पर तुले हैं। यद्यपि भारतीय दंड संहिता व संविधान का दबाव इन पर है लेकिन आगे जो भी होगा, हम देख लेंगे, यह बेफिक्री वाली पीढ़ी कुछ भी करने से डर नहीं रही है। हत्या व हिंसा इनके लिए बहुत ही आम बात है। सबसे अहम् बात यह है कि ये लोग समाज को गुमराह करने के लिए अच्छे खासे षड्यंत्र रचने व उसे अंजाम देने में माहिर हैं।

टेक्नोलॉजी ने इन षड्यंत्रकारियों को ज्यादा परेशां किया है। षड्यंत्रकारियों की मोबाइल, उनके साइबर षड्यंत्र अपराध को पकड़ ले रहे हैं। यदि यह टेक्नोलॉजी न होती तो संभव था कि षड्यंत्र के बाद अपने मंसूबे में ये लोग कामयाब होते। हो सकता है आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस आने के बाद ऐसे षड्यंत्रकारी व अपराधियों को पकड़ने में ज्यादा सहूलियत मिले लेकिन मोबाईल ने निःसंदेह इन्हें अपराध करने के बाद कारगर तक पहुँचाया है। यदि मोबाईल न होती और सोशल मीडिया के पोस्ट न होते तो मेघालय के वेईसावडॉन्ग वॉटरफॉल के पास एक गहरी खाई में पड़े हुए अचेत, मृत या सड़े-गले व्यक्ति के बारे में पता लगाना मुश्किल हो जाता। भारतीय पुलिस को सबसे ज्यादा इसलिए टेक्नोलॉजी ने सहयोग किया है, यह बात माननी पड़ेगी। यदि इस टेक्नोलॉजी की कोई काट इस पीढ़ी की अपराधी व षड्यंत्रकारी युवा आबादी को मिल जाएगी, तो सोचिये ये लोग क्या से क्या कर देंगे और किसी को पता भी नहीं चलेगा।

सामाजिक बदलाव की यह दुरूहताएं नींदें उड़ा दी हैं। इस तरह की घटनाओं ने समाज में भय पैदा किया है। सोशल मीडिया पर ऐसे बहुत से पोस्ट लिखे जा रहे हैं कि शादी से पूर्व रिलेशनशिप के बारे में अब परिवारों व शादी के लिए तैयार हो रहे परिवारों को बात करनी होगी, वरना ऐसी घटनाओं के लिए हम निमंत्रण दे बैठेंगे। पुराने सामाजिक सोच का समाज स्वीकार नहीं है और नए समाज की यह हिंसक सभ्यता हमें जीने नहीं देगी। ऐसे में, यह अब भारत में लोग सोचने-विचारने को मजबूर हो रहे हैं, कि हम कैसे समाज में एक सहिष्णु विश्वासु समाज का निर्माण करें जिसमें हिंसा न हो बल्कि संबंधों के निर्वाह की प्रतिबद्धताएं हों। संबंधों के निर्वाह की प्रतिबद्धताओं का अंत किसी भी दशा में भारतीय सभ्यता के लिए तो ठीक नहीं है।

दलित राजनीति की नई उम्मीद होंगे चंद्रशेखर

राजनीति

डॉ. संजीव कुमार

लेखक सामाजिक व राजनीतिक विशेषज्ञ हैं।

ग्वालियर में भीम आर्मी और चंद्रशेखर आज़ाद का जनशैलाब पूरा देश और दुनिया देख रही है। ग्वालियर हाई कोर्ट में कुछ संकुचित मानसिकता के लोगों की वजह से बाबा साहब भीमराव अंबेडकर की प्रतिमा स्थापित नहीं हो पाई थी। यह बात भीम आर्मी और आजाद समाज पार्टी भला कैसे बर्दाश्त कर सकती थी। आज देश में अगर कहीं भी बाबा साहब की प्रतिमा को कोई किसी भी तरह का नुकसान पहुंचाता है तो इसकी सूचना सबसे पहले चंद्रशेखर आजाद को प्राप्त होती है, आज उनका नेटवर्क कितना बड़ा हो चुका है इसी बात से अंदाजा लगाया जा सकता है। चंद्रशेखर के तेवर में, शब्दों में वही आग है जो बाबा साहब के तेवर गोलमेज सम्मेलन और उनके भाषणों में है। बहुत वर्षों से दलित समाज को ऐसे ही नेता की प्रतीक्षा थी।

विगत एक दशक से भी ज्यादा समय से उत्तर प्रदेश में बसपा सुप्रीमो मायावती की राजनीतिक पार्टी के नैपथ्य में जाने से से दलितों की राजनीति लगातार शून्य होती जा रही थी। देश की दलित राजनीति जैसे अनाथ हो चुकी थी और सभी राजनीतिक पार्टियां इस वोट को भुनाने के लिए अंबेडकर को अपना नायक घोषित करने में लगी हुई थी भले ही उनके राजनीतिक चरित्र में अंबेडकर कहीं फिट न होते हो। देशभर में दलितों पर हमले और अपमान का सिलसिला बढ़ता ही जा रहा था और ऐसी स्थिति में 21 जुलाई 2015 में चंद्रशेखर आजाद और विनय रतन सिंह के भीम आर्मी का उदय होता है। इस आर्मी को खड़ा करने का मुख्य उद्देश्य दलितों एवं शोषितों के अधिकारों की रक्षा करना था सहारनपुर से प्रारंभ इस आर्मी के विचारक चंद्रशेखर को तब शायद ही यह विचार आया होगा कि वह कभी राजनीति में भी आएंगे क्योंकि उन्हें पूरा उम्मीद था कि उनकी आर्मी को बहुजन समाज पार्टी सहित अनेक ऐसी राजनीतिक पार्टियां जो दलितों के हितों की बात करती हैं उनके साहस का सम्मान करेंगी और उनके आर्मी को संरक्षण प्रदान करेंगे,लेकिन हुआ इसका विपरीत उलटे इन्हें अपने ही वैचारिक पार्टियों का तिरस्कार झेलना पड़ा। भारतीय जनता पार्टी जो आज देश में सत्ता पर बैठी हुई है तो इसमें सिर्फ उस पार्टी का ही योगदान नहीं है इसके पीछे उनके घटक संगठनो का भी बहुत बड़ा योगदान है। जिम राष्ट्रीय सेवा संघ, बजरंग दल, विश्व हिंदू परिषद, अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद जैसी अनेक सामाजिक एवं सांस्कृतिक प्रणाली भी शामिल है। इन्हीं सब के जवाब में चंद्रशेखर ने भीम आर्मी जैसी संगठन का गठन किया है। यह संगठन उन गरीबों, मजदूरों,बेरोजगारों शोषितों का है जो हर घड़ी अपने जीवन में कहीं ना कहीं घूट रहे थे लेकिन आज उन्हें चंद्रशेखर आजाद में अपना गॉडफादर दिखता है।

20 मार्च 2018 को जब सुप्रीम कोर्ट ने अनुसूचित जाति जनजाति अत्याचार निवारण कानून में तत्काल गिरफ्तारी पर रोक लगाने का मसौदा बना रही थी तब भीम आर्मी ने 2 अप्रैल 2018 को भारत बंद की घोषणा की और देश भर में इस कानून के खिलाफ मोर्चा निकाला और चंद्रशेखर की अगुवाई में यह आंदोलन सफल रहा। अन्य राजनीतिक और सामाजिक संस्थाओं ने भी इस आंदोलन को अपनी ताकत दी परंतु चंद्रशेखर के भीम आर्मी ने देश भर के दलितों को जोड़ने का बहुत बड़ा काम किया था। उसके बाद चंद्रशेखर की छवि देशभर में दलित समाज और दलितों के लिए एक गॉडफादर के रूप में देखने को मिलती हैं। जहां-जहां दलितों पर अत्याचार होते हैं चंद्रशेखर वहां पहुंचने का पूरा प्रयास करते हैं और पीड़ित परिवार के साथ सड़क पर उतरकर न्याय की मांग करते नज़र आते हैं। दूसरी तरफ अन्य राजनीतिक पार्टियां जो दलित एवं अंबेडकरवादी राजनीति की वजह से सत्ता में मलाई खा रहे थे या फिर राजनीतिक ताकत में थे वह सिर्फ मूक बनकर तमाशा देख रहे थे, मायावती की बहुजन समाज पार्टी भी उनमें से एक थी। जबकि ऐसी स्थिति में बसपा की जिम्मेदारी और भी बढ़ जाती थी दलित समाज उनकी तरफ आशा से देख रही थी परंतु उनके हाथ सिर्फ निराशा ही लग रही थी। बसपाई नेता सड़क पर उतरने के लिए तैयार नहीं थे, पीड़ितों के घर जाने के लिए उनके पास वक्त नहीं था।

इतिहास में जब भी दलित राजनीति की बात उठेगी मायावती का नाम उनमें आदर से लिया जाएगा लेकिन एक सवाल उनके साथ यह भी रहेगा कि बगैर सत्ता के वह कितनी ताकतवर रही है? भारत में दलितों की समस्याएं कोई स्थायी समस्या नहीं है और पिछले एक दशक से या कह सकते हैं बीजेपी के शासन में आने से इन पर हमले और भी बढ़ते गए हैं ऐसी स्थिति में मायावती की भूमिका और भी बड़ी हो गई थी क्योंकि भारत में बहुजन समाज पार्टी ही एकमात्र राष्ट्रीय पार्टी है लेकिन आज तक इन्होंने प्रधानमंत्री मोदी, प्रशासन और भारतीय जनता पार्टी से कभी भी तीखे सवाल नहीं किए बल्कि दलितों की राजनीति को ही पलटने का कार्य किया है। पूरा देश खुली आंखों से देख रहा था की यह सब बीजेपी और मोदी की सह में हो रहा हैं लेकिन वे तब भी बीजेपी के खिलाफ खुलकर मैदान में कभी नहीं आई। समाजवादी पार्टी और कांग्रेस के साथ बहुजन समाज पार्टी के और दलितों के संबंध बहुत अच्छे नहीं रहे हैं यह सब हम जानते हैं परंतु आज भी मायावती इन पार्टियों को ही कोसती रहती हैं जबकि इनके साथ गठबंधन में इन्हें हमेशा ही फायदा मिलता रहा है। मायावती की राजनीतिक चूक की ही बदौलत यह संभव हुआ हैं कि प्रधानमंत्री मोदी दूसरी और तीसरी बार सत्ता में वापसी कर सके है, जिसका सबसे बड़ा खामियाजा दलितों को उठाना पड़ रहा है। आज दलितों के ऊपर बीजेपी के लोग पेशाब कर रहे हैं, उनकी स्त्रियों को नंगा करके पीटा जा रहा है, दूल्हे को घोड़े से उतारा जा रहा है, पढ़े लिखे दलित युवक बेरोजगार घूम रहे हैं और मायावती आज भी राहुल गांधी और अखिलेश से सवाल कर रही है मोदी से सवाल करने की इनमे हिम्मत नहीं हो रही।

हाल ही में मायावती ने अपने ट्वीट और साक्षात्कार में चंद्रशेखर को अप्रत्यक्ष तौर पर बरसाती मेंढक कहकर अपनी ही विशाल छवि को तोड़ने का कार्य कर रही है। जबकि चंद्रशेखर ने कभी भी प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से उनका अपमान करने का साहस नहीं किया है। आखिर मायावती चंद्रशेखर से इतनी बौखलाई हुई क्यों है? क्योंकि वह समझ चुकी है कि दलित समाज लगातार उनसे छिटकता जा रहा है, वह यह भी समझ रही है कि आज चंद्रशेखर का कद उनसे बड़ा हो रहा है और वह अपनी महत्वाकांक्षा छवि को टूटते हुए नहीं देख पा रही हैं। लेकिन वह यह भूल जाती है कि वें जिस पार्टी की अगुवा है वह पार्टी एक ऐसे महापुरुष की देन है जिसने बड़ी तपस्या से इसको सींचा है। लेकिन वे आज भी सड़क पर उतरने को तैयार नहीं है।उनका कहना है की इससे कोई क्रांति नहीं होने वाली।पर वे यह भूल जाति है की फूले, पेरियार, रविदास, घासीदास और आंबेडकर ने सड़कों पर उतरकर ही दलितों पिछड़ों को जगाने का कार्य किया है। इसलिए अगर मायावती अपनी छवि को बरकरार रखना चाहती हैं तो उन्हें अपने एयर कंडीशनर रूम से बाहर निकलकर अपने सहयोगियों और साथियों के साथ सड़क पर आना होगा, गलियों की धूल फाँकनी होगी सत्ता से टकराना होगा। जिस भी दलित और शोषित का अपमान सत्ता और ब्राह्मणवादी लोग कर रहे हैं उनके साथ चंद्रशेखर की तरह आधी रात को खड़ा होना होगा और मुझे नहीं लगता कि वे यह सब कर सकती है। आज की राजनीति और खास तौर पर दलितों की राजनीति की मांग यही है कि हमें एक ऐसा नेता चाहिए जो सत्ता के बगैर भी दलितों की रक्षा करना जानता हो क्योंकि सत्ता तो आती जाती रहेगी लेकिन एक बार स्वाभिमान चला गया तो उसे वापिस लाना मुश्किल हो जाता है।

गोपनीय बैठक में नेताजी की नई योजना

कटाक्ष

डॉ. महेन्द्र अग्रवाल

लेखक व्यंग्यकार हैं।

पार्टी की अत्यंत गोपनीय बैठक में नेताजी अपनी एक नई योजना पर अड़े थे कि दूसरे संगठनों की मजबूती को देखते हुए अब पार्टी को नए कुत्ते पालकर उन्हें पूर्ण प्रशिक्षित करना चाहिये ताकि अलग-अलग मोहल्लों में हो रही पार्टी विरोधी गतिविधियों का मुंहतोड़ जवाब देते हुए संगठन को नए सिरे से खड़ा किया जा सके। उन्होंने बैठक में स्पष्ट शब्दों में कहा कि यदि समय रहते इन गतिविधियों पर नियंत्रण नहीं किया गया तो इसके गंभीर परिणाम होंगे और यह स्थिति पार्टी के लिए सुखद तो बिल्कुल नहीं होगी।

जैसे ही उन्होंने अपनी बात समाप्त की मीटिंग में उपस्थित वरिष्ठ नेताओं में इस पर विचार होने लगा कि कुत्तों के चयन का आधार क्या हो? मसलन किस ब्रीड के लिये जायें ? किस रंग के लिये जायें? उनका यूनीफार्म क्या हो? उनका कार्य क्षेत्र कैसे निर्धारित हो और उनकी सीमायें क्या हों? कहीं ऐसा न हो कि वह आपस में ही लड़ने लगें और गली-गली में पार्टी का नाम खराब होने से पार्टी को शर्मिंदगी उठानी पड़े।फिर इस बात पर भी विस्तृत चर्चा हुई कि इन्हें कहां प्रशिक्षण देना है? किसके द्वारा प्रशिक्षित करवाना है।प्रशिक्षण शिविर कितने दिन का रखना है? और उसमें प्रशिक्षण किस स्तर का दिया जाना चाहिये।

सभा में एक वरिष्ठ मगर इन दिनों उपेक्षित चल रहे सदस्य ने प्रश्न किया कि कुत्ते केवल भौंकने वाले ही होंगे या काटने वाले भी होंगे। चयन के लिए कुत्तों में कुतत्व का मानदंड क्या रहेगा? प्रशिक्षण में भोजन व्यवस्था क्या रहेगी? इसका खर्च कहां से आयेगा? कौन से घराने से किन शर्तों पर लिया जायेगा? उनको हिम्मत करता देख एक अन्य असंतुष्ट भी चुप न रह सका।उसने जिज्ञासा प्रकट की-प्रशिक्षण शिविर गोपनीय रहेगा या सार्वजनिक ,मतलब प्रेस के लोगों को आने दिया जायेगा या उनके लिए प्रतिबंधित रहेगा या फिर पत्रकारों को शिविर के बाद ब्रीफ किया जायेगा ?

मौक़ा देख पिछली बार हारे प्रत्याशी ने भी पूछ लिया-क्या ज़रूरी है कि प्रशिक्षण के बाद भी कुत्ते पार्टी के प्रति वफादार रहेंगे और हर चुनाव में पार्टी केंडीडेट के लिए ईमानदारी से काम करेंगें ?इसका जवाब पार्टी के प्रदेश प्रभारी ने दिया-जब कुत्ते को अपने साथ धर्मराज युधिष्ठर की तरह रखोगे और स्वर्गारोहण कराओगे तो वो तुम्हारा साथ क्यों नहीं देगा? लेकिन ऐसा भी नहीं होगा कि तुम उसके पिछवाड़े लात मारो और वो तुम्हारे पांवों को सूंघता चाटता रहेगा।इस बात पर बड़ी देर तक तालियां बजती रहीं।

ऐसे अनुकूल माहौल में अपने लिए अवसर देख एक छोटे नेता ने हिम्मत की कि पार्टी को बहादुर कुत्तों की जरूरत है जो सामने से भौंके, न कि पीठ पीछे से। इस पर एक नेता ने बिना सोचे समझे कहा कि कुत्ते पालने से जनता अपने और हमारे बीच का फर्क समझेगी। जानवरों को कैसे पालतू बनाया जाता है ये उसकी एक मिसाल होगा।

बैठक में कई बार वाद विवाद की स्थिति भी बनी मगर वरिष्ठ सदस्यों ने हस्तक्षेप कर हर बार संभाल लिया।लेकिन तीन घंटे की मैराथन बैठक के बाद भी सर्व सम्मति न होने से निर्णय लिया गया कि अभी पार्टी के पास फंड की कमी है।पार्टी चलाने में ही बड़ी मुश्किलों का सामना करना पड़ रहा है इसलिए फंड की व्यवस्था होने के बाद ही ऐसे किसी शिविर का आयोजन किया जाये।

सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए उमेश त्रिवेदी द्वारा श्री सिद्धीविनायक प्रिंटर्स, प्लॉट नं. 26-बी, देशबंधु परिसर, प्रेस कॉम्पलेक्स, जोन-1, एम.पी.नगर, भोपाल, म.प्र. से मुद्रित एवं 662, साई कृपा कॉलोनी, बॉम्बे हॉस्पिटल के सामने, इंदौर से प्रकाशित।
प्रधान संपादक
उमेश त्रिवेदी
कार्यकारी प्रधान संपादक
अजय बोकिल
संपादक (मध्यप्रदेश)
विनोद तिवारी
स्थानीय संपादक
हेमंत पाल
प्रबंध संपादक
रमेश रंजन त्रिपाठी
(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र इंदौर रहेगा)
RNI No. MPHIN/ 2015/ 66040,
Mobile No.: 09893032101
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

भीड़ और भाड़ दो कोने हैं और बीच में है भगदड़

व्यंग्य

डॉ. अतुल चतुर्वेदी

लेखक व्यंग्यकार हैं।

भीड़ और भाड़ में ज़्यादा फ़ासला नहीं है। भीड़ से जैसे ही मतलब निकल जाता है , स्वार्थ सध जाता है उसके भाड़ में तब्दील होते देर नहीं लगती। भीड़ मनोरथ है तो भाड़ अंतिम पड़ाव। भीड़ साधना है तो भाड़ मोक्ष। भीड़ का इकट्ठा होना सहज नहीं है। भीड़ को अथक प्रयासों से जुटाना होता है। कैची नारे देने पड़ते हैं , झूठे लेकिन लोक लुभावन वादे करने पड़ते हैं। भीड़ के लिए नकद नारायण की व्यवस्था करनी पड़ती है। लंच पैकेट बांटने पड़ते हैं तब जाकर नाना उपक्रमों से कहीं जा कर भीड़ जुट पाती है। कहते हैं भीड़ का कोई स्वरूप नहीं होता वो निराकार और निर्गुण है। वो दिखती बाद में उमड़ती पहले है। भीड़ टूट पहले पड़ती है , संभलती मुश्किल से है। कभी वो निर्दोष की लिंचिंग कर देती है तो कभी मंत्र मुग्ध सी ताली , थाली बजाने लगती है।

भीड़ का कोई धर्म, ईमान नहीं होता। समझदार लोग कहते हैं भीड़ का कोई चरित्र नहीं होता। तो भाई साहब आजकल चरित्र किस का है भला नव विवाहिताएं हनीमून पर अपने मून को निपटा रही हैं तो उधर फ्रिज में टुकड़े कर के प्रेमी अपनी प्रेमिका के रख रहे हैं। चरित्र तो यूरेनियम सा दुर्लभ है और जिस पर वास्तविक चरित्र है उसका ताप सहना औसत दुश्चरित्रों के वश की बात नहीं। चरित्र का जितना भारी संकट राजनीति में है उससे कहीं ज़्यादा आम आदमी के भीतर भी है। आँख बचा के रेड लाइट क्रॉस कर जाना सड़क पर और लाइन तोड़ कर सुविधा पाना हमारे चरित्र का चल चित्र है।भीड़ का क्या है उसकी कोई जाति या गोत्र तो है नहीं। हाँ धर्म , जाति और संप्रदाय के नाम पर भीड़ गोलबंद जरूर की जाती रही है। कई तरह की भीड़ मिलती है देश में। सिरफिरों की भीड़ जो न देखने में यकीन रखती है न समझने में। इसे तो बस छू लगाने की देर होती है। या यूँ कहें फूंक मारने की आवश्यकता होती है। असल में यह भीड़ नहीं शंख होती है जिसको फूंकते ही यह किसी की भी दुकान या मकान फूंकने को तैयार हो जाती है।

भीड़ जुटाना भी कोई आसान काम नहीं है जहाँ रैली में भीड़ जुटायी जाती है वही धार्मिक उत्सवों में या समारोहों में भीड़ स्वतः जुट जाती है। जबकि साहित्यिक समारोह में भीड़ जुटाने के लिए आयोजकों के पसीने छूट जाते हैं। कार्ड में नीचे बोल्ड फॉंट में छपवाना पड़ता है - आयोजन पश्चात् सह भोज की भी व्यवस्था है। दुनिया में भोजन की डिप्लोमेसी सबसे बड़ी कूटनीति है। इधर लजीज व्यंजनों का स्वाद, भारी मनुहार के साथ चखाया जाता है उधर टैरिफ बढ़ाने पर मंजूरी ले ली जाती है धीरे से। मेहमान बेचारा मालिक मैंने आपका नमक खाया है कि शैली में घटिया हथियार ख़रीद पर दस्तख़त कर देता है।राजनीतिक पार्टियों में तो भीड़ जुटाऊ नेता भी होते हैं। उनकी चुनाव के दिनों में भारी माँग होती है।

कुछ नेता भीड़ खींचू तो कुछ भीड़ पकाऊ होते हैं। वे भीड़ देखकर अपने लंबे, उबाऊ भाषणों से पकाने लगते हैं। माइक पकड़कर लटक जाते हैं लेकिन जैसा कि पूर्व में बताया गया कि भीड़ का कोई चरित्र नहीं होता , वो हूटिंग शुरू कर देती है या ताली बजाने लगती है। मंचीय कवियों को हूटिंग का डरावना स्वप्न रात को ढंग से सोने भी नहीं देता। वे उठ उठ बैठते हैं और गला खकार कर तरन्नुम में काव्य पाठ शुरू कर देते हैं। हूटिंग होने से कविता के बाज़ार का सेंसेक्स गिरता है कवि वीरगति को प्राप्त हो सकता है।

इसलिए कई बार शायर भीड़ को ज़ालिम , बेवफ़ा सनम आदि संज्ञाओं से भी संबोधित करते हैं। कुछ होशियार कवि और संयोजक हर शहर की जनता को संस्कारित और शालीन बता कर जान बचाते है और अपना करियर भी। अब भीड़ होगी तो भगदड़ भी स्वाभाविक है। भगदड़ भीड़ का विस्तार है। दोनों में कारण और कार्य का संबंध है। वो भीड़ ही क्या जुटी जब तक भगदड़ नहीं मचे। और भगदड़ होगी तो लोगों का मरना भी संभव है। लोग मरते हैं तो मुआवजा और जांच आयोग जैसी मांगें भी उठती है। एक स्वस्थ लोकतंत्र में यह सब अनिवार्य प्रक्रिया है। भीड़ मुआवज़ा पाकर शान्त हो जाती है।

भीड़ जुटाने वाले उन मुद्दों को भाड़ में डालकर अगली भीड़ के लक्ष्य को प्राप्त करने की ओर प्रस्थान कर देते हैं। ऐसा लगता है भीड़ और भाड़ दो कोने हैं और बीच में भगदड़ है और भगदड़ देखते ही भेड़िए आ जाते हैं वे मुद्दों की ताज़ा गंध के घाघ शिकारी हैं। उनको तुम्हारे आंसुओं की पुकार से और बेबसी से कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता। फिर कहीं कल किसी विराट स्वरूप के दर्शनार्थ भीड़ जुटेगी फिर भोले जन मारे जायेंगे। राहत के छींटों से उनका तर्पण कर दिया जाएगा।

स्मृति शेष

कुमार सिद्धार्थ

लेखक स्वतंत्र पत्रकार हैं।

गोडावण वाले राधेश्याम विश्नोई थे थार में जीवन का प्रहरी

राधेश्याम विश्नोई—जिनके व्यक्तित्व में सादगी, संकल्प और संवेदना की त्रिवेणी थी। वे न केवल जैसलमेर के गोडावण संरक्षण अभियान के नायक थे, बल्कि अपने व्यवहार, सोच और कार्यप्रणाली से एक प्रेरणास्रोत बन चुके थे। विश्नोई परंपरा की गोद में पले-बढ़े राधेश्याम ने अपनी युवा ऊर्जा को आधुनिक विज्ञान और परंपरागत लोक-ज्ञान के मेल से जोड़ा। उन्होंने यह कभी नहीं चाहा कि लोग उन्हें किसी नेता, पर्यावरणविद या नायक के रूप में देखें—वे खुद को बस गांव का एक साधारण युवक मानते रहे। राधेश्याम जैसलमेर के एक छोटे से गांव से ताल्लुक रखते थे, पर उनका हृदय समूचे थार के लिए धड़कता था। वे विश्नोई समुदाय की उस परंपरा के जीवंत प्रतीक थे, जो सैकड़ों वर्षों से वन्यजीव और प्रकृति की रक्षा को धर्म मानती आई है। उन्होंने न केवल गोडावण को बचाने के लिए अपने जीवन की दिशा तय की, बल्कि रेगिस्तान में जैव विविधता के संरक्षण को लेकर एक सामाजिक आंदोलन की नींव भी रखी।

यदि आप जैसलमेर की किसी भी गली में यह पूछें कि क्या किसी ने गोडावण देखा है, तो जवाब में राधेश्याम विश्नोई का नाम अवश्य सुनने को मिलेगा। गोडावण, यानी ग्रेट इंडियन बस्टर्ड—वह दुर्लभ पक्षी जो कभी भारत के कई हिस्सों में खुले मैदानों और घास के मैदानों में विचरता था—आज विलुप्ति के कगार पर है। लेकिन इस संकटग्रस्त प्रजाति को बचाने के लिए जिस युवा ने अपने जीवन को समर्पित कर दिया, वह थे राधेश्याम विश्नोई।

राधेश्याम विश्नोई—जिनके व्यक्तित्व में सादगी, संकल्प और संवेदना की त्रिवेणी थी। वे न केवल जैसलमेर के गोडावण संरक्षण अभियान के नायक थे, बल्कि अपने व्यवहार, सोच और कार्यप्रणाली से एक प्रेरणास्रोत बन चुके थे। विश्नोई परंपरा की गोद में पले-बढ़े राधेश्याम ने अपनी युवा ऊर्जा को आधुनिक विज्ञान और परंपरागत लोक-ज्ञान के मेल से जोड़ा। उन्होंने यह कभी नहीं चाहा कि लोग उन्हें किसी नेता, पर्यावरणविद या नायक के रूप में देखें—वे खुद को बस 'गांव का एक साधारण युवक' मानते रहे।

राधेश्याम जैसलमेर के एक छोटे से गांव से ताल्लुक रखते थे, पर उनका हृदय समूचे थार के लिए धड़कता था। वे विश्नोई समुदाय की उस परंपरा के जीवंत प्रतीक थे, जो सैकड़ों वर्षों से वन्यजीव और प्रकृति की रक्षा को धर्म मानती आई है। उन्होंने न केवल गोडावण को बचाने के लिए अपने जीवन की दिशा तय की, बल्कि रेगिस्तान में जैव विविधता के संरक्षण को लेकर एक सामाजिक आंदोलन की नींव भी रखी।

1996 में जन्मे राधेश्याम (Radhe) पेमानी विश्नोई का संबंध थार के जुनून से जगमगाता जैसलमेर क्षेत्र के ढोलिया गांव से था। राधेश्याम बचपन से ही पक्षियों और वन्यजीवों के बीच पले-बढ़े। किशोरावस्था में उन्होंने गोडावण के घटते अस्तित्व को देखा और भीतर ही भीतर यह प्रण लिया कि वे इस पक्षी को विलुप्त नहीं होने देंगे। 2010 के बाद, जब गोडावण की संख्या 100 से भी नीचे जा पहुंची, तब राधेश्याम ने स्थानीय समुदायों, चरवाहों और स्कूलों के साथ मिलकर जनजागरण अभियान चलाया। वे बच्चों से विशेष लगाव रखते थे। अक्सर गांव के स्कूलों में जाकर बच्चों को गोडावण की कहानियां सुनाते, चित्र बनवाते और छोटी-छोटी गतिविधियों से उनमें प्रकृति के प्रति प्रेम जगाते। उनका मानना था कि संरक्षण की असली शुरुआत बच्चों के मन से होती है।

राधेश्याम की सबसे बड़ी ताकत थी—उनका सामुदायिक संवाद। वे जानते थे कि संरक्षण सिर्फ कानून से नहीं, समुदाय की भावना से सफल होता है। उन्होंने यह सुनिश्चित किया कि किसान अपने खेतों में दवाइयों का प्रयोग सोच-समझकर करें, ताकि गोडावण के अंडों और भोजन को नुकसान न पहुँचे।

उन्होंने गश्ती दल बनाए, जिनमें स्थानीय युवक शामिल थे, जो अंडों की निगरानी करते, अवैध शिकार रोकते और हर गोडावण की गतिविधि दर्ज करते।

राधेश्याम में गजब की धैर्यशीलता थी। जब सरकारी योजनाएं विलंब से चलतीं, जब स्थानीय लोग उदासीन होते या जब कोई शिकारी पकड़ा न जाता—तब भी वे निराश नहीं होते। उनका कहना था, 'गोडावण जैसे जीव को बचाना सिर्फ एक प्रजाति की रक्षा नहीं है, यह हमारी आत्मा को बचाने जैसा है।'

2025 में जब सेंचुरी एशिया पत्रिका ने उन्हें द गोडावण मेन आफ इंडिया की उपाधि दी, तब वे मात्र 28 वर्ष के थे। लेकिन यह सम्मान केवल उनके युवा प्रयासों की नहीं, बल्कि उनकी दूरदर्शिता, प्रतिबद्धता और आत्मीयता का प्रतीक था। उन्होंने कई बार कहा, 'अगर हम अपने पूर्वजों की तरह प्रकृति से रिश्ता बनाकर जिएं, तो पृथ्वी को बचाना कठिन नहीं है।'

दुर्भाग्यवश, इसी वर्ष 24 मई को एक सड़क दुर्घटना में राधेश्याम का असामयिक निधन हो गया। यह न केवल जैसलमेर, बल्कि समूचे भारत के लिए एक अपूरणीय क्षति थी। उनके निधन के बाद जैसलमेर में हज़ारों ग्रामीणों ने मौन जुलूस निकालकर उन्हें श्रद्धांजलि दी। आज भी वहां की बालू रेत में जब गोडावण की पदचिन्ह उभरते हैं, तो लोगों को राधेश्याम की याद आती है।

राधेश्याम विश्नोई ने यह सिखाया कि किसी एक व्यक्ति की आस्था और कर्मठता पूरे पारिस्थितिक तंत्र को नया जीवन दे सकती है। वे चले गए हैं, लेकिन उनके 'गोडावण' आज भी उड़ रहे हैं—थार की उस खुली छाती पर, जिसे राधेश्याम ने जीवन भर बचाने की कोशिश की।

लेकिन वे आज भी हर उस युवा के हृदय में जीवित हैं, जो प्रकृति के लिए कुछ करना चाहता है। उनकी स्मृति में जो काम आगे बढ़ रहे हैं—वे ही उनके जीवन की सबसे बड़ी उपलब्धि है।

सामयिक

सुरेश उपाध्याय

लेखक स्तंभकार हैं।

उतावलेपन के रोग से मुक्ति जरुरी

इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में सबसे पहले और सबसे तेज 'एक्सक्लूसिव' (सिर्फ आपके लिए) की होड लगी रहती है। इस उतावलेपन में सत्य व तथ्य की जांच भी जरुरी नही समझी जाती है और एक फुटनोट 'हमारा चैनल इसकी पुष्टि नहीं करता है' से जिम्मेदारी की इतिश्री कर ली जाती है। इसका एक ताजा उदाहरण 'ऑपरेशन सिंदूर' के समय की गई रिपोर्टिंग में भी देखा जा सकता है। कैसी असत्य व मनमानी रिपोर्टिंग की गई, कैसा युद्धोन्माद उत्पन्न किया गया और आज जब वैश्विक स्तर पर छिछालेदारी हो रही है तो कोई जवाबदेही को तैय्यार नही है। वैकल्पिक कहा जाने वाला सोशल मीडिया इस उतावलेपन का ध्वज वाहक बना हुआ है। कापी, पेस्ट, फॉरवर्ड की बाढ़ सी आ गई है। इसी क्रम में एक नवीनतम उदाहरण एक नवविवाहित जोड़े की शादी, हनीमून व हत्या से जूड़े प्रकरण का है।

जल्दबाजी मत करो, धैर्य से काम लो, सोच-विचार कर निर्णय लो, हमारे शुभचिंतक इन वाक्यों से हमें सचेत करते रहे हैं। एक अग्रज रचनाकार इसी बात को अनूठे अंदाज में कहते थे 'उतावल मत करो - क्रांति नी वेरी है' अर्थात् जल्दबाजी मत करो कोई क्रांति नहीं हो रही है। उनकी बात का असर होता था, मित्र रुकते थे, निर्णय पर पुनर्विचार करते थे और निष्कर्ष पर पहुंच कर, आगे बढ़ते थे।

आज ऐसा लगता है, उतावल ही इस समय की पहचान हो गई है। कोई रोकने वाला नहीं, कोई टोकने वाला नहीं, कोई सचेत करने वाला नहीं है। जिधर देखो उधर उतावलापन पैर पसार रहा है। इस उतावलेपन के परिणामों की किसी को चिंता नही है। परिणाम की कोई जिम्मेदारी लेने को तैय्यार नहीं है और न ही किसी को जिम्मेदार ठहराने तथा दंडित करने की मंशाए दिखाई देती है।

इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में सबसे पहले और सबसे तेज 'एक्सक्लूसिव' (सिर्फ आपके लिए) की होड़ लगी रहती है। इस उतावलेपन में सत्य व तथ्य की जांच भी जरुरी नहीं समझी जाती है और एक फुटनोट 'हमारा चैनल इसकी पुष्टि नहीं करता है' से जिम्मेदारी की इतिश्री कर ली जाती है। इसका एक ताजा उदाहरण 'ऑपरेशन सिंदूर' के समय की गई रिपोर्टिंग में भी देखा जा सकता है। कैसी असत्य व मनमानी रिपोर्टिंग की गई, कैसा युद्धोन्माद उत्पन्न किया गया और आज जब वैश्विक स्तर पर छिछालेदारी हो रही है तो कोई जवाबदेही को तैय्यार नहीं है। वैकल्पिक कहा जाने वाला सोशल मीडिया इस उतावलेपन का ध्वज वाहक बना हुआ है। कापी, पेस्ट, फोरवर्ड की बाढ़ सी आ गई है। इसी क्रम में एक नवीनतम उदाहरण एक नवविवाहित जोड़े की शादी, हनीमून व हत्या से जूड़े प्रकरण का है। तथ्यों को जाने बगैर, जांच एजेंसियों के ठोस निष्कर्ष के पूर्व कल्पना के घोड़े कन्हा कन्हा तक दौड़ गए। मेघालय समेत पूर्वोत्तर को लेकर कई तरह की नकारात्मक टिप्पणियां सामने आई और बांग्लादेश की मानव तस्करी तक की चर्चाएं हुई। प्रतिदिन की रिपोर्टिंग के साथ धारणाएं बनाने वाले सक्रिय हो गए, निर्णय दिए जाने लगे, निष्कर्ष निकाले जाने लगे। आज एक के प्रति सद्भावना व सहानुभूति तो दूसरे दिन दूसरे के प्रति वही भाव। आज का हीरो/हीरोइन दूसरे दिन विलेन निकल जाता है। इस विषय के प्रति अगम्भीरता का एक निकृष्ट उदाहरण मेकअप व बगैर मेकअप के फोटोग्राफर के साथ की गई टिप्पणी 'एक एफ आय आर तो मेकअप करने वाले पर भी बनती है', मे देखा जा सकता है। समाज के लिए गहन चिंता के विषय के प्रति हमारी संवेदना को इस मसखरी ने तारतार कर दिया है। इस उतावलेपन या जल्दबाजी में जिस दौर से हम गुजरे है, जिन निर्णयों/निष्कर्षों पर हम पहुंचे हैं, क्या थोड़ा रुककर आत्मावलोकन कर सकते हैं? क्या, हमे अपने निर्णय/निष्कर्ष पर कोई पछतावा हो सकता है? कानून तो अपना काम करेगा ही लेकिन यह प्रकरण वृहत सामाजिक आयामों पर चिंतन मनन की जरुरत को भी रेखांकित करता है।

उतावलेपन की इस बिमारी के एक वैश्विक उदाहरण को भी देख ले जिस तरह से अमेरिकी राष्ट्रपति श्री डोनाल्ड ट्रम्प टेरिफ के संदर्भ में व्यवहार कर रहे हैं या दूसरे देशो के भूगोल पर बात (प्रत्यक्ष/परोक्ष धमकी) कर रहे हैं या सीजफायर के बारे में बार-बार उल्लेख कर रहे है, क्या विश्व के महादेश या अंतर्राष्ट्रीय सम्बंधों की गरिमा के अनुरुप हैं। उनका उतावलापन विश्व के लिए समस्याएं बढ़ा रहा है और वैश्विक संस्थाएं असहाय है। इस प्रवृत्ति के उदाहरण अनेकों हो सकते है, इस सूची को विस्तार देने के बजाए आज उतावल के इस रोग के निदान पर विचार करने की जरुरत है, प्रीवेंटिव इलाज हम कर लेते है तो अनेकों दुष्परिणामों से बच सकते हैं।

विश्व बाल श्रम निषेध दिवस पर विशेष

प्रशांत कुमार दुबे

लेखक सामाजिक कार्यकर्ता हैं।

बालश्रम: विकास की राह का अवरोधक

इस वर्ष 'विश्व बालश्रम निषेध दिवस' की थीम है 'प्रगति स्पष्ट है, लेकिन अभी और काम करना बाकी है: आइये प्रयासों में तेजी लायें' यह बात साफ़ तौर पर स्वीकार करती है कि कुछ अच्छा हुआ है, लेकिन मंज़िल अब भी दूर है। मध्यप्रदेश जैसे राज्य, जहां गरीबी, पलायन, और सामाजिक असमानता गहरे हैं, वहाँ यह चुनौती और भी कठिन हो जाती है। अगर हम मध्यप्रदेश की स्थिति पर नज़र डालें, तो 2011 की जनगणना में 5-14 वर्ष के आयु वर्ग में देशभर में 1.01 करोड़ बाल श्रमिक दर्ज किए गए थे। परंतु 2022 के एनसीआरबी आंकड़ों में मध्यप्रदेश से बालश्रम मामलों की केवल 3 रिपोर्ट सामने आई — यह दर्शाता है कि निगरानी तंत्र या तो निष्क्रिय है या फिर बालश्रम अब भी 'छिपा हुआ श्रम' बना हुआ है। हालांकि PENCIL पोर्टल पर वर्ष 2016 से 2021 के बीच मध्यप्रदेश से जुड़े लगभग 2,991 बच्चों को बालश्रम से मुक्त कर पुनर्वास की दिशा में कार्य किया गया, लेकिन यह भी पूरी तस्वीर नहीं दर्शाता है।

हर साल 12 जून को दुनिया भर में 'विश्व बालश्रम निषेध दिवस' मनाया जाता है। यह वह दिन है जब हम खुद से यह सवाल करते हैं कि क्या वास्तव में हम अपने बच्चों को स्कूल, खेल और सपनों से जोड़ पाए हैं, या आज भी वे किसी होटल, ईंट भट्ठे, खेत या घर के काम में खप रहे हैं? सतत विकास लक्ष्य 8.7 (SDG 8.7) ने वर्ष 2025 तक बालश्रम को समाप्त करने का लक्ष्य रखा था। लेकिन अब जब यह वर्ष गुजर रहा है, हम यह देख रहे हैं कि लक्ष्य अब भी कोसों दूर है। भारत में अनुमान है कि आज भी लगभग 1 करोड़ 10 लाख बच्चे बालश्रम में संलग्न हैं। इनमें से करीब 7 प्रतिशत बच्चे अकेले मध्यप्रदेश से आते हैं। ऐसे में यह सवाल उठना स्वाभाविक है कि प्रगति तो हुई है, लेकिन क्या वह पर्याप्त है?

इस वर्ष 'विश्व बालश्रम निषेध दिवस' की थीम है 'प्रगति स्पष्ट है, लेकिन अभी और काम करना बाकी है: आइये प्रयासों में तेजी लायें' यह बात साफ़ तौर पर स्वीकार करती है कि कुछ अच्छा हुआ है, लेकिन मंज़िल अब भी दूर है। मध्यप्रदेश जैसे राज्य, जहां गरीबी, पलायन, और सामाजिक असमानता गहरे हैं, वहाँ यह चुनौती और भी कठिन हो जाती है।

अगर हम मध्यप्रदेश की स्थिति पर नज़र डालें, तो 2011 की जनगणना में 5-14 वर्ष के आयु वर्ग में देशभर में 1.01 करोड़ बाल श्रमिक दर्ज किए गए थे। परंतु 2022 के एनसीआरबी आंकड़ों में मध्यप्रदेश से बालश्रम मामलों की केवल 3 रिपोर्ट सामने आई – यह दर्शाता है कि निगरानी तंत्र या तो निष्क्रिय है या फिर बालश्रम अब भी 'छिपा हुआ श्रम' बना हुआ है। हालांकि PENCIL पोर्टल पर वर्ष 2016 से 2021 के बीच मध्यप्रदेश से जुड़े लगभग 2,991 बच्चों को बालश्रम से मुक्त कर पुनर्वास की दिशा में कार्य किया गया, लेकिन यह भी पूरी तस्वीर नहीं दर्शाता है।

कानूनी स्तर पर भी चिंताएँ कम नहीं हैं। सुप्रीम कोर्ट के पूर्व न्यायाधीश रंजन गोगोई ने बालश्रम कानून में संशोधन को 'एक मृगमरीचिका' बताया था। उनका तर्क था कि वर्तमान कानून बच्चों को पूरी तरह सुरक्षा नहीं देता। 14 वर्ष से कम उम्र के बच्चों को पारिवारिक व्यवसाय में काम करने की अनुमति देना या खतरनाक कामों की सूची को सीमित कर देना दरअसल बच्चों को छद्म तरीके से श्रम में धकेलना है। वास्तव में जब एक बच्चा अपने पिता की दुकान में काम करता है तो कानून उसे बालश्रम नहीं मानता, लेकिन वही काम कोई और बच्चा मजदूरी के रूप में करे तो वह अपराध बन जाता है। यह कानूनी विरोधाभास ही है जो बालश्रम को पूरी तरह खत्म करने में सबसे बड़ी रुकावट है।

सामाजिक-आर्थिक स्तर पर समस्या और भी गंभीर है। ग्रामीण और आदिवासी इलाकों में जब वयस्कों को रोजगार नहीं मिलता, तो बच्चों को काम पर भेजना मजबूरी बन जाती है। मनरेगा जैसी योजनाओं की असफलता, पलायन और कर्ज़ जैसी स्थितियाँ बच्चों को श्रम में धकेल देती हैं। और जब ये बच्चे काम करते हैं, तो कई बार नशे का शिकार हो जाते हैं। ऐसे में उन्हें नशे से निकालना बड़ी चुनौती बनकर सामने आती है।

हालाँकि सरकार द्वारा बालश्रम समाप्त करने के लिए कई योजनाएं भी चलाई गई हैं। राष्ट्रीय बालश्रम परियोजना (NCLP) के तहत हजारों बच्चों को बचाया गया है, पुनर्वास केंद्र खोले गए हैं, लेकिन इनका विस्तार और प्रभाव क्षेत्र अब भी सीमित है। PENCIL पोर्टल के ज़रिए निगरानी, शिकायत और कार्रवाई की प्रक्रिया को डिजिटलीकृत किया गया है, लेकिन जमीनी स्तर पर इस प्रणाली की पहुँच अब भी काफी सीमित है।

बालश्रम की समस्या केवल लड़कों तक सीमित नहीं है, बल्कि लड़कियाँ और भी अधिक संवेदनशील स्थितियों में फँसी होती हैं। घरेलू नौकरानी, बच्चों की देखरेख, घरेलू उद्योगों में छिपा श्रम – यह सब उनकी दुनिया को सीमित कर देता है और शिक्षा की पहुँच से बाहर कर देता है। इसलिए जेंडर का दृष्टिकोण भी बालश्रम के संदर्भ में उतना ही ज़रूरी है।

इस समस्या से निपटने के लिए ज़रूरत है ठोस, भागीदारी पर आधारित रणनीतियों की। गाँव-स्तर पर बच्चों की पहचान, बाल मित्र पंचायतों का गठन, पंचायतों और बाल संरक्षण समितियों को सक्रिय करना, स्कूलों में 'बालश्रम नहीं, शिक्षा हक है' जैसे अभियान चलाना और युवाओं को बाल अधिकारों का नेतृत्व सौंपना – यह सब जरूरी है। हम युवाओं के साथ काम कर रहे हैं ताकि इस स्थिति में काम कर सकें।

वर्ष 2025 की लक्षित समयसीमा पूरी होने को है। यदि हम अब भी नहीं चेते, तो हम एक ऐसी पीढ़ी को पीछे छोड़ देंगे जो कभी स्कूल का दरवाज़ा नहीं देख पाई, जिसने कभी बचपन को महसूस नहीं किया। बालश्रम को समाप्त करना केवल एक कानूनी लक्ष्य नहीं – यह नैतिक जिम्मेदारी है, एक सामाजिक प्रतिबद्धता है। यह समय है कि हम सोचें नहीं, कदम उठाएँ।

हर बच्चा स्कूल जाए – यह सिर्फ सरकार की ज़िम्मेदारी नहीं, हम सबकी साझी जवाबदेही होनी चाहिए क्योंकि हर बच्चे को चाहिए एक अवसर – पीछा करने वाले नहीं।

धोखाधड़ी के मामले में फरार महिला हरदा से गिरफ्तार

बैतूल। बैतूल में अन्नपूर्णा स्व-सहायता समूह की महिलाओं से धोखाधड़ी करने वाली आरोपी को पुलिस ने हरदा से गिरफ्तार किया है। आरोपी कलावती पति प्रभुदयाल विश्वकर्मा (40) खेडीसावलीगढ़ बैतूल की रहने वाली है। वो पिछले एक साल से फरार चल रही थी। मामला 3 जून 2024 का है। फरियादिया मनिषा इवने ने शिकायत दर्ज कराई थी कि कलावती ने अन्नपूर्णा स्व-सहायता समूह के बैंक खाते से समूह की महिलाओं के 1 लाख 5 हजार रुपए निकाल लिए।

कोतवाली थाने में केस दर्ज किया गया था। एसपी निश्चल एन. झारिया ने धोखाधड़ी के मामलों में आरोपियों की गिरफ्तारी के निर्देश दिए थे। एएसपी कमला जोशी और एसडीओपी शालिनी परस्ते के मार्गदर्शन में कोतवाली पुलिस ने कार्रवाई की। मुखबिर से सूचना मिलने पर पुलिस टीम हरदा पहुंची। आरोपी को हिरासत में लेकर पूछताछ की गई। आरोपी ने अपना जुर्म कबूल कर लिया। उसे न्यायालय में पेश किया गया। इस कार्रवाई में थाना प्रभारी रविकांत डेहरिया, उपनिरीक्षक राकेश सरयाम, चित्रा कुमरे, प्रधान आरक्षक दीपक कटियार समेत महिला आरक्षक और साइबर टीम की भूमिका रही।

दुबई की इंटरनेशनल मॉडल आज जनपरिषद समारोह में होंगी शामिल

भोपाल/बैतूल। अग्रणी संस्था जन परिषद के 36 वें वार्षिक समारोह में दुबई की इंटरनेशनल मॉडल, बी यूनिक इंटरनेशनल मिसेज दुबई, मोस्ट पॉपुलर फेस ऑफ ऑफ आबूधाबी, लोकप्रिय रनवे मॉडल एवं एक्ट्रेस सुश्री विद्या जोशी पटेल दुबई एवं भोपाल की महापौर श्रीमती मालती राय, एयर मार्शल प्रमोद श्रीवास्तव, डॉ निर्भय श्रीवास्तव, डॉ सुबोध वार्ष्णेय, साहित्यकार जीवन सिंह रजक की उपस्थिति में संस्था का वार्षिक समारोह पुलिस ऑफिसर्स मेस के पारिजात सभागृह में अपराह्न ढाई बजे आयोजित किया गया है। यह जानकारी संस्था के अध्यक्ष एवं पूर्व डीजीपी एन. के. त्रिपाठी तथा महासचिव अजय श्रीवास्तव नीलू ने दी है ।

तेल की कड़ाही में गिरा युवक, शरीर का आधा हिस्सा जला

बैतूल। धनोरा के पास एक ढाबे पर शुक्रवार को दिल दहला देने वाला हादसा हो गया। नाश्ता कर रहे नागपुर के युवक को अचानक फिट आ गया और वह पास में ही टेबल पर रखी गर्म तेल की कढ़ाई में जा गिरा। हादसे में युवक बुरी तरह झुलस

गया, जबकि उसे बचाने के चक्कर में उसका साथी भी जल गया। जानकारी के मुताबिक झुलसे युवक का नाम प्रनिश रोडगे (30) है, जो नागपुर में कैटरिंग का काम करता है। वह अपने सात साथियों के साथ दादा धूनी धाम खंडवा जा रहा था। दोपहर में ये लोग बैतूल जिले के धनोरा के पास एक ढाबे पर नाश्ता करने रुके थे। इसी दौरान प्रनिश को अचानक मिर्गी (फिट) का दौरा पड़ा और वह संतुलन खो बैठा। झटके के साथ वह सीधे गर्म तेल से भरी कढ़ाई पर गिर पड़ा। हादसे से अफरा-तफरी मच गई। पास ही खड़े उसका साथी विक्रांत उसे बचाने दौड़ा, लेकिन वह भी झुलस गया। विक्रांत के हाथ-पैर में चोटें आई हैं। आनन-फानन में प्रनिश को जिला अस्पताल लाया गया। डॉक्टरों के अनुसार उसका चेहरा, छाती और दोनों हाथ बुरी तरह झुलस गए हैं। करीब 53 फीसदी शरीर जल चुका है। हालत गंभीर थी, लेकिन प्राथमिक इलाज के बाद उसे बेहतर इलाज के लिए नागपुर रेफर कर दिया गया है। विक्रांत का इलाज स्थानीय स्तर पर किया जा रहा है।

काशी यात्रा से लौट रहे श्रद्धालु की ट्रेन में मौत

बैतूल। दानापुर-सिकंदराबाद एक्सप्रेस में एक यात्री की मौत हो गई। मृतक की पहचान तेलंगाना के महबूबनगर जिले के मानव पद गांव निवासी एम मड्डी लेटी (59) के रूप में हुई। वह काशी धार्मिक यात्रा से लौट रहे थे। मड्डी लेटी पिछले दो दिनों से अस्वस्थ थे। ट्रेन के पी-4 कोच के कॉरिडोर में आरपीएफ की स्कोर्टिंग पार्टी को बेहोश मिले। बताया जा रहा है कि यात्रा के दौरान धूप लगने से उनकी तबीयत और बिगड़ गई थी। स्केटिंग पार्टी को सूचना मिलने पर जीआरपी प्रभारी रविश कुमार के नेतृत्व में पुलिस टीम मौके पर पहुंची। उन्हें जिला अस्पताल ले जाया गया, जहां चिकित्सकों ने मृत घोषित कर दिया। पोस्टमार्टम की प्राथमिक रिपोर्ट से पता चला कि मृतक के लीवर में बीमारी थी। उनके लिवर में चर्बी जमा हो गई थी और हार्ट में भी ब्लॉकेज था। मृतक के साथ दो साथी भी यात्रा कर रहे थे। बाद में शव को तेलंगाना ले जाया गया।

विद्युत मंडल पेंशनर एसोसिएशन की मासिक बैठक कल

बैतूल। मध्य प्रदेश विद्युत मंडल पेंशनर एसोसिएशन की मासिक बैठक 14 जून को दोपहर 12 बजे से कैंपेन हाउस लिंक रोड पर आयोजित की गई है। मध्य प्रदेश विद्युत मंडल पेंशनर एसोसिएशन कार्यकारी अध्यक्ष बीपी धामोढे ने बताया कि बैठक में मध्य प्रदेश शासन एवं मंडल कंपनी द्वारा महंगाई राहत, लंबित भुगतानों, पेंशनर्स के साथ किए जा रहे भेदभाव के विरुद्ध आगामी निर्धारित प्रांतीय कार्यकारिणी की बैठक में इस मुद्दे को प्राथमिकता के आधार पर चर्चा करना, 8वे वेतन आयोग से संबंधित भ्रांति पर जानकारी दी जाएगी। इसके अलावा उच्च न्यायालय में विचाराधीन कॉम्प्यूटेशन की अवधि से संबंधित प्रकरणों की प्रगति की जानकारी तथा प्रांतीय कार्यकारिणी की जबलपुर में 24 जून 2025 को निर्धारित बैठक में शाखा से प्रतिनिधि की सहभागिता एवं पेंशनर्स की अन्य समस्याओं पर चर्चा की जाएगी।

एयरपोर्ट जैसी सुविधायुक्त होगा पवित्र नगरी का रेलवे स्टेशन

अमृत भारत स्टेशन चयन से बदल रही है स्टेशन की तस्वीर

असलम अहमद

मुलताई। मध्यप्रदेश के 80 अमृत स्टेशनों की सूची में शामिल पवित्र नगरी मुलताई का रेलवे स्टेशन अमृत स्टेशन के रूप में आकर लेने लगा है। अब शीघ्र ही पवित्र नगरी का स्टेशन अत्यंत आधुनिक सुविधायुक्त होगा, जहां यात्रियों को एयरपोर्ट जैसी सुविधाएं प्राप्त होगी। 17 करोड़ रुपए की लागत से पवित्र नगरी मुलताई के स्टेशन की कायाकल्प हो रहा है। जिसका कार्य तेजी से आगे बढ़ रहा है। ठेकेदार को संभावित रूप से संपूर्ण कार्य 30 दिसंबर 2025 तक पूर्ण करना है। इन 17 करोड रुपए के निर्माण के अलावा लोडिंग प्लेटफार्म के लिए भी रेलवे ने बड़ी राशि स्वीकृत की है, जिसका निर्माण कार्य चल रहा है। विभागीय सूत्र ने बताया कि इटारसी से नागपुर तक तीसरी लाइन का कार्य भी 6 माह में लगभग पूर्ण हो जाएगा और इस प्रकार मूलताई स्टेशन में भी प्लेटफार्म की संख्या दो से बढक़र तीन हो जाएगी। प्लेटफार्म को अमृत भारत में बनने वाले ओवरब्रिज से जोड़ा जा रहा है। ओवरब्रिज एंट्री भाग में सीढियों के साथ यात्रियों के लिए लिफ्ट सुविधा भी उपलब्ध होगी।

अत्यंत आकर्षक होंगे स्टेशन के दोनों मुख्य द्वार.....- पवित्र नगरी रेलवे स्टेशन के मुख्य द्वार रेलवे विभाग ने अत्यंत आकर्षक रूप से डिजाइन

किए गए हैं। जिसका मुख्य द्वार प्रमुख एंट्री गेट बोरदेही रोड रेलवे सीमा से लगा होगा और इसके बाद रेलवे स्टेशन प्रवेश द्वार से मुख्य गेट के खाली भाग में आकर्षक गार्डन का निर्माण किया जाना है। जिसमें दो ओर से एंट्री के लिए द्वारा एक भाग में वाहन पार्किंग, स्थल मुख्य गेट के दोनों ओर ओवरब्रिज, जिसमें लिफ्ट की सुविधा, पवित्र नगरी को ध्यान में रखकर डिजाइन किया गया। मुख्य द्वार इसके निर्माण के लिए आगामी दो दिनों में मुख्य गेट को बंद कर दिया जाएगा। तत्कालीन व्यवस्था के लिए स्टेशन में जाने के लिए साइड से मार्ग निर्माण किया गया है। स्टेशन में वातावरण अनुकूलित एसी प्रतीक्षालय जिसमें महिलाओं के लिए अलग से प्रतीक्षालय का निर्माण किया जाएगा।

750 मीटर में बन रहा है विशाल लोडिंग प्लेटफार्म- मुलताई रेलवे स्टेशन का दूसरा बड़ा आकर्षण 750 मीटर में बन रहा लोडिंग प्लेटफार्म है, जहां एक साथ 60 बोगी लोडिंग अनलोडिंग हो सकेगी। यहां उल्लेखनीय है कि मुलताई क्षेत्र से बड़ी मात्रा में सोयाबीन और मक्का को भिन्न प्रदेशों में भेजा जाता है। बीते कुछ वर्षों से मुलताई क्षेत्र सोयाबीन के साथ ही मक्का का भी बड़ा उत्पादक क्षेत्र बनकर उभरा है। जिसकी ट्रांसपोर्टिंग अधिकतर रेलवे से ही होती है। लोडिंग प्लेटफार्म निर्माण से व्यापारियों को बड़ी राहत मिलेगी।

इनका कहना है-

मुख्य गेट निर्माण प्रारंभ होना है जिसके लिए वर्तमान गेट को बंद कर साइट से बायपास मार्ग प्रारंभ किया जा रहा है। 17 करोड़ की लागत से होने वाले यह निर्माण कार्य 30 दिसंबर 2025 तक पूर्ण होने की संभावना है।

- **हिमांशु कुमार** रेलवे स्टेशन मास्टर मुलताई

विधायक खंडेलवाल की प्रेरणा से शुरू हुआ स्वच्छता अभियान

सुभाष वार्ड में पार्षद किरण खातरकर ने महिलाओं के साथ उठाई झाड़ू, पीपल चौराहे की गंदगी को किया साफ

बैतूल। सुभाष वार्ड क्रमांक 1 में स्वच्छता को लेकर एक सकारात्मक पहल की शुरुआत हुई है। वार्ड की पार्षद किरण खातरकर ने विधायक हेमंत खंडेलवाल की प्रेरणा से स्वच्छता अभियान की कमान संभालते हुए वार्डवासियों के साथ मिलकर सफाई अभियान चलाया। वार्ड के पीपल चौराहे पर फैली गंदगी को देखते हुए पार्षद के नेतृत्व में वार्ड की महिलाओं ने खुद झाड़ू उठाकर सफाई की और पूरे क्षेत्र में स्वच्छता का संदेश दिया।

इस स्वच्छता अभियान में बड़ी संख्या में महिलाएं और वार्डवासी शामिल हुए। अभियान के दौरान पार्षद किरण खातरकर ने बताया कि विधायक हेमंत खंडेलवाल की प्रेरणा से वार्ड में साप्ताहिक स्वच्छता अभियान की शुरुआत की गई है, जो निरंतर जारी रहेगा। उन्होंने कहा कि अभियान के माध्यम से वार्ड के अंतिम व्यक्ति तक पहुंच बनाकर उनकी समस्याओं को भी समझा जाएगा। साथ ही वार्ड में अगर कोई अवैध गतिविधियां संचालित हो रही हैं, तो उन पर अंकुश लगाने का भी प्रयास किया जाएगा।

पार्षद खातरकर ने यह भी बताया कि विधायक खंडेलवाल के सहयोग से वार्ड का समग्र विकास लगातार जारी है और यह प्रयास आगे भी चलता रहेगा ताकि सुभाष वार्ड को नगर में स्वच्छता और विकास के क्षेत्र में नंबर

एक स्थान प्राप्त हो सके। उन्होंने कहा कि वार्डवासियों, विशेषकर महिलाओं में भाजपा के कार्यकाल में चल रहे विकास कार्यों को लेकर उत्साह है और अब स्वच्छता को लेकर भी सभी पूर्ण रूप से तैयार हैं।

स्वच्छता अभियान में वार्ड की प्रमुख महिलाएं निशा मेहरा, कविता बरसाकर, मुन्नी यादव, जमना महाजन, चंदा मोहबे, उर्मिला मवासे, लता परिहार, रेवती बिनझाडे, जमना चतुरकर शामिल रहीं। इनके साथ ही विनोद यादव, देवीनाथ लोखंडे, लक्ष्मीनारायण खातरकर, विशाल भौरासे, सफाई कर्मी गोविंद सांडे, पिंकी जावलकर, किशोर उईके, पवन वाडिवा, गुड्डी यादव, सुनील पाल और गोलू चिंचलकर समेत बड़ी संख्या में वार्डवासी मौजूद रहे।सभी ने यह संकल्प लिया कि स्वच्छता अभियान अब प्रत्येक सप्ताह वार्ड में चलाया जाएगा और वार्ड को स्वच्छ, सुंदर और विकासशील बनाने की दिशा में हर संभव प्रयास किए जाएंगे।

तापी पूजन एवं कलश यात्रा के साथ प्रारंभ हुआ सूर्य महायज्ञ

महामंडलेश्वर प्रबोधनन्द गिरी महाराज, धर्माचार्य सोमेश परसाई पहुंचे पवित्र नगरी

बैतूल/मुलताई। माँ ताप्ती उदगम उद्धार समिति द्वारा आयोजित सूर्य महायज्ञ एवं सवा करोड़ शिवलिंग निर्माण कार्यक्रम का आरंभ प्राचीन मां ताप्ती मंदिर एवं सूर्यकुंड मे विधि विधान के साथ पूजन से किया गया। ताप्ती पूजा अर्चना के बाद कलश पूजन कर कलश यात्रा निकाली गई । इस पूजन कार्य में महामंडलेश्वर प्रबोधनन्द गिरी महाराज, धर्माचार्य सोमेश परसाई 31 ब्राह्मणों के साथ एवं महाराज आफ नागपुर युवराज जय सिंह राजे, पूर्व रोजगार निर्माण बोर्ड अध्यक्ष हेमंत विजय राव देशमुख शामिल हुए। भव्य सूर्य यज्ञ एवं पार्थिव शिवलिंग निर्माण कार्यक्रम हेतु गुरुवार सुबह 9 बजे कलश यात्रा का प्रारंभ प्राचीन ताप्ती मंदिर से हुआ इस कलश यात्रा में बड़ी संख्या में महिलाओं ने एक जैसे पीली वेशभूषा में भाग लिया। कलश यात्रा का प्रत्येक चौक चौराहे पर नागरिकों ने भव्य स्वागत किया ।महामंडलेश्वर प्रबोधनन्द गिरी महाराज, धर्माचार्य सोमेश परसाई पर श्रद्धालुओं ने जगह-जगह पुष्प वर्षा की एवं चरण वंदना कर आशीर्वाद प्राप्त किया। मेला ग्राउंड पर 18 जून तक चलने वाले सूर्य महायज्ञ एवं शिवलिंग निर्माण कार्यक्रम को लेकर संपूर्ण परिक्रमा क्षेत्र धर्म क्षेत्र बना हुआ है जगह-जगह बैनर पोस्टर धर्म ध्वजा से पाट दिए गए हैं। आयोजन समिति माँ ताप्ती उदगम उद्धार समिति अभी तो एक महा से इस कार्यक्रम को लेकर तैयारी कर रही थी समिति द्वारा धार्मिक विद्वानों के साथ ही प्रदेश के अनेक नेताओं को भी आमंत्रित किया है जिनकी समापन के पूर्व नगर आगमन की संभावना है।

पोहर में उल्टी-दस्त का कहर, स्वास्थ्य विभाग की टीम पहुंची

बैतूल। भैंसदेही के ग्राम पंचायत पोहर में उल्टी-दस्त से ग्रामीण परेशान है। हालात यह है कि हर घर में एक-दो लोग उल्टी दस्त से पीड़ित है। इसकी सूचना मिलते ही स्वास्थ्य अमला पोहर तो पहुंचा, लेकिन औपचारिकता निभाकर लौट गया। ग्रामीणों का आरोप है कि स्वास्थ्य विभाग की टीम आई थी और कुछ लोगों का उपचार करके लौट गई। जबकि गांव के हर घर में उल्टी-दस्त से लोग पीड़ित है। पिछले दस दिनों से गांव में ऐसे हालात बने हुए है, लेकिन न सरपंच-सचिव द्वारा कोई ध्यान दिया जा रहा है और न ही स्वास्थ्य अमला ठीक से उपचार कर रहा है। ग्रामीणों को आशंका है कि पंचायत द्वारा जो पानी सप्लाई किया जा रहा है, उसी पानी के सेवन से लोग उल्टी-दस्त जैसी बीमारी से पीड़ित हो रहे है। ग्रामीणों का आरोप है कि गांव में साफ-सफाई भी ठीक से नहीं हो रही है। ग्रामीणों ने बताया कि वर्तमान में पंचायत द्वारा दो ट्यूबवेल से पंचायत के कुंए में पानी पहुंचाया जा रहा है, जहां से नलजल से पानी घरों तक पहुंच रहा है। ऐसे में पानी की जांच करवाना आवश्यक है। ग्रामीणों का आरोप है कि गंदगी और दूषित पानी की वजह से यह बीमारी फैल रही है। गांव में जो पानी सप्लाई हो रहा है, वह दूषित हो सकता है। इसलिए इस पानी की सर्वप्रथम जांच होना चाहिए। लेकिन पीएचई विभाग भी ध्यान नहीं देर रहा है। गांव में नाली की सफाई नहीं होने से काफी गंदगी फैली हुई है। जिससे यंहा मच्छरों की भरमार है। इधर ग्रामीणों का आरोप है कि सीएचओ, सुपरवाईपर, आशा कार्यकर्ता भी कभी कभार ही यंहा आते है। जिसके कारण ग्रामीणों को स्वास्थ्य सुविधाएं नहीं मिल पा रही है। ग्रामीणों ने जिला कलेक्टर से उक्त मामले की जांच और स्वास्थ्य टीम को उपचार के लिए निर्देशित करने की मांग की है।

इनका कहना है -

पोहर में उल्टी-दस्त फैलने की जानकारी मिली थी। जिसके बाद मैने स्वास्थ्य टीम को भेजा था। उन्होंने उपचार किया है। यदि इसके बाद भी लोगों को आराम नहीं मिल रहा है तो एक बार फिर स्वास्थ्य टीम को भेजकर उपचार करवाया जायेगा।

- **स्वाती झरबड़े,** बीएमओ, सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र, भैंसदेही जिला बैतूल

देश के इतिहास में मोदी सरकार का कार्यकाल स्वर्णअक्षरों में लिखा जाएगा: आलोक शर्मा

भाजपा प्रदेश उपाध्यक्ष ने कहा - आज का भारत न रूकने वाला, न झुकने वाला

बैतूल। भारत के राजनैतिक इतिहास में मोदी सरकार का कार्यकाल स्वर्णीम अक्षरों मे लिखा जाएगा बीते 11 वर्षो में भारत के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने भारत के 140 करोड लोगो में उम्मीद की किरण जगाई है। उनका कार्यकाल भारत के भविष्य के लिए एक मजबूत नींव रखने वाला कार्यकाल के रूप में याद किया जाएगा। यह विचार भाजपा के प्रदेश उपाध्यक्ष एवं भोपाल सांसद आलोक शर्मा ने मोदी सरकार के 11 साल पूर्ण होने के अवसर पर जिला भाजपा कार्यालय विजय भवन में आयोजित पत्रकारवार्ता में व्यक्त किए। इस अवसर पर जिलाध्यक्ष सुधाकर पंवार, बैतूल विधायक हेमंत खंडेलवाल, आमला विधायक डा.योगेश पंडाग्रे, जिला महामंत्री कमलेश सिंह, मीडिया प्रभारी सूर्यदीप त्रिवेदी उपस्थित थे। पत्रकारो को संबोधित करते हुए आलोक शर्मा ने कहा कि अब तो देश की जनता भी कह रही है कि मोदी है तो मुमकिन है। क्योकि मोदी सरकार ने राजनीति की नई परिभाषा गढी है। मोदी सरकार राजनीति में पालिटिक्स आफ परफारमेंस लेकर आई है। श्री शर्मा ने कहा कि आज नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में देश सशक्त निर्णय लेने में सक्षम हो रहा है। आतंकवादी हमले के जवाब में युद्ध जैसी कार्यवाही होती है। यही वजह है कि ऑपरेशन सिंदूर का डंका पूरी

दुनिया में बज रहा है। ऑपरेशन सिंदूर सिर्फ एक सैन्य कार्यवाही नही बल्कि हमारे संकल्प साहस और बदलते भारत की तस्वीर है। श्री शर्मा ने कहा कि देश की जनता ने बडी उम्मीद के साथ मोदी जी के हाथों देश की सत्ता सौपी थी। मोदी सरकार ने पिछले 11 सालो में सेवा ,सुशासन और गरीब कल्याण के लिए अनेक योजनाऐं प्रारंभ की है। देश ने अंधेरे से उजाले तक निराशा से आशा तक भ्रष्टाचार से सुशासन तक की ऐतिहासिक यात्रा तय की है। लगभग 25 करोड लोग गरीब रेखा से बाहर निकले है। जनधन योजना के अंतर्गत 55 करोड गरीबो के बैंक खाते खोलकर उन्हे बैंकिग सिस्टम से जोडा गया है। मध्यम वर्ग के लिए 12 लाख 75 हजार तक की आय तक टैक्स में छुट दी गई है। श्री शर्मा ने आगे कहा कि चंद्रायन - 3 की सफलता इस बात का प्रमाण है कि मोदी का नया भारत केवल धरती पर ही नही अंतरिक्ष में भी आगे बढ रहा है। 99 प्रतिशत गांव सडक कनेक्टिविटी से जुड चुके है। प्रतिदिन 34 किमी हाईवे का निर्माण हो रहा है आम आदमी के लिए हवाई यात्रा संभव हो सका है। कृषि बजट को रिकार्ड 5 गुना बढाया गया है। 80 करोड लोगो को निशुल्क राशन दिया जा रहा है। प्रधानमंत्री आवास के तहत गरीबो के लिए 4 करोड पक्के मकान बने है। 15 करोड घरो में पीने का पानी पहुचा है। 12 करोड घरो में शौचालयो का निर्माण हुआ है जिससे माताओ बहनो का गरीमापूर्ण जीवन मिला है। नारी शक्ति वंदन अधिनियम में महिलाओं को 33 प्रतिशत आरक्षण मिला है। श्री शर्मा ने कहा कि जम्मू काश्मीर से धारा 370 हटाना , विश्व स्तरीय काशी विश्वनाथ कारी डोर, महाकाल परियोजना, अब सपना नही असलियत है। स्टैच्यु ऑफ युनिटी , बाबा साहब का पंचतीर्थ, नेशनल वार मेमोरियल, नेताजी सुभाषचंद्र बोस की प्रतिमा का अनावरण जैसे कार्यो से जहां विरासत को सहेजा गया है। वहीं राष्ट्र नायको को सम्मानीत किया गया है।

प्रकृति के सुकुमार कवि की जन्मभूमि में यूथ फॉर ट्रुथ के सदस्य

विवेक कुमार साव

(लेखक महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय वर्धा में शोधार्थी है।)

कौसानी जाएँ, तो आधुनिकता की चकाचौंध से दूर, प्रकृति की गोद में ऐसी मनमोहक सी शांति मिलेगी, जैसे वह जिंदगी की भागदौड़ को जीभ चिढ़ा रही हो। अगर आपका, सुमित्रानंदन पंत की कविताओं से थोड़ा भी वास्ता है, तो यहाँ का नज़ारा आपको चौंका देगा ; मानो कवि के प्रकृति के बिंब साँस लेने लगे हों। और क्यों न, यही तो वह भूमि है, जहाँ प्रकृति के सुकुमार कवि ने बचपन के दिन गुजारे। वर्तमान में उस घर को संग्रहालय (सुमित्रानंदन पंत राजकीय संग्रहालय, कौसानी) में तब्दील कर दिया गया है, जहाँ उनकी कविताओं का संग्रह, उनसे सम्बंधित किताबें, पुरस्कार, कपड़े, मेज, कुर्सी, सम्मान पत्र और उनसे जुड़ी तमाम वस्तुएं आदि सँजोई गई हैं, यह सब उनके रचनात्मक जीवन की गाथा बयाँ करती है। यह गाँव छोटा है या बड़ा, कौन हिसाब लगाए? मगर इसकी हरियाली और पहाड़ों की ऊँचाई ऐसी मनोरम है कि नज़रें ठहर जाएँ। हवा सनसनाती है, ठंडक लिए, और पत्तों की सरसराहट आपके मन को बादलों की सैर पर ले जाती है - वहाँ, जहाँ से लौटने का जी नहीं करता। शाम ढले, मौसम में अलग ही रंगत छा जाता है, जैसे प्रकृति आपसे ठिठोली कर रही हो। मानो प्रकृति खुद मुस्कुरा उठे, आपको गुदगुदी करे। सोचता हूँ, छियानबे साल पहले यही जादू था, जिसने गांधी के कलेजे को छुआ होगा। शायद! तब यह नज़ारा और भी अधिक मोहक रहा हो, तभी तो बापू ने इसे भारत का स्विट्जरलैंड कहा था। यदि आप सुमित्रानंदन पंत की कविताओं का रसपान करते हुए यहाँ पधारें, तो इस स्थान का आनंद दोगुना हो उठेगा, मानो ये कविताएँ आपके कानों में प्रकृति की स्मित लहरियों सी गूँजने लगें। देखिए, कैसे ये सुकुमार कवि अपनी रचनाओं के माध्यम से आपको पर्वत की गोद में ले जाकर प्रकृति की शांति और सौंदर्य से रू-ब-रू कराता है, जहाँ हर पल आत्मा को सुकून मिलती है -

'हँसमुख हरियाली हिम-आतप
सुख से अलसाए-से सोए,
भीगी अँधियाली में निशि की
तारक स्वप्नों में-से खोए
मरकत डिब्बे सा खुला ग्राम
जिस पर नीलम नभ आच्छादन
निरुपम हिमांत में स्निग्ध शांत
निज शोभा से हरता जन मन!'

पंतजी स्वयं कहते हैं कि उनके काव्य-जीवन की विकास-यात्रा को समझने के लिए पहले आपको उनके साथ हिमालय की मनोरम तलहटी में विचरण करना होगा। अल्मोड़ा से बत्तीस मील उत्तर की ओर बढ़ें, तो आप पहुँच जाएँगे उनकी जन्मभूमि कौसानी - प्रकृति का वह रमणीय श्रृंगार-गृह, जहाँ पर्वत-शोभा एकांत में बैठकर अपने पल-पल बदलते रूप को निखारती है। कवि बताते हैं कि वर्षों पहले, जब वे चंचल, भावुक किशोर थे, उनका काव्य-कंठ अभी जागृत भी नहीं हुआ था; मगर प्रकृति (माँ की तरह), उस मातृहीन बालक को कवि-जीवन के लिए गढ़ने लगी थी। उसने उनके हृदय में अपनी मधुर, स्वप्निल चुप्पी अंकित कर दी, जो उनके भीतर अस्फुरित, तुतलाते स्वरों में गूँज उठी। पहाड़ी वृक्षों का क्षितिज, अनगिनत गहरे-हल्के रंगों के फूलों और कोंपलों की मर्मर ध्वनि के साथ, उनकी आत्मा में सुंदरता की रंगबिरंगी, सुगंधित परतें बुन चुका था। कवि लिखते हैं -

'उस फैली हरियाली में
कौन अकेली खेल रही मा,
वह अपनी वय बाली में!'

पंत जी पर लिखते हुए हरिवंश राय बच्चन बताते हैं कि एक ओर जहाँ कौसानी अपने सौन्दर्य से अप्सरा-सी

लगती है वहाँ दूसरी ओर अपनी पावनता से तपस्विनी-सी। तभी तो एक ओर जहाँ उसने कवीन्द्र रवीन्द्र को इतना मोहित किया कि उन्होंने उसी की छाया में अपने शान्ति-निकेतन की शाखा आरोपित करने की इच्छा प्रकट की, वहाँ दूसरी ओर उसने महात्मा गांधी को अनासक्ति-योग नाम से गीता का भाष्य करने की भी प्रेरणा दी । ऐसी है वह राग-विरागमयी कौसानी जिसने पंतजी को बचपन में धाय की तरह पाला है, और उसने अपने इन्हीं दो परस्पर-विरोधी गुणों से पंतजी को समलंकृत कर उन्हें काव्य और जीवन के मार्ग पर छोड़ दिया है। (बच्चन रचनावली-6,पेज-39) पंतजी अपनी कविता 'आत्मिका' में कौसानी के बारे में स्वयं लिखते हैं -

'हिमगिरि प्रान्तर था दिग हर्षित,
प्रकृति कोड ऋतु शोभा कल्पित,
गंध गुथी रेशमी वायु थी, मुक्त-नील
गिरी पंखों पर स्थित!

यूथ फॉर ट्रुथ के सारे नौजवान साथी और शिविर में दूर-दूर से आए वरिष्ठ गांधी चिंतक, सुमित्रानंदन पंतमार्ग पर शराब की दुकान बंद करवाने की जिद् लिए पदयात्रा खत्म कर, रास्ते में लौटते हुए सुमित्रानंदन पंत राजकीय संग्रहालय जा पहुंचे। वहाँ सबने प्रकृति के उस सुकुमार कवि का घर निहारा, जो प्रकृति की गोद में रचा-बसा था। युवा साथियों ने पंत की कविताओं को गुनगुनाया, मानो हवा में काव्य शब्दों की माला तैर रही हो। थोड़ा सुस्ताए, दम लिया, और फिर कवि पंत पर गांधीजी के प्रभाव की बात छिड़ी। बातों-बातों में साफ झलका कि पंत के दिल में बापू के लिए जो श्रद्धा थी, वो पत्थर पर उकेरी गई लकीर-सी थी न हिलने वाली। 1921 में, जब गांधी जी का असहयोग आंदोलन जोरों पर था, पंत जी अपने बड़े भाई के साथ उनका भाषण सुनने गए और इतने प्रभावित हुए कि आंदोलन में शामिल होने के लिए कॉलेज छोड़ दिया। बाद में, 1934 में, वे अपने भाई देवीदत्त के साथ गांधी जी से मिले और उनके व्यक्तित्व से इतने अभिभूत हुए कि 1936 में 'बापू के प्रति' रचना लिख डाली। पंत कहते भी थे, मेरा कवि-मन ऐसी चेतना की तलाश में भटक रहा था, जो नवयुग का मंगल रच दे, और गांधीजी का वो शुद्ध स्पर्श, मानो सीढ़ी बनकर मेरे सामने आ खड़ा हुआ। उनके द्वारा रचित 'बापू के प्रति' में कवि गांधीजी के बारे में लिखते हैं -

'तुम मांस-हीन, तुम रक्तहीन,
हे अस्थि-शेष! तुम अस्थिहीन,
तुम शुद्ध-बुद्ध आत्मा केवल,
हे चिर पुराण, हे चिर नवीन!
तुम पूर्ण इकाई जीवन की,
जिसमें असार भव-शून्य लीन;
आधार अमर, होगी जिस पर
भावी की संस्कृति समासीन!'

इस चर्चा के बाद, संग्रहालय से निकलते वक्त मन में एक ख्याल कौंधा - क्या पंत की यादों को वाकई वो इज्जत मिल रही है, जो मिलनी चाहिए? हल्की पीली दीवारों वाले हॉल में पंत की किताबों से ठुंसी अलमारियां थीं, दीवारों के सहारे टिके पुराने फोटो, जिन पर हाथ से लिखी टिप्पणी चिपकी थीं। पंत के कपड़े, कुर्सी, मेज, उनका संदूक, और दीवार पर कील से लटका चश्मा, कुछ और स्मृतियां भी इधर-उधर दीवार के सहारे खड़ी थीं। ये सब अनमोल था, मगर बेतरतीब। सोचा, क्या ये धरोहर इस तरह बचेगी? इन्हें तो किसी उस्ताद के हाथों सजना चाहिए, वरना ये चीजें वक्त की मार नहीं झेल पाएंगी। वहाँ खड़े एक शख्स से पूछा, तो उसने जवाब की बजाय नजरें फेर लीं, जैसे कोई और काम उसे घूर रहा हो। खैर, इस बात पर उलझते हुए हम बाहर निकल आए। मन में ठहरा एक ख्याल लिए, क्या हम आगे चलकर कुछ कर पाएंगे?

दुबई की इंटरनेशनल मॉडल जनपरिषद समारोह में

भोपाल। अग्रणी संस्था जन परिषद के 36 वें वार्षिक समारोह में दुबई की इंटरनेशनल मॉडल, बी यूनिक इंटरनेशनल मिसेज दुबई, मोस्ट पॉपुलर फेस ऑफ ऑफ आबूधाबी, लोकप्रिय रनवे मॉडल एवं एक्ट्रेस सुश्री विद्या जोशी पटेल दुबई एवं महापौर श्रीमती मालती राय, एयर मार्शल प्रमोद श्रीवास्तव, डॉ निर्भय श्रीवास्तव, डॉ सुबोध वार्ष्णेय, साहित्यकार जीवन सिंह रजक की उपस्थिति में संस्था का वार्षिक समारोह पुलिस ऑफिसर्स मेस के पारिजात सभागृह में अपराह्न ढाई बजे आयोजित किया गया है। यह जानकारी संस्था के अध्यक्ष एवं पूर्व डीजीपी एन. के. त्रिपाठी तथा महासचिव अजय श्रीवास्तव नीलू ने दी है।

नगर पंचायत,राजस्व, पुलिस अमले ने रेवाबनखेड़ी मार्ग से हटाया अतिक्रमण

सुबह सवेरे सोहागपुर। नगर पंचायत परिषद ने पूर्व घोषित सूचना के बाद नगर पंचायत परिषद, राजस्व एवं पुलिस अमले ने जेसीबी के माध्यम से रेवाबनखेड़ी मार्ग से करीबन 25 से अधिक अतिक्रमणों को हटाया।इस मुहिम में अनुविभागीय अधिकारी अनिल जैन, तहसीलदार आर एस झरबड़े,नायब तहसीलदार, राजस्व निरीक्षक ,राजस्व निरीक्षक नगर पंचायत परिषद संजय परसाई सहित पूरा अमला इस मुहिम लगा हुआ था। नगर पंचायत परिषद राजस्व निरीक्षक संजय परसाई ने बताया कि अनुविभागीय अधिकारी राजस्व, तहसीलदार एवं मुख्य नगर पालिका अधिकारी नगर परिषद के निर्देशन में रेवाबनखेड़ी रोड एक्सचेंज ऑफिस के दोनों तरफ का अतिक्रमण हटाया गया । इसके साथ ही जपती की कार्रवाई की गई। रेवाबनखेड़ी मार्ग से करीबन 25 अतिक्रमणों को हटाया गया।

पलकमती नदी के विकास कार्यों का निरीक्षण

सुबह सवेरे सोहागपुर। आज कभी नगर की जीवनदायिनी रही पलकमती नदी पर निर्माणाधीन डेम एवं घाट निर्माण का औचक निरीक्षण क्षेत्रीय विधायक विजयपालसिंह ने किया। विधायक विजयपालसिंह ने संबंधित अधिकारीयो को निर्माण कार्य को समय सीमा के साथ उच्च गुणवत्ता के साथ शीघ्र पूर्ण करने के लिए निर्देश दिए हैं। इस अवसर पर नगर परिषद अध्यक्ष प्रतिनिधि यशवंश पटेल, नपा उपाध्यक्ष आकाश रघुवंशी ,मंडल अध्यक्ष अश्वनी सरोज, विजय छाबड़िया, पार्षद गौरव पालीवाल, पार्षद रविशंकर उईके, पूर्व पार्षद राकेश चौरसिया, पूर्व पार्षद जगदीश अहिरवार,लखन रघुवंशी, नीलेश खंडेलवाल आदि भाजपा कार्यकर्ता उपस्थित थे।

यकृत स्वस्थ तो जीवन स्वस्थ, यकृत की देखभाल को बनाएं प्राथमिकता : उपमुख्यमंत्री शुक्ल

'ग्लोबल फैटी लिवर दिवस' पर स्वास्थ्य अधिकारियों एवं आशा कार्यकर्ताओं को किया संबोधित

अब तक 10 लाख से अधिक की गई जांचें

भोपाल। विकसित भारत के साथ-साथ स्वस्थ भारत का निर्माण सरकार की सर्वोच्च प्राथमिकताओं में शामिल है। यदि यकृत स्वस्थ रहेगा, तो जीवन भी स्वस्थ रहेगा और जब जीवन स्वस्थ होगा, तब परिवार, समाज और पूरा प्रदेश भी स्वस्थ और सशक्त बनेगा। उक्त विचार उप मुख्यमंत्री श्री राजेन्द्र शुक्ल ने 'ग्लोबल फैटी लिवर दिवस' पर सागर में वीडियो कॉन्फ्रेंस से प्रदेश के सभी जिलों के स्वास्थ्य अधिकारियों एवं आशा कार्यकर्ताओं को संबोधित करते हुए व्यक्त किए। पद्म भूषण डॉ शिव कुमार सरीन, निदेशक, इंस्टिट्यूट ऑफ लिवर एंड बिलियरी साइंसेज, नई दिल्ली भी चर्चा में जुड़े।

उप मुख्यमंत्री एवं सागर जिले के प्रभारी मंत्री श्री शुक्ल ने कहा कि 'ग्लोबल फैटी लिवर डे' केवल एक दिन नहीं है, बल्कि स्वास्थ्य के प्रति हमारी प्रतिबद्धता, जागरूकता और स्वस्थ भविष्य की दिशा में सामूहिक संकल्प का संदेश है। उन्होंने कहा कि यकृत (लिवर) हमारे शरीर का सबसे मौन किंतु अत्यंत कार्यशील अंग है। यह अंग ऊर्जा उत्पादन, विषहरण, प्रतिरक्षा और पाचन जैसी महत्वपूर्ण प्रक्रियाओं की आधारशिला है। जब यकृत प्रभावित होता है, तो उसके लक्षण बहुत देर से प्रकट होते हैं और तब तक शरीर को गंभीर हानि पहुँच चुकी होती है। ऐसे में आवश्यक है कि हम समय रहते यकृत की देखभाल को अपनी प्राथमिकता बनाएं। उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने कहा कि मोटापा, मधुमेह, असंतुलित आहार, शारीरिक निष्क्रियता और मानसिक तनाव एनएएफएलडी के प्रमुख कारण हैं। ये सभी कारक जीवनशैली से जुड़े हुए हैं। उन्होंने आह्वान किया कि नागरिक अपने और परिवार की जाँच अवश्य कराएं। संतुलित आहार अपनाएं, जंक फूड से बचें, और रोजाना कम से कम 30 मिनट तक शारीरिक गतिविधि को अपने जीवन का अनिवार्य हिस्सा बनाएं। उन्होंने कहा कि 'स्वस्थ यकृत मिशन' को और भी सशक्त बनाया जाएगा। स्क्रीनिंग से लेकर उपचार तक हर स्तर पर सरकार आपके साथ खड़ी है। स्वास्थ्य संस्थाओं में आवश्यक उपकरण, प्रशिक्षित मानव संसाधन और बेहतर उपचार सुविधाएँ उपलब्ध कराई जाएँगी।

उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने कहा कि 21 मई 2025 को राज्यपाल श्री मंगुभाई पटेल एवं मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने स्वस्थ यकृत मिशन का शुभारंभ किया। यह एक समर्पित जनस्वास्थ्य पहल है, जो केवल उपचार तक सीमित नहीं, बल्कि रोकथाम, जनजागरूकता, स्क्रीनिंग, रेफरल तथा फॉलोअप के प्रत्येक चरण को एकीकृत रूप में सम्मिलित करती है। 2 जून 2025 से लेकर आज तक हम लगभग 10 लाख नागरिकों की एनएएफएलडी स्क्रीनिंग की जा चुकी है। इनमें से 1.27 लाख लोगों का बॉडी मास इंडेक्स (बीएमआई) 23 से अधिक पाया गया। 1 लाख 24 हज़ार 131 (24 प्रतिशत) महिलाओं की कमर की माप 80 सेंटीमीटर से अधिक और 93 हज़ार 738 (19 प्रतिशत) पुरुषों की कमर की माप 90 सेंटीमीटर से अधिक पाई गई। उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने कहा कि ये आंकड़े मात्र संख्याएँ नहीं हैं ये एक गंभीर चेतावनी हैं। यह संकेत है कि हम सचेत हो जाएँ और भविष्य की चुनौती के प्रति सजग रहें।

उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने कहा कि पूरे प्रदेश में आयुष्मान आरोग्य मंदिरों, प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों, सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्रों, जिला अस्पतालों तथा शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों में एनएएफएलडी स्क्रीनिंग शिविर आयोजित किए गए हैं। इन शिविरों में 30 से 65 वर्ष आयु वर्ग के नागरिकों की जाँच की जा रही है। संदिग्ध मामलों को जिला अस्पतालों में रेफर किया जा रहा है और उनका नियमित फॉलोअप भी सुनिश्चित किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि अभियान में आशा कार्यकर्ता, एएनएम, सीएचओ, मेडिकल ऑफिसर, स्वास्थ्य प्रबंधक और पंचायत प्रतिनिधि हमारी सशक्त रीढ़ की हड्डी के रूप में कार्य कर रहे हैं। ये सभी जमीनी स्तर पर सक्रिय होकर घर-घर जाकर लोगों को जागरूक कर रहे हैं, उन्हें प्रेरित कर रहे हैं तथा समय रहते स्क्रीनिंग के लिए प्रोत्साहित कर रहे हैं।

मूंग पर कांग्रेस का भाजपा सरकार पर तीखा हमला

खरीदी शुरू न होने पर किसान ट्रैक्टर लेकर पहुंचेंगे मामा के घर : प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष जीतू पटवारी

हीरालाल गोलानी सोहागपुर। पुराने पुलिस थाने के पीछे रानी लक्ष्मीबाई मंच पर प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष जीतू पटवारी शाम को समर्थन मूल्य पर मूंग खरीदी को लेकर कांग्रेस ने प्रदेश भाजपा सरकार पर तीखा हमला किया समीपवर्ती ग्राम शोभापुर से करीबन शाम 6बजे कांग्रेसियों की पदयात्रा प्रारंभ हुई। इस पदयात्रा के साथ किसान ने भारी संख्या में अपने ट्रेक्टर लेकर आए थे। इस ट्रेक्टर यात्रा में अग्रणी थे । सोहागपुर के युवा कांग्रेस नेता राजकुमार रघुवंशी। सोहागपुर में रानी लक्ष्मीबाई मंच पर प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष जीतू पटवारी की उपस्थिति से मध्यप्रदेश में समर्थन मूल्य पर मूंग की खरीदी को लेकर सियासी हलचल तेज हो गई है। आमसभा को संबोधित करते प्रदेश अध्यक्ष जीतू पटवारी ने भाजपा सरकार पर तीखा हमला बोलते हुए कहा, ÷अगर मूंग खरीदी जल्द शुरू नहीं हुई तो किसान ट्रैक्टर लेकर शिवराज मामा के घर पहुंचेंगे।÷ भाजपा सरकार को किसान हितैषी सरकार का दावा करने पर भाजपा सरकार की नीतियों पर जमकर कटाक्ष किए गए। वहीं क्षेत्रीय सांसद दर्शन सिंह चौधरी को भी किसान नीतियों को जमकर हमला किया

गया।प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष जीतू पटवारी ने आगे कहा कि ÷सरकार मूंग को जहरीला बता रही है, जबकि सच्चाई यह है कि मूंग नहीं, बल्कि भाजपा की नीयत जहरीली है।÷ उन्होंने कहा कि जब कांग्रेस सत्ता में थी, तब किसानों को लाभ मिलता था। कांग्रेस केवल वादे नहीं करती, बल्कि ज़मीन पर काम करके दिखाती है।

उल्लेखनीय है कि सभा की शुरुआत अहमदाबाद विमान हादसे में मृत लोगों को श्रद्धांजलि अर्पित कर की गई। पूर्व कांग्रेस जिलाध्यक्ष पुष्पराज सिंह पटेल ने कहा कि मूंग में जहर होने का तर्क पूरी तरह से बेबुनियाद है। यदि मूंग जहरीली होती तो उसे रोजाना चखने वाले व्यापारी सबसे पहले बीमार पड़ते। उन्होंने सरकार के इस रवैये को किसान विरोधी बताते हुए खरीदी प्रक्रिया जल्द शुरू करने की मांग की।सभा को किसान कांग्रेस प्रदेशाध्यक्ष धर्मेंद्र चौहान, पूर्व मंत्री सुखदेव पांसे, संजय शर्मा, देवेंद्र पटेल, जिलाध्यक्ष शिवाकांत पांडे, हरगोविंद पुरविया सहित कई नेताओं ने संबोधित किया।कांग्रेस नेताओं ने क्षेत्रीय सांसद दर्शन सिंह चौधरी पर भी कटाक्ष करते हुए कहा कि किसान आंदोलन से राजनीति शुरू करने वाले सांसद अब किसान हित की कोई बात नहीं करते। अब वे सिर्फ नाम के किसान पुत्र रह गए हैं।

कांग्रेस नेता यशवंत राजपूत ने अपने उद्बोधन में सरकार एवं जनप्रतिनिधियों पर किसानों की अनदेखी करने का आरोप लगाया। इस अवसर पर पूर्व नपाध्यक्ष राजेंद्रसिंह चौधरी, मंगल सिंह रघुवंशी, चंद्रकांत चौरसिया, लक्ष्मीनारायण सोनी, रणवीर सिंह पटेल, चंद्रगोपाल मलैया, हफेज़ा बोहरा, आलोक जायसवाल, गजेंद्र चौधरी, वकील कार्तिक शर्मा नीरज चौधरी, ऋषभ दीक्षित, कार्तिक शर्मा, इरफान खान सहित सैकड़ों कांग्रेसी नेता एवं किसान उपस्थित थे।।

जल जीवन का अभिन्न घटक इसकी प्रत्येक बूंद को बचाना हमारी आवश्यकता और अनिवार्यता: उपमुख्यमंत्री शुक्ल

भोपाल। उप मुख्यमंत्री एवं सागर ज़िले के प्रभारी मंत्री श्री राजेन्द्र शुक्ल ने कहा कि ऐतिहासिक मंदिरों के आस-पास नदी, तालाब, बावड़ी, कुआँ, आदि जलस्रोत रहते हैं। इन्हें संरक्षित करना हमारा कर्तव्य है। ये जलस्रोत मंदिर में जल आपूर्ति करने के साथ ही आवश्यकता पड़ने पर स्थानीय निवासियों की जल मांग को भी पूरा करते थे। आज इनमें से कई जल स्रोत लगभग विलुप्ती की कगार पर हैं और अत्यधिक प्रदूषित भी हैं। जल जीवन का अभिन्न घटक है और इसकी प्रत्येक बूंद को बचाना हमारी आवश्यकता और अनिवार्यता है। इसके लिए छोटा हो या बड़ा प्रत्येक जल स्रोत का संरक्षण हमें करना चाहिए। उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने जल गंगा संवर्धन अभियान में सागर के भूतेश्वर मंदिर प्रांगण में जनप्रतिनिधियों के साथ प्राचीन जलस्रोत की साफ-सफाई की।

उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने भूतेश्वर महादेव मंदिर में जन प्रतिनिधियों सहित पूजा-अर्चना की और सभी सागर जिला एवं प्रदेशवासियों हेतु मंगल कामना की। उन्होंने भूतेश्वर मंदिर में बने प्राचीन बावड़ी कुआँ से फूल पत्ती कचरा आदि निकाल कर सफाई एवं जीर्णोद्धार का अभियान प्रारम्भ किया। उन्होंने भूतेश्वर मंदिर प्रांगण के विकास कार्यों की जानकारी ली और कहा कि प्राचीन सिद्ध स्थलों व मंदिरों का संरक्षण महत्वपूर्ण है। बताया गया कि भूतेश्वर महादेव मंदिर सोमनाथ मंदिर की तर्ज पर पत्थरों से निर्मित किया जा रहा है। यहां मौजूद बावड़ी कुआँ के आकार की है जो कि बहुत प्राचीन है। उन्होंने कहा कि जल गंगा संवर्धन अभियान के तहत नगर पालिक निगम सागर द्वारा लगभग 100 कुओं की साफ-सफाई कर इन्हें पुनः उपयोगी बनाया जा रहा है इनके जल को पीने योग्य बनाने हेतु किये जा रहे सफाई व जीर्णोद्धार कार्य और ऐतिहासिक जलस्रोतों के संरक्षण का यह कार्य सराहनीय है। विधायक श्री शैलेन्द्र जैन, महापौर श्रीमती संगीता सुशील तिवारी, निगमाध्यक्ष श्री वृंदावन अहिरवार सहित स्थानीय जनप्रतिनिधि विभागीय अधिकारी/कर्मचारी उपस्थित रहे।

फिल्म महोत्सव और 3 सी मंत्र

डॉ. भूपेन्द्र कुमार सुल्लेरे

वरिष्ठ स्तंभ लेखक

रचनात्मकता, संस्कृति और वाणिज्य का उदय

वर्तमान युग तकनीकी तीव्रता और सांस्कृतिक तरलता से परिभाषित है। इस युग में फिल्म महोत्सव केवल सिनेमा के प्रदर्शन का माध्यम नहीं, बल्कि विचारों, कल्पनाओं और वैश्विक सहयोग का सशक्त मंच बन चुके हैं। ये महोत्सव ऐसे जीवंत पारिस्थितिकी तंत्र बन गए हैं जहाँ तीन प्रमुख घटक–रचनात्मकता (Creativity), संस्कृति (Culture) और वाणिज्य (Commerce)–एक-दूसरे से गहराई से जुड़े हुए हैं। यह 3ष्ट मंत्र अब वैश्विक सिनेमा के पुनर्जागरण की आधारशिला बन चुका है।

नवीन परिभाषा: फिल्म फेस्टिवल का स्थान

आज के फिल्म फेस्टिवल रेड-कार्पेट ग्लैमर से कहीं आगे बढ़ चुके हैं। वे अब नैरेटिव इनोवेशन, क्रॉस-कल्चरल कोलैबोरेशन, रणनीतिक साझेदारी, और डिजिटल-तकनीक सक्षम प्रस्तुति के केंद्र बन गए हैं। कान, बर्लिन, वेनिस, आईएफएफआई, लोकार्नो, सनडांस जैसे प्रतिष्ठित महोत्सवों ने न केवल फिल्मों को देखने का दृष्टिकोण बदला है, बल्कि सिनेमा की सामाजिक और व्यावसायिक व्याख्या को भी गहराई दी है।

3ष्ट अब आदर्श नहीं, वास्तविक दिशा-निर्देशक

रचनात्मकता (Creativity): नए विषय, नए दृष्टिकोण, और उभरती प्रतिभाओं के लिए मंच।

संस्कृति (Culture): वैश्विक व स्थानीय सांस्कृतिक परंपराओं का संवाद।

वाणिज्य (Commerce): सह-निर्माण, वितरण, आईपी मार्केटिंग, ब्रांड साझेदारी और ओटीटी एकीकरण।

अब ये तीनों तत्व नीतिगत रूप से फेस्टिवल की योजना और निष्पादन का अभिन्न हिस्सा बन गए हैं।

कान्स 2025: उद्देश्य, नवाचार और प्रभाव

कान्स फिल्म महोत्सव 2025 केवल स्क्रीनिंग या ग्लैमर नहीं था–यह दृष्टि और आवाज़ का सम्मिलन था।

'मिशन इम्पॉसिबल: द फाइनल रेकनिंग' एक्शन से परे, उद्देश्य और सह-निर्माण की संभावनाओं का प्रतीक बनकर उभरी।

दूसरी ओर, 'होमबाउंड' जैसी संवेदनशील फिल्में मौन संवाद का सृजन कर रही थीं।

मार्चे डु फिल्म–इस बार महज़ सौदों का केंद्र नहीं, बल्कि बहुभाषी सहयोग, AI स्टोरीबोर्डिंग और जलवायु-सचेत फिल्म निर्माण के विचारों का केंद्र बन गया।

भारत, दक्षिण कोरिया और नाइजीरिया जैसे देशों ने अपने सिनेमा के साथ-साथ वैश्विक दृष्टिकोण और कूटनीतिक संस्कृति को भी प्रस्तुत किया।

फिल्म बाजार: विचारों के लिए निवेश मंच

कान्स में मार्चे डु फिल्म और गोवा में IFFI का फिल्म बाजार ऐसे स्थान हैं जहाँ विचार और पूँजी मिलते हैं। निर्माता, वितरक और नीति निर्माता–सभी एक साथ एक परिवर्तनकारी सौदेबाज़ी का हिस्सा बनते हैं। अब सौदे केवल वित्तीय नहीं, बल्कि सांस्कृतिक और रचनात्मक भविष्य की दिशा तय करने वाले हो गए हैं।

फेस्टिवल ब्रांडिंग: भावनात्मक, रणनीतिक और सांस्कृतिक

हर फेस्टिवल की एक विशिष्ट पहचान बन चुकी है-

कान्स : ग्लैमर और कलात्मकता का संयोग

बर्लिनले : राजनीतिक और सामाजिक सिनेमा का मंच

लोकार्नो : प्रयोगधर्मिता का केंद्र

TIFF – सामाजिक संवेदनाओं को पुरस्कारों में शामिल करने की पहल

यह पहचान केवल ब्रांडिंग नहीं, बल्कि सुसंगत दृश्य भाषा, स्थानीयता और

वैश्विकता का सम्मिलन, और सिनेमा संस्कृति की संरचना है।

भारत का वैश्विक सिनेमा में उभार

कान्स 2025 का भारत मंडप, जिसे राष्ट्रीय डिज़ाइन संस्थान, अहमदाबाद ने डिज़ाइन किया, केवल एक पवेलियन नहीं था। यह एक कूटनीतिक और रचनात्मक पुल था। 2024 की थीम Create in India ने भारत को सह-निर्माण केंद्र, टेक्नोलॉजी-रेडी डेस्टिनेशन, और सांस्कृतिक विचार के वाहक के रूप में प्रस्तुत किया।

भारत पर्व जैसे सांस्कृतिक कार्यक्रम, भारतीय खानपान, शिल्पकला, संगीत और विविधता के माध्यम से वैश्विक संवाद को जीवंत बनाते हैं। यह सब दर्शाता है कि भारत सिर्फ कंटेंट प्रदाता नहीं, बल्कि विचार और दृष्टि का नेतृत्वकर्ता है।

फिल्म फेस्टिवल: भविष्य के वाहक

आज के महोत्सव केवल फिल्मों के प्रीमियर नहीं, बल्कि नीतिगत चर्चा, वैश्विक भागीदारी, और कहानी कहने की नई भाषाओं का प्रदर्शन बन गए हैं।

चाहे वह:

'सिनेमा फॉर द क्लाइमेट' हो (कान्स),

वर्चुअल रियलिटी से जुड़ा नवाचार हो (वेनिस),

या मुख्यधारा और स्वतंत्र सिनेमा का मेल (IFFI),

हर पहलू आज उद्देश्य, विविधता और डिजिटल व्यवधान से प्रेरित है। 3C – नई सिनेमाई संस्कृति के स्तंभ रचनात्मकता, संस्कृति और वाणिज्य–इन तीनों की त्रिवेणी ने फिल्म महोत्सवों को विश्व मंच पर शक्ति केंद्र बना दिया है। आज रेड कार्पेट सिर्फ सेलिब्रिटी शो नहीं, बल्कि यह एक सांस्कृतिक वक्तव्य, एक कूटनीतिक प्रस्तावना, और एक रचनात्मक आंदोलन बन चुका है।

भारत जैसे देश, जिनकी विविध सांस्कृतिक विरासत, तकनीकी नवाचार क्षमता, और सहयोगी दृष्टिकोण है, इस नए परिदृश्य में नायक की भूमिका निभा रहे हैं।

अब प्रश्न यह नहीं है कि अगली महान फिल्म कौन बनाएगा, प्रश्न यह है कि अगली वैश्विक कहानी कौन और कैसे सुनाएगा?

भोपाल में ऐशबाग आरओबी 90 डिग्री वाला ब्रिज...

पीडब्ल्यूडी मंत्री ने जांच बैठाई, मौके पर पहुंचे अफसर ; कांग्रेस ने तंज कसा

लोग बोले-ये अनोखी डिजाइन

भोपाल (नप्र)। भोपाल के 90 डिग्री मोड़ वाला ऐशबाग आरओबी (रेलवे ओवरब्रिज) सोशल मीडिया पर जमकर ट्रोल हो रहा है। लोग इसके मिम्स बना रहे हैं और इसे अनोखी डिजाइन वाला ब्रिज बताकर सवाल भी खड़े कर रहे हैं। मामला सामने आने के बाद पीडब्ल्यूडी मंत्री राकेश सिंह ने जांच बैठाई है। गुरुवार को पीडब्ल्यूडी अफसर मौके पर पहुंचे और जांच की। दूसरी ओर, कांग्रेस ने तंज कसा है।

स्ट्रक्चर इंजीनियर डॉ. शैलेंद्र बागरे ने कहा कि यह तो ऐसा लग रहा है, जैसे दो स्केल रखे हुए हैं। ब्रिज पर दोनों ओर से आने वाले ट्रैफिक को देखते हुए यह बहुत खतरनाक है। उन्होंने डिजाइन एंगल को नाप कर बताया कि यह 88 डिग्री है। इस एंगल पर गाड़ी के बाहर की तरफ गिरने की आशंका होती है।

गाड़ी गिरने की आशंका

मैनिट के ट्रैफिक एक्सपर्ट डॉ. सिद्धार्थ रोकड़े ने कहा कि यदि जगह की कमी के कारण एंगल कम दिया जाए तो गाड़ियों की स्पीड पर नियंत्रण जरूरी है। यहां सिर्फ साइन बोर्ड लगाने से काम नहीं चलेगा, बल्कि यहां स्पीड कम करने के तरीके अपनाने होंगे। यदि यह नहीं किए गए तो गाड़ी नीचे गिर सकती है।

ऐसा है ब्रिज...इसलिए सवाल खड़े हुए

दरअसल, 10 साल से ज्यादा के इंतजार के बाद तैयार होने जा रहे ऐशबाग आरओबी की टर्निंग एक एक्सीडेंट जोन बनने जा रही है। इस ब्रिज पर आने के बाद वाहनों को लगभग 90 डिग्री पर मुड़ना होगा। इस एंगल पर वाहन मोड़ने पर गाड़ियां ब्रिज की दीवार से टकरा सकती हैं या सामने से आ रही गाड़ी से भी एक्सीडेंट हो सकता है।

जबलपुर में मंत्री से हो चुका सवाल

इस मामले में एक दिन पहले बुधवार को जबलपुर में पीडब्ल्यूडी मंत्री सिंह से सवाल किया तो उनका कहना था कि इस तरह के ब्रिज बनने के बाद अचानक ही कुछ विशेषज्ञ आते हैं और इस तरह की बात करते हैं। कोई भी ब्रिज या पुल जब बनते हैं, तो बहुत सारे तकनीकी पहलुओं से गुजरने के बाद होता है। अगर ये कोई आरोप है, तो इसका परीक्षण कर जांच करवा ली जाएगी।मंत्री के जांच की बात कहने के बाद गुरुवार को इंजीनियरों की टीम मौके पर पहुंची। यह टीम जल्द ही अपनी रिपोर्ट देगी। इसके बाद आगे की कार्रवाई होगी।

कांग्रेस ने ब्रिज को भ्रष्टाचार का नमूना बताया

कांग्रेस प्रवक्ता अभिनव बरोलिया गुरुवार को आरओबी पहुंचे। उन्होंने ब्रिज को भ्रष्टाचार का नमूना बताया। इसे बनाने में अजीब टेक्नोलॉजी इस्तेमाल किया गया है। साथ ही इसे बनाने में बंदरबांट हुआ है। इसके पूरे देश में मिम्स भी बन रहे हैं। जांच के बाद दोषियों पर कड़ी कार्रवाई हो।

पीडब्ल्यूडी कर रहा सुधार की तैयारी

पीडब्ल्यूडी ब्रिज डिविजन के एक्जीक्युटिव इंजीनियर आरए मोरे शनिवार को ऐशबाग रेलवे क्रॉसिंग पर भी जा चुके हैं। उन्होंने यहां डामरीकरण के समय सुपर एलिवेशन डिजाइन के निर्देश दिए थे। सुपर एलिवेशन मोड़ों में इस्तेमाल होने वाली बुनियादी ढांचे के निर्माण की विधि है। जिसमें बाहरी किनारे को भीतरी किनारे से ऊपर उठाया जाता है। जब वाहन इन मोड़ से गुजरते हैं, तब सड़क एक कोण पर झुकी हुई होती है, जिससे मोड़ पर चलना आसान हो जाता है।

क्रॉसिंग बंद होने से इसकी खास जरूरत

ब्रिज के निर्माण के समय रेलवे ने भी 90 डिग्री की इस टर्निंग पर आपत्ति की थी, लेकिन पीडब्ल्यूडी के इंजीनियरों ने यहां जगह कम होने का हवाला देते हुए कहा कि और कोई विकल्प नहीं है। ऐशबाग रेलवे क्रॉसिंग बंद होने के बाद इस इलाके के लिए आरओबी एक बड़ी जरूरत है। इसलिए कम जगह में भी इसे बनाना होगा।

मई 2022 में शुरू हुआ निर्माण 18 माह में पूरा करना था

इस ब्रिज का निर्माण मई 2022 में शुरू हुआ था और इसे 18 महीने में पूरा करना था, लेकिन अब तक पूरी तरह से नहीं बन सका है। इसकी लागत 18 करोड़ रुपए है। 648 मीटर लंबे और 8 मीटर की चौड़ाई ब्रिज का 70 मीटर हिस्सा रेलवे का है।

राज्यपाल मंगुभाई पटेल से प्रदेश के मुख्य सूचना आयुक्त विजय यादव ने राजभवन में सौजन्य भेंट की।

मप्र में भाजपा संगठन और सरकार के सभी कार्यक्रम निरस्त

अहमदाबाद प्लेन हादसे के चलते लिया फैसला ; प्रोफेशनल्स मीट में सीएम को होना था शामिल

भोपाल (नप्र)। अहमदाबाद में हुए विमान हादसे के बाद मप्र में बीजेपी संगठन और सरकार ने सभी कार्यक्रम कैंसिल कर दिए हैं। प्रदेश के कई जिलों में आज बीजेपी की जिला ईकाईयों द्वारा प्रोफेशनल मीट के आयोजन किए जाने थे। कुछ जिलों में संकल्प से सिद्धि की प्रेस कॉन्फ्रेंस भी प्रस्तावित थीं। लेकिन, विमान हादसे के चलते कार्यक्रम कैंसिल किए गए हैं।

भोपाल की प्रोफेशनल मीट में सीएम होने वाले थे शामिल- भोपाल के कुशाभाऊ ठाकरे सभागार में मुख्यमंत्री डॉ.मोहन यादव शाम 6 बजे प्रोफेशनल्स मीट में बतौर मुख्य अतिथि शामिल होने वाले थे। विमान हादसे की घटना के बाद ठाकरे सभागार में होने वाली प्रोफेशनल्स मीट कैंसिल कर दी गई है।

देवास में होने वाली प्रोफेशनल्स मीट में बीजेपी के प्रदेश प्रभारी डॉ महेन्द्र सिंह और ग्वालियर में मंत्री कैलाश विजयवर्गीय को शामिल होना था। ये कार्यक्रम भी कैंसिल कर दिए गए हैं।

बीजेपी ने ट्वीट कर दी जानकारी- एमपी बीजेपी की ओर से ट्वीट में लिखा गया- अहमदाबाद विमान हादसे के कारण आज आयोजित होने वाले भाजपा के सभी संगठनात्मक कार्यक्रम निरस्त किये गए हैं।

सुशासन भवन में सीएम का छह घंटे का मंथन

जो विभाग मुख्यमंत्री के पास, उनके कामकाज का हो रहा रिव्यू

भोपाल (नप्र)। पचमढ़ी में होने वाली सांसद, विधायकों की ट्रेनिंग के पहले मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव ने आज उन विभागों की प्रोग्रेस जानी जो उन्हीं के पास हैं। मुख्य सचिव अनुराग जैन की मौजूदगी में इसको लेकर राजधानी के अटल बिहारी सुशासन और नीति विश्लेषण स्कूल में बैठकों का दौर छह घंटे तक चलने वाला है। बैठक में खासतौर पर विभागों के कामकाज की समीक्षा मुख्यमंत्री ने की और जहां सीएम के प्राथमिकता वाले कामों में कमी आई है, उसे सुधार करने के लिए भी निर्देशित किया गया।

सुशासन भवन में हो रही बैठक में मुख्यमंत्री विभाग वार रिव्यू भी कर रहे हैं। बताया जाता है कि सीएम ने सामान्य प्रशासन विभाग से शासकीय सेवा में भर्ती के लिए जारी विज्ञापन और भर्ती प्रक्रिया का ताजा अपडेट भी लिया है। साथ ही पदोन्नति में रिजर्वेशन फार्मूले के बारे भी जानकारी ली है। इसके अलावा औद्योगिक नीति और निवेश प्रोत्साहन, खनिज साधन, वन और पर्यावरण के अलावा गृह विभाग के कामकाज को लेकर भी बैठक में चर्चा हो रही है। वन और पर्यावरण विभाग के अधीन सिया की बैठकें नहीं हो पाने और इससे संबंधित विवाद के मामले में भी सीएम ने अफसरों से जानकारी ली है।

इन विभागों के अधिकारी रहे मीटिंग में मौजूद- मुख्यमंत्री डॉ यादव के पास जिन विभागों की जिम्मेदारी है उसमें सामान्य प्रशासन विभाग, गृह विभाग, जेल विभाग, नर्मदा घाटी विकास विभाग, वन और पर्यावरण विभाग, जनसंपर्क विभाग हैं। इसके अलावा औद्योगिक नीति और निवेश प्रोत्साहन, विमानन विभाग, खनिज साधन विभाग, लोक सेवा प्रबंधन विभाग भी सीएम यादव ने अपने पास रखा है। इन सभी विभागों के एचओडी और प्रमुख सचिव स्तर के अधिकारी आज सुशासन भवन में हुई मीटिंग में मौजूद रहे।

छठी मंजिल से गिरकर 11वीं की छात्रा की मौत

खून से लथपथ हालत में परिजन ने पहुंचाया अस्पताल

भोपाल (नप्र)। भोपाल के कोलार स्थित विराषा हाइट्स में छठी मंजिल से गिरने से 11वीं कक्षा में पढ़ने वाली छात्रा की मौत हो गई। भोपाल के कोलार स्थित विराषा हाइट्स में छठी मंजिल से संदिग्ध परिस्थितियों में गिरने से 11वीं कक्षा में पढ़ने वाली 16 वर्षीय छात्रा की मौत हो गई। हादसा बुधवार देर रात का है। पुलिस ने मर्ग कायम कर जांच शुरू कर दी है।

टीआई संजय सोनी ने बताया कि 16 वर्षीय अंबिका सिंह एक निजी स्कूल में कक्षा 11वीं की छात्रा थी। जबकि उसके पिता टेलीकॉम कंपनी में वरिष्ठ पद पर पदस्थ हैं। वह दो साल पहले ही रहने के लिए यहां आई थी। बुधवार की रात वह कोचिंग से लौटी थी और छत पर चली गई थी। दरअसल वह रोजाना सीढ़ियों से चढ़ती-उतरी थी और उसका यह रोजाना का रूटीन था। बुधवार की रात छठवीं मंजिल से संदिग्ध परिस्थितियों में नीचे गिर गई थी।

परिजनों ने खून से लथपथ हालत में अस्पताल पहुंचाया

परिजन ने छात्रा को खून से लथपथ में हालत में इलाज के लिए बंसल अस्पताल में भर्ती कराया था। जहां रात करीब 12 बजे उसकी मौत हो गई। अस्पताल की सूचना पर पहुंची पुलिस ने मृतका का शव बरामद कर उसे पोस्टमॉर्टम के लिए हमीदिया अस्पताल भेज दिया। गुरुवार को पीएम के बाद शव को परिजन को सौंप दिया गया है। परिजन बॉडी को बनारस लेकर रवाना हो गए है।

जांच के बाद साफ होगा छात्रा कैसे गिरी?

टीआई के मुताबिक छात्रा छत से कैसे गिरी?, इसका खुलासा नहीं हो सका है। परिजन के बयान दर्ज होने के बाद ही घटनाक्रम का खुलासा हो सकेगा। फिलहाल पुलिस मामले की जांच में जुटी हुई है।

कूनो, गांधीसागर के बाद चीतों का मप्र में तीसरा ठिकाना

नौरादेही अभयारण्य में 30 किमी एरिया में रहेंगे चीते, एनटीसीए ने तय किया क्षेत्र

भोपाल (नप्र)। प्रदेश में चीतों का तीसरा ठिकाना सागर जिले का नौरादेही अभयारण्य बनेगा। कूनो राष्ट्रीय उद्यान और गांधी सागर वन्यजीव अभयारण्य के बाद यहां चीतों की बसाहट के लिए वन विभाग की टीम काम में जुट गई है। इसको लेकर राष्ट्रीय बाघ संरक्षण प्राधिकरण (एनटीसीए) की एक टीम मई में अभयारण्य का विजिट कर चुकी है और इस टीम ने अभयारण्य के दायरे में आने वाले मोहली, झापा और सिंगपुर की तीन श्रेणियों में फैले 30 किलोमीटर के क्षेत्र को चीतों के लिए तैयार करने का फैसला किया है।

सागर और दमोह जिलों के पठारी इलाके में स्थित नौरादेही अभयारण्य साल, सागौन, महुआ, बांस और बेल के पेड़ों से भरा एक पर्णपाती जंगल है, यहां घास के मैदान हैं जो शाकाहारी जानवरों के लिए उत्तम चारागाह है। यहां मृग और जंगली सुअर जैसे अन्य जानवरों सहित पर्याप्त शिकार है। इसके साथ ही वन विभाग पेंच और कान्हा टाइगर रिजर्व से चीतल या चित्तीदार हिरणों के शिफ्टिंग की

व्यवस्था में भी जुटा है। नौरादेही वर्ष 2010 में चीतों के लिए प्राथमिकता वाले स्थलों में शामिल था लेकिन बाद में इसे हटा दिया गया था। अब फिर इसको लेकर कवायद तेज हुई है। चीफ वाइल्ड लाइफ वार्डन शुभरंजन सेन ने इसकी पुष्टि की है।

13 गांव होंगे विस्थापित

एनटीसीए में वन उप महानिरीक्षक वैभव माथुर की मौजूदगी वाली निरीक्षण टीम जिन तीन रेंज मोहली, झापा और सिंगपुर को चीतों के रहवास के लिए उचित माना है, उसमें कुल 13 गांव हैं जहां के लोगों का पुनर्वास किया जाएगा। यहां 30 किलोमीटर के क्षेत्र को बाड़ेबंदी भी की जाएगी। वन टीम ने इन 13 गांवों के पुनर्वास के लिए 150 करोड़ रुपए की अतिरिक्त राशि मांगी है। अभयारण्य में रिक्त पदों को भरने के लिए नौरादेही में पशु चिकित्सकों की भी तैनाती की जाएगी।

अधिकारियों के अनुसार नौरादेही अभयारण्य में कुल 93 गांव थे, जिनमें से 44 को बाहर स्थानांतरित कर दिया गया है। 49 गांव अभी भी अभयारण्य के भीतर हैं। वन विभाग वर्तमान में तीन और गांवों के लोगों के पुनर्वास का काम कर रहा है जबकि मोहली गांव सहित सात अन्य गांवों को इस साल के अंत में पुनर्वास के लिए चुना जाएगा।

2022-23 में कूनो में लाए गए हैं चीते

वर्ष 1952 में भारत में चीतों के विलुप्त होने के बाद सितंबर 2022 में नामीबिया से 8 चीतों को लाया गया था। फरवरी 2023 में दक्षिण अफ्रीका से और 12 चीतों को लाया गया। इन्हें भी कूनो में रखा गया जिससे भारत में चीतों की कुल संख्या 20 हो गई। पिछले दो वर्षों में इन चीतों ने कुल 26 शावकों को जन्म दिया, लेकिन केवल 19 ही जीवित बचे।

12 वयस्क और 19 शावकों के साथ, भारत में चीतों की कुल संख्या वर्तमान में 31 है। इस साल अप्रैल में दक्षिण अफ्रीका से लाए गए 12 चीतों में से दो वयस्क नर चीते, पवन और प्रभास को गांधी सागर वन्यजीव अभयारण्य में स्थानांतरित कर दिया गया था जिसे देश में बड़ी बिल्लियों के लिए दूसरे घर के रूप में विकसित किया गया है।

एमपी में कोरोना से तीसरी मौत

अब तक सामने आए 123 केस, 86 एक्टिव मामले ; जिलेवार जारी नहीं हो रहे आंकड़े

भोपाल (नप्र)। मध्यप्रदेश में कोरोना से इस साल तीसरी मौत हो गई है। इसकी पुष्टि केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय के कोविड-19 डैशबोर्ड पर की गई है, जिसमें बताया गया कि प्रदेश में कोरोना से एक और महिला की जान गई है। मृतक 52 वर्षीय महिला थीं, जिन्हें ब्रोंकियल अस्थमा था। उन्हें 25 साल पहले टीबी हो चुकी थी और वे मधुमेह (एचवीए1सी 7.4 प्रतिशत) से भी पीड़ित थीं।

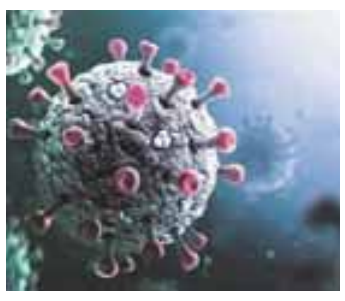

इन जटिल स्वास्थ्य समस्याओं के कारण उनकी स्थिति गंभीर हो गई थी। जानकारी के मुताबिक, महिला रतलाम की रहने वाली थीं और इंदौर के एक निजी अस्पताल में उनका इलाज चल रहा था। उन्हें 8 जून को सांस लेने में तकलीफ होने पर भर्ती किया गया था। 10 जून को कोरोना रिपोर्ट पॉजिटिव आई और इसके बाद उन्हें एमआरटीबी अस्पताल के आइसोलेशन वार्ड में रेफर किया गया, जहां 11 जून को उनकी मौत हो गई।

स्वास्थ्य विभाग ने नहीं जारी किए जिलेवार आंकड़े

प्रदेश में कोरोना की स्थिति को लेकर इंटिग्रेटेड डिजीज सर्विलेंस प्रोग्राम द्वारा अब जिलेवार आंकड़े जारी नहीं किए जा रहे हैं, जबकि अन्य राज्य अभी भी रोजाना हेल्थ बुलेटिन जारी कर रहे हैं। आईडीएसपी के प्रभारी डॉ. अश्विनी भागवत से संपर्क करने की कई कोशिशें की गईं, लेकिन न तो फोन का जवाब मिला और न ही मैसेज का। साल 2020 में महामारी शुरू होने के बाद यह पहली बार है जब अधिकारी कोरोना से जुड़ी जानकारी साझा करने से बच रहे हैं।

एक दिन में 21 नए केस, अब तक 123 संक्रमित

प्रदेश में बुधवार, 11 जून को कोरोना के 21 नए केस दर्ज किए गए। यह इस साल एक दिन में दर्ज सबसे ज्यादा मामले हैं। इसके साथ ही 2025 में कोरोना संक्रमितों की कुल संख्या 123 हो गई है। इनमें से 86 एक्टिव केस हैं और 34 मरीज रिकवर हो चुके हैं। अब तक 3 मौतें हुई हैं।

इन 3 जिलों की महिलाओं की हुई मौत

रतलाम- 52 वर्षीय महिला, जिन्हें टीबी, ब्रोंकाइटिस और हाई ब्लड प्रेशर जैसी बीमारियां थीं। मौत 11 जून को इंदौर में इलाज के दौरान हुई।

खरगोन- 44 वर्षीय महिला, जिन्होंने हाल ही में एमटीएच अस्पताल में बच्चे को जन्म दिया था। 6 जून को एमआरटीबी अस्पताल में मृत्यु हुई।

इंदौर- 74 वर्षीय महिला, जिन्हें किडनी की बीमारी थी। 27 अप्रैल को अरबिंदो अस्पताल में इलाज के दौरान उनकी मौत हुई थी।

पीवीटीजी के 7.84 लाख परिवारों के हर घर में नल और हर नल से जल

भोपाल (नप्र)। पीएम जनमन योजना के अंतर्गत (पीवीटीजी) विशेष रूप से कमजोर जनजातीय समूह के परिवारों को मूलभूत सुविधाएँ उपलब्ध कराने की दृष्टि से अन्य योजनाओं के साथ पेयजल आपूर्ति के लिये 360 पीवीटीजी गांवों के 7 लाख 84 हजार 327 घरों में नल कनेक्शन जारी किये गये है। प्रधानमंत्री जनमन आदिवासी न्याय महाअभियान के अंतर्गत केन्द्र एवं राज्य सरकार द्वारा जनजाति संवर्ग के उत्थान के लिये इस योजना के तहत प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी एवं मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के मंशा के अनुरूप नल-जल योजना भी विभिन्न क्षेत्रों दी जा रही सुविधाओं में से एक है।

मध्यप्रदेश में 4197 पीवीटीजी गांव है। इसके अंतर्गत 11 लाख 67 हजार 373 परिवार इस योजना के तहत लाभांवित हुए है। वर्ष 2027 तक अधिकांश गांवों को सतही जल योजना के माध्यम से कवर कर लिया जाएगा। हर घर में नल हर नल में जल योजना के तहत 6019.95 लाख रूपये की राशि स्वीकृत की गई है। 432 बसाहटों में से 192 बसाहटों कार्यपूर्ण किया जा चुका है। शेष 240 बसाहटों को कार्य 30 जून 2025 तक पूर्ण करने का लक्ष्य है।

60 गांव हुए नल - जल युक्त

लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी विभाग के माध्यम से प्रदेश के 400 स्वीकृत पीवीटीजी गांवों में से 60 गांवों में के हर घर में नल जल संचालित है। अभी 340 गांवों में कार्य प्रगति पर है। कार्य पूर्ण हो चुके गांव में 61 प्रतिशत के साथ दतिया प्रथम स्थान पर है इसके पश्चात 58 प्रतिशत सैचुरेरडे गांव के साथ ग्वालियर के 134 गांव में से 78 गांव में नल जल योजना का कार्य पूरा हो चुका है। शिवपुरी में सर्वाधिक स्वीकृत 592 गांव में से 97 गांव में नल जल योजना का काम पूरा हो चुका है। 495 गांवों कार्य प्रगति पर है। दूसरे नबंर पर शहडोल के 431 स्वीकृत गांवों में से 208 गांव में नल जल का कार्य पूर्ण हो चुका है शेष 223 गांव में कार्य प्रगति पर है।

पीएम जनमन योजन के अंतर्गत जनजाति बसाहट वाले गांवों में लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी के माध्यम से सामुदायिक जल आपूर्ति का काम प्रचलन में है। आगामी दो वर्षों में इस योजना के अंतरित लक्ष्य प्राप्ति प्रस्तावित है।

बीड़ी एवं खदान श्रमिकों के बच्चों को एक हजार से पच्चीस हजार रुपये तक की छात्रवृत्ति

ऑनलाइन आवेदन की प्रक्रिया प्रारंभ

भोपाल (नप्र)। केंद्र सरकार के श्रम एवं रोजगार मंत्रालय द्वारा संचालित 'शिक्षा के लिये वित्तीय सहायता योजना' के अंतर्गत प्रदेश राज्य के बीड़ी, चूना पत्थर एवं डोलोमाईट, लौह-मैग्नीज-क्रोम अयस्क खदान श्रमिकों के बच्चों को शिक्षा के क्षेत्र में प्रोत्साहन प्रदान करने के लिये छात्रवृत्ति दी जाएगी। इस योजना के तहत मान्यता प्राप्त शिक्षण संस्थानों में कक्षा पहली से लेकर उच्च शिक्षा तक अध्ययनरत छात्र-छात्राओं को एक हजार रुपये से पच्चीस हजार रुपये तक छात्रवृत्ति की स्वीकृत दी गई है।

शैक्षणिक सत्र 2025-26 के लिए आवेदन की प्रक्रिया प्रारंभ- उप कल्याण आयुक्त श्रम कल्याण संगठन जबलपुर से प्राप्त जानकारी के अनुसार शैक्षणिक सत्र 2025-26 के लिए छात्रवृत्ति के लिए ऑनलाइन आवेदन की प्रक्रिया 2 जून से प्रारंभ हो गई है। इच्छुक छात्र-छात्राएं नेशनल स्कॉलरशिप पोर्टल के माध्यम से आवेदन कर सकते हैं। प्री-मैट्रिक छात्रवृत्ति के लिए आवेदन की अंतिम तिथि 31 अगस्त 2025 तथा पोस्ट-मैट्रिक छात्रवृत्ति के लिए अंतिम तिथि 31 अक्टूबर 2025 नियत की गई है।

अन्य छात्रवृत्तियों के लिए पात्रता

उप कल्याण आयुक्त ने यह जानकारी दी कि यदि पोर्टल पर उपलब्ध अन्य किसी विभाग की ऐसी छात्रवृत्ति योजना प्रदर्शित होती है, जिसमें अधिक राशि प्रदान की जाती है और आवेदक उसकी पात्रता रखते हैं, तो ऐसे आवेदक संबंधित विभाग की छात्रवृत्ति योजना के लिए भी आवेदन कर सकते हैं।

आवेदन प्रक्रिया एवं आवश्यकताएं

छात्रवृत्ति के लिए आवेदन करते समय आवेदकों को ओटीआर (वन टाइम रजिस्ट्रेशन) करना अनिवार्य है। इसके साथ ही फेस ऑथेंटिकेशन प्रक्रिया को भी पूरा करना आवश्यक होगा। आवेदन करते समय सभी आवश्यक दस्तावेजों की स्कैन प्रतियां पोर्टल पर अपलोड करें, जो कि स्पष्ट और पठनीय हो। आवेदन की पात्रता एवं अन्य संबंधित जानकारी/ शर्तें नेशनल स्कॉलरशिप पोर्टल पर उपलब्ध है। आवेदन जमा करने के बाद छात्रों को अपने शिक्षण संस्थान से संपर्क कर आवेदन का सत्यापन भी स्कॉलरशिप पोर्टल के माध्यम से करवाना अनिवार्य है। शिक्षण संस्थान द्वारा सत्यापित नहीं किए गए आवेदनों पर विचार नहीं किया जायेगा।